सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक

वेद-भूषण - II वर्ष / प्रथमा - II वर्ष / कक्षा सातवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

द्यौ॰ शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति॰ पृथिवीशान्तिराप॰ शान्तिरोषधय॰ शान्ति॰ ॥
व्वनस्प्पतय॰ शान्तिर्व्विश्वेदेवा॰ शान्तिर्ब्रह्मशान्ति॰ सर्व्व ँ शान्ति॰
शान्तिरेवशान्ति॰ सामाशान्तिरेधि ॥
यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥
यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिण:।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्या:।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ॥
मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धव॰।
माद्ध्वीर्न्न॰ सन्त्वोषधी॰ ॥
मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्त्पार्त्थिव ँ रज॰ ॥ मधुद्यौरस्तुन॰ पिता ॥
मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ२ ॥ ऽअस्तुसूर्य्य॰ ॥ माद्ध्वीर्ग्गावोभवन्तुन॰ ॥
मातृतमा विषस्य स्थातुर्जगतो जानित्री।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक

वेद-भूषण - II वर्ष / प्रथमा - II वर्ष / कक्षा सातवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

लेखकगण :- 1. डॉ. प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी,
राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
2. श्री रविन्द्र कुमार शर्मा,
श्री वीर हनुमान ऋषिकुल वेद विद्यालय, ग्रा. नांगल भरडा, चौमू,
जयपुर (राजस्थान)
3. श्री विजेन्द्र सिंह हाड़ा
श्री कर्णेश्वर वेद विद्यालय, कनवास, कोटा (राजस्थान)
4. श्री विक्रम कुमार बासनीवाल
श्री मुनिकुल ब्रह्मचर्याश्रम वेद संस्थानम्, बरुन्दनी (राजस्थान)

आवरण एवं सज्जा :- श्री शैलेन्द्र डोडिया
चित्राङ्कन :- .....
तकनीकी सहयोग, टङ्कण
एवं संशोधन :- 1. श्रीमती किरण परमार
2. श्री अनिल चौहान
3. श्री नरेन्द्र सोलंकी
अक्षरविन्यास :- .....
पुस्तक परामर्श :- .....
© महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
ISBN :- .....
मूल्य :- .....
संस्करण :- .....
प्रकाशित प्रति :- .....
पेपर उपयोगः :- आर.सी.टी.बी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित
प्रकाशक :- महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षामन्त्रालय भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)
email : msrvvpujn@gmail.com,
Web : msrvvp.ac.in
दूरभाषा (0734) 2502255, 2502254

प्रस्तावना

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में)

शिक्षा मन्त्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग), भारत सरकार ने माननीय शिक्षा मन्त्री जी (तत्कालीन मानव संसाधन विकास मन्त्री) की अध्यक्षता में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना दिल्ली में 20 जनवरी, 1987 को सोसायटी पञ्जीकरण अधिनियम, 1860 के तहत की थी। भारत सरकार ने वेदों की श्रुति परम्परा का संरक्षण, संवर्धन, प्रसार और विकास के लिए प्रतिष्ठान की स्थापना का संकल्प संख्या 6-3/85-SKT-IV दिनाङ्क 30-3-1987 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया था। वेदों के अध्ययन की श्रुति परम्परा (वेद संहिता, पद पाठ से घनपाठ तक, वेदाङ्ग, वेद भाष्य आदि), वेदों का पाठ संरक्षण, वैदिक स्वर तथा वैज्ञानिक आधार पर वेदों की व्याख्या का दायित्व वेद विद्या प्रतिष्ठान को दिया गया था। वर्ष 1993 में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान के कार्यालय को उज्जैन में स्थानान्तरित करने के पश्चात् संगठन का नाम महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान कर दिया गया। वर्तमान में यह संगठन मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त भूमि- परिसर, महाकाल नगरी, उज्जैन में स्थित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 के संशोधित नीति-1992 और कार्यप्रणाली (प्रोग्राम ऑफ एक्शन)-1992 में भी वैदिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान को उत्तरदायित्व दिया गया था। भारत के प्राचीन ज्ञान कोष, मौखिक परम्परा और इस तरह की शिक्षा के लिए पारम्परिक गुरुओं को संयोजित करने के उद्देश्य को 1992 के कार्यप्रणाली (प्रोग्राम ऑफ एक्शन) में उल्लेखित किया गया था।

राष्ट्र की आकांक्षाओं के अनुरूप, राष्ट्रीय स्तर पर वेद और संस्कृत शिक्षा के लिए एक बोर्ड की स्थापना के पक्ष में राष्ट्रीय सहमति, जनादेश, नीति, विशिष्ट उद्देश्य और कार्यान्वयन रणनीतियों के अनुरूप, भारत सरकार के माननीय शिक्षा मन्त्रीजी की अध्यक्षता में महासभा और शासी परिषद् के समावेश में ''महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड'' की स्थापना 2019 में हुई है। MSRVVP का वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड भी वैदिक शिक्षा का एक भाग है और MSRVVP के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है जैसा कि MoA और नियमों में संकल्पना की गई है। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को शिक्षा मन्त्रालय,भारत सरकार तथा भारतीय विश्वविद्यालय संघ,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा वर्ष 2015 में श्री एन. गोपालस्वामी (पूर्व चुनाव आयुक्त) की अध्यक्षता में गठित समिति ''संस्कृत के विकास के लिए विजन और रोडमैप - दस वर्षीय परिप्रेक्ष्य योजना'' की रिपोर्ट में अनुशंसा की गई है कि माध्यमिक विद्यालय स्तर तक वेद संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रम मानकीकरण, संबद्धता, परीक्षा मान्यता, प्रमाणीकरण के लिए राष्ट्रस्तर पर वेद संस्कृत परीक्षा बोर्ड की स्थापना की जाए। समिति की अनुशंसा थी कि प्राथमिक स्तर का वैदिक एवं संस्कृत अध्ययन अभिप्रेरक, सम्प्रेरक एवं आनन्ददायी होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा के विषयों को वैदिक और संस्कृत पाठशालाओं में सन्तुलित रूप से सम्मिलित करना भी आवश्यक है। इन पाठशालाओं की पाठ्यक्रम सामग्री को समकालीन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप और प्राचीन ज्ञान का उपयोग करते हुए आधुनिक समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रारूपित किया जाना चाहिए।

वेद पाठशालाओं के सम्बन्ध में समिति ने यह संस्तुति की है कि संस्कृत और आधुनिक विषयों की श्रेणीबद्ध सामग्री के परिचय के साथ-साथ वेद पाठ कौशल संवर्धन और वेद उच्चारण में मानकीकरण की आवश्यकता है ताकि वेद छात्र अन्ततः वेद भाष्य के अध्ययन तक पहुंच सकें और छात्रों को आगे की पढ़ाई के लिए मुख्यधारा में लाया जा सके। उचित स्तर पर वेदों के विकृति पाठ के अध्ययन पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए। समिति के सदस्यों ने यह भी चिंता व्यक्त की है कि वैदिक सस्वर पाठ पूरे भारत में समान रूप से नहीं फैला है, इसलिए वैदिक सस्वर पाठ की शैलियों और शिक्षण पद्धति की क्षेत्रीय विविधताओं में हस्तक्षेप किए बिना स्थिति में सुधार के लिए उचित कदम उठाया जाना है।

यह भी अनुभव किया गया कि वेद और संस्कृत अविभाज्य हैं और एक दूसरे के पूरक हैं और देश भर में सभी वेद पाठशालाओं और संस्कृत पाठशालाओं के लिए परीक्षा मान्यता और सम्बद्धता की समस्याएँ समान है, इसलिए दोनों के लिए एक साथ वेद संस्कृत हेतु एक बोर्ड का गठन किया जा सकता है। समिति ने यह पाया कि बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं को कानूनी रूप से वैध मान्यता प्राप्त होनी चाहिए, जो शिक्षा की आधुनिक बोर्ड प्रणाली के साथ समानता रखे। समिति ने पाया कि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन को ''महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत विद्या परिषद्'' के नाम से

परीक्षा बोर्ड का दर्जा दिया जाये, जिसका मुख्यालय उज्जैन में रहे। परीक्षा बोर्ड होने के अतिरिक्त अब तक जो सभी वेद कार्यक्रम और वेद पर गतिविधियाँ हैं, वे सभी प्रतिष्ठान में जारी रहेंगे।

वैदिक शिक्षा का प्रचार भारत की गौरवशाली ज्ञान परम्परा का एक व्यापक अध्ययन है और इसमें वैदिक अध्ययन (वेद संहिता, पद पाठ से घनपाठ तक, स्वर का सम्यक् प्रयोग ज्ञान आदि), सस्वर पाठ कौशल, मन्त्र उच्चारण और संस्कृत ज्ञान प्रणाली सामग्री की बहुस्तरीय श्रुति परम्परा सम्मिलित है। प्रतिष्ठान में NEP 2020 अनुरूप 3 + 4 (सात साल तक) के वेद अध्ययन की योजना में पारम्परिक छात्रों को मुख्य धारा में लाने की नीति के परिप्रेक्ष्य में अन्य विभिन्न आधुनिक विषयों जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि आदि पाठ्यक्रम के अनुसार तथा वैदिक शिक्षा पर केन्द्रित नीति निर्धारक निकायों में राष्ट्रीय सहमति, समय की उपलब्धता के आधार पर सभी अध्ययन संयोजित हैं। अध्ययन की यह योजना NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर ध्यान केन्द्रित करने वाले पाठ्यक्रम सामग्री में आधुनिक ज्ञान के साथ एवं भारतीय ग्रंथों से तैयार वैदिक ज्ञान के उपयुक्त सामग्री के साथ है।

प्रतिष्ठान बोर्ड की वेद पाठशालाओं, गुरु शिष्य ईकाइयों और गुरुकुलों में, पाठ्यक्रम मुख्य रूप से सम्पूर्ण सस्वर कण्ठस्थीकरण के साथ संपूर्ण वेद शाखा का अध्ययन होता है तथा संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि और SUPW जैसे अतिरिक्त सहायक विषयों के साथ वेद अध्ययन होता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि वेदों की 1131 शाखाएँ सस्वर पाठ के साथ थे, अर्थात् 21 ऋग्वेद में, 101 यजुर्वेद में, 1000 सामवेद में और 9 अथर्ववेद में। समय के साथ इन शाखाओं की एक बड़ी संख्या विलुप्त हो गई और वर्तमान में केवल 10 शाखाएँ, अर्थात् ऋग्वेद में एक, यजुर्वेद में 4, सामवेद में 3 और अथर्ववेद में 2 सस्वर पाठ के रूप में विद्यमान हैं, जिन पर भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित है, इन 10 शाखाओं के संबंध में भी बहुत कम प्रतिनिधि वेदपाठी पंडित है जो श्रुति परम्परा/पाठ/वेद ज्ञान परम्परा को उसके प्राचीन और पूर्ण रूप में संरक्षित किये हुए हैं। जब तक श्रुति परम्परा के अनुसार वैदिक शिक्षा पर मूलरूप से ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक यह व्यवस्था सुदृढ नहीं हो पायेगी। वैदिक श्रुति परम्परा की श्रुति अध्ययनों के पहलुओं को सामान्य/अध्ययन में स्कूल में न तो पढ़ाया जाता है

और न ही किसी स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है, और न ही स्कूलों/बोर्डों के पास उन्हें आधुनिक स्कूल पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने और सञ्चालित करने की विशेषज्ञता है।

वैदिक छात्र जो श्रुति परम्परा / वेद का पाठ सीखते हैं, वे दूर-दराज के गाँवों, सीमावर्ती गाँवों आदि में वेद गुरुकुलों में, वेद पाठशालाओं में, वैदिक आश्रमों में हैं, और वेद अध्ययन के लिए उनका समर्पण लगभग 1900 - 2100 घण्टे प्रतिवर्ष है। जो अन्य स्कूल बोर्ड की सीखने की प्रणाली के समय से दोगुना है और वैदिक छात्रों को ''गुरु-मुख-उच्चारण अनुच्चारण'' - वेद गुरु के सामने बैठकर शब्दशः उच्चारण सीखना होता है, संपूर्ण वेद, शब्दशः उच्चारण (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि) के साथ कण्ठस्थ करना होता है और स्मृति के बल पर बिना किसी पुस्तक/पोथी को देखे।

ज्ञात हो कि इस प्रकार के वैदिक अध्ययन, वेद मन्त्रपाठ की रीति, गुरु शिष्य की अखण्ड मौखिक परम्परा से प्रचलित क्रम के कारण वेदों के मौखिक प्रसारण को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत रूप में यूनेस्को-विश्व मौखिक विरासत सूची में मान्यता प्राप्त हुई है। इसलिए, सदियों पुरानी वैदिक शिक्षा (श्रुति परम्परा/सस्वर पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) की प्राचीनता और सम्पूर्ण अखण्डता को बनाए रखने के लिए सुयोग्य कार्यनीति की आवश्यकता है। इसलिए, प्रतिष्ठान और इस बोर्ड ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 द्वारा निर्धारित कौशल और व्यावसायिक विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि आदि के साथ विशिष्ट प्रकार के वेद पाठ्यक्रम को अपनाया है।

कोई भी व्यक्ति तब सुखी होकर जी सकता है जब वह परा-विद्या और अपरा-विद्या दोनों का अध्ययन करता है। वेदों में से भौतिक ज्ञान, उनकी सहायक शाखाएँ और भौतिक रुचि के विषय अपरा-विद्या कहलाते थे। सर्वोच्च वास्तविकता का ज्ञान, उपनिषदों की अंतिम खोज, परा-विद्या कहलाती है। वेद और उसके सहायक के रूप में अध्ययन किए जाने वाले विषयों की कुल संख्या 14 है। विद्या की 14 शाखाएँ ये हैं - चार वेद, छह वेदांग, मीमांसा (पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा), न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थशास्त्र सहित चौदह विद्याएं अठारह हो जाते हैं। सदियों से भारत उपमहाद्वीप में सभी शिक्षा संस्कृत भाषा में ही थी, क्योंकि इस उपमहाद्वीप में लम्बे समय तक संस्कृत बोली जाने वाली भाषा रही। इसलिए वेद भी सुलभता से समझे जाते थे।

तक्षशिला के विद्यालयों के सम्बन्ध में अठारह शिल्प-या औद्योगिक और तकनीकी कला और शिल्प का उल्लेख किया गया है। छान्दोग्य उपनिषद् तथा नीति ग्रन्थों में भी इन का विवरण है। निम्नलिखित 18 कौशल/व्यावसायिक विषय अध्ययन के विषय बताए गए हैं- (1) गायन सङ्गीत (2) वाद्य सङ्गीत (3) नृत्य (4) चित्रकला (5) गणित (6) लेखाशास्त्र (7) इञ्जीनियरिङ्ग (8) मूर्तिकला (9) प्रजनन (10) वाणिज्य (11) चिकित्सा (12) कृषि (13) परिवहन और कानून (14) प्रशासनिक प्रशिक्षण (15) तीरंदाजी, किला निर्माण और सैन्य कला (16) नये वस्तु या उपज का निर्माण । उपर्युक्त कला और शिल्प में तकनीकी शिक्षा के लिए प्राचीन भारत में एक प्रशिक्षु प्रणाली विकसित की गई थी। विद्या और अविद्या मनुष्य को इस प्रपञ्च में सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने के लिए समर्थ और परलोक में मुक्ति योग्य सिद्ध करती है ।

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में सर्व प्रथम भारतीय सभ्यता में शास्त्रों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सीखने की एक विशाल एवं सुदृढ परम्परा रही है। भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, ज्ञानियों और संतों की भूमि के साथ-साथ विद्वानों और वैज्ञानिकों की भूमि भी रही है। शोध से पता चला है कि भारत सीखने सिखाने (विद्या-आध्यात्मिक ज्ञान और अविद्या- भौतिक ज्ञान) के क्षेत्र में विश्व गुरु तो था ही, सक्रिय रूप से भी सम्पूर्ण प्रपञ्च में योगदान दे रहा था और भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों जैसे सीखने के विशाल केन्द्र स्थापित किए गए थे, जहाँ हजारों शिक्षार्थी आते थे। प्राचीन ऋषियों द्वारा खोजी गई कई विज्ञान और प्रौद्योगिकी तकनीकी, सीखने की पद्धतियाँ, सिद्धान्तों और तकनीकों ने कई पहलुओं पर हमारे विश्व के ज्ञान के मूल सिद्धान्तों को बनाया और प्रबल किया है, खगोल विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, ध्वन्यात्मकता, व्याकरण आदि पर दुनिया में भारत का योगदान समझा जाता है। प्रत्येक भारतीय बालक, बालिका द्वारा इस महान् देश का गौरवान्वित नागरिक होने के कारण इन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। भारत की संसद के प्रवेश द्वार पर उद्धृत ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' जैसे भारत के विचार और विभिन्न अवसरों पर संवैधानिक प्राधिकरणों द्वारा उद्धृत कई वेद मंत्र के अर्थ वेदों के अध्ययन से ही ज्ञात होते हैं और उन पर मनन करके ही वास्तविक प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। वेदों और सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में "सत, चित, आनंद" के रूप में सभी प्राणियों की अन्तर्निहित समानता पर जोर दिया गया है।

यह भी उल्लेख किया गया है कि वेद वैज्ञानिक ज्ञान के स्रोत हैं और हमें आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए वेदों और भारतीय शास्त्रों के स्रोतों की ओर पुनः निष्ठा से देखना होगा। जब तक छात्रों को वेदों का पाठ, शुद्ध वैदिक ज्ञान सामग्री और वैदिक दर्शन को आध्यात्मिक ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है, तब तक आधुनिक भारत की आकांक्षा को पूरा करने के लिए वेदों के सन्देश का प्रसार पूर्ण रूप से सम्भव नहीं है।

वेद की शिक्षा (वैदिक मौखिक एवं श्रुति परंपरा/वेद पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) केवल धार्मिक शिक्षा नहीं है। यह कहना अनुचित होगा कि वेदों का अध्ययन केवल धार्मिक निर्देश है। वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं और इनमें केवल धार्मिक सिद्धान्त ही नहीं हैं, बल्कि वेद शुद्ध ज्ञान के कोष है, मानव जीवन की कुञ्जी वेदों में है इसलिए, वेदों में निर्देश या शिक्षा को केवल "धार्मिक शिक्षा/धार्मिक निर्देश" के रूप में नहीं माना जा सकता है।

2004 की सिविल अपील संख्या 6736 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय (AIR 2013: 15 SCC 677); (निर्णय की दिनाङ्क- 3 जुलाई 2013), जैसा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय में यह स्पष्ट है कि वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं। वेदों में गणित, खगोल विज्ञान, मौसम विज्ञान, रसायन विज्ञान, हाइड्रोलिक्स, भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कृषि, दर्शन, योग, शिक्षा, काव्यशास्त्र, व्याकरण, भाषा विज्ञान आदि के विषय सम्मिलित हैं, जिन्हें माननीय भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रकाशित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुपालन में प्रतिष्ठान एवं बोर्ड के माध्यम से वैदिक शिक्षा -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली 'संस्कृत ज्ञान प्रणाली' के रूप में भी जाना जाता है, उनके महत्त्व और पाठ्यक्रम में उनका समावेश और विविध विषयों के संयोजन में लचीले दृष्टिकोण को मजबूती से प्रदर्शित किया गया है। कला एवं मानविकी के छात्र भी विज्ञान सीखेंगे, प्रयास करना होगा कि सभी व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) को प्राप्त करें। कला, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में भारत की गौरवशाली परम्परा इस तरह की शिक्षा की ओर बढ़ने में सहायक होगी। भारत की समृद्ध, विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं को संयोजित करने और उससे प्रेरणा पाने हेतु यह नीति बनायी गयी है। भारत की शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य के महत्त्व, प्रासङ्गिकता और सुन्दरता की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। संस्कृत,

संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित एक महत्त्वपूर्ण आधुनिक भाषा है यदि सम्पूर्ण लैटिन और ग्रीक साहित्य को मिलाकर भी इसकी तुलना की जाए तो भी वह संस्कृत शास्त्रीय साहित्य की बराबरी नहीं कर सकता। संस्कृत साहित्य में गणित, दर्शन, व्याकरण, सङ्गीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातुविज्ञान, नाटक, कविता, कहानी, और बहुत कुछ (जिन्हें "संस्कृत ज्ञान प्रणालियों" के रूप में जाना जाता है) के विशाल भण्डार हैं । विश्व विरासत के लिए इन समृद्ध संस्कृत ज्ञान प्रणाली विरासतों को न केवल पोषण और भविष्य के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध कराकर इन्हें बढ़ाते हुए नए उपयोगों में भी रखा जाना चाहिए। इन सबको हजारों वर्षों में जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों द्वारा, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के एक विस्तृत जीवन्त दर्शन के साथ लिखा गया है । संस्कृत को रूचिकर और अनुभावात्मक होने के साथ-साथ समकालीन रूप से प्रासङ्गिक विधियों से पढ़ाया जाएगा । संस्कृत ज्ञान प्रणाली का उपयोग विशेष रूप से ध्वनि और उच्चारण के माध्यम से है। फाउंडेशन और माध्यमिक स्कूल स्तर पर संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों को संस्कृत के माध्यम से संस्कृत पढ़ाने (एस.टी.एस.) और इसके अध्ययन को आनन्ददायी बनाने के लिए सरल मानक संस्कृत (एस.एस.एस.) में लिखा जाना है। ध्वन्यात्मकता और उच्चारण वेदों की मौखिक परम्परा पर लागू होता है। वैदिक शिक्षा ध्वन्यात्मकता और उच्चारण पर आधारित है।

कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं, आदि के बीच कोई स्पष्ट विभेद नहीं किया गया है। सभी ज्ञान की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने के लिए, एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक (Multi-Disciplinary) एवं समग्र शिक्षा के विकास पर बल दिया गया है। नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतान्त्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिन्तन, स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व, बहुलतावाद, समानता और न्याय पर जोर दिया गया है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 4.23 में अनिवार्य विषयों, कौशलों और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण के विषय में निर्देश है। विद्यार्थियों को अपने व्यक्तिगत पाठ्यक्रम को चुनने में बड़ी मात्रा में लचीले विकल्प मिलेगें, लेकिन आज की तेजी से बदलती दुनिया में सभी विद्यार्थियों को

एक अच्छे, सफल, अनुभवी, अनुकूलनीय और उत्पादक व्यक्ति बनने के लिए कुछ विषयों, कौशलों और क्षमताओं को सीखना भी आवश्यक है। वैज्ञानिक स्वभाव और साक्ष्य आधारित सोच, रचनात्मकता और नवीनता, सौंदर्यशास्त्र और कला की भावना, मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति और संवाद, स्वास्थ्य और पोषण, शारीरिक शिक्षा, शारीरिक दक्षता, स्वास्थ्य और खेल, सहयोग और टीम वर्क, समस्या को हल करने और तार्किक चिन्तन, व्यावसायिक एक्सपोजर और कौशल, डिजिटल साक्षरता, कोडिंग और कम्प्यूटेशनल चिन्तन, नैतिकता और नैतिक तर्क, मानव और संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान और अभ्यास, लिङ्ग संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल और मूल्य, भारत का ज्ञान, पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता, जिसमें पानी और संसाधन संरक्षण, स्वच्छता और साफ-सफाई, समसामयिक घटना और स्थानीय समुदायों, राज्यों, देश और दुनिया द्वारा जिन महत्त्वपूर्ण मुद्दों का सामना किया जा रहा है उनका ज्ञान, भाषाओं में प्रवीणता के अलावा, इन कौशलों में सम्मिलित है। बच्चों के भाषा कौशल संवर्धन के लिए और इन समृद्ध भाषाओं और उनके कलात्मक निधि के संरक्षण के लिए, सार्वजनिक या निजी सभी विद्यालयों में सभी छात्रों को भारत की एक शास्त्रीय भाषा और उससे सम्बन्धित साहित्य सीखने का कम से कम दो साल का विकल्प मिलेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 4.27 में "भारत का ज्ञान" के विषय में महत्त्वपूर्ण निर्देश है। "भारत का ज्ञान" में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान - भारतीय ज्ञान प्रणाली जैसे गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल के साथ –साथ शासन, राजव्यवस्था, संरक्षण आदि जहाँ भी प्रासङ्गिक हो, विषयों में सम्मिलित किया जाएगा। इसमें औषधीय प्रथाओं, वन प्रबन्धन, पारम्परिक (जैविक) फसल की खेती, प्राकृतिक खेती, स्वदेशी खेलों, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में प्राचीन और आधुनिक भारत के प्रेरणादायक व्यक्तित्वों पर ज्ञानदायी विषय हो सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 11.1 में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर प्रवृत्त करने के निर्देश हैं। भारत में समग्र एवं बहु-विषयक विधि से सीखने की एक प्राचीन परम्परा पर बल दिया गया है, तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों के उल्लेख सहित 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में गायन और चित्रकला, वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायनशास्त्र और गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियान्त्रिकी और साथ ही साथ

सम्प्रेषण, चर्चा और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) भी सम्मिलित है । यह विचार है कि गणित, विज्ञान, व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट स्किल सहित रचनात्मक मानव प्रयास की सभी शाखाओं को 'कला' माना जाना चाहिए, जिसका मूल भारत है। 'कई कलाओं के ज्ञान' या जिसे आधुनिक समय में प्राय: 'उदार कला' कहा जाता है (अर्थात्, कलाओं की एक उदार धारणा) की इस धारणा को भारतीय शिक्षा में वापस लाया जाना चाहिए, क्योंकि यह ठीक उसी तरह की शिक्षा है जो 21वीं सदी के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 22.1 में भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन हेतु निर्देश हैं। भारत संस्कृति का समृद्ध भण्डार है – जो हजारों वर्षों में विकसित हुआ है, और यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, भाषायी अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ दिखता है। भारत में भ्रमण, भारतीय अतिथि सत्कार का अनुभव होना, भारत के आकर्षक हस्तशिल्प एवं हाथ से बने कपड़ों को खरीदना, भारत के प्राचीन साहित्य को पढ़ना, योग एवं ध्यान का अभ्यास करना, भारतीय दर्शनशास्त्र से प्रेरित होना, भारत के अनुपम त्यौहारों में भाग लेना, भारत के वैविध्यपूर्ण सङ्गीत एवं कला की सराहना करना और भारतीय फिल्मों को देखना आदि ऐसे कुछ आयाम हैं जिनके माध्यम से दुनिया भर के करोड़ो लोग प्रतिदिन इस सांस्कृतिक विरासत में सम्मिलित होते हैं, इसका आनन्द उठाते हैं और लाभ प्राप्त करते हैं।

यही सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सम्पदा है भारत की इस सांस्कृतिक सम्पदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देश की उच्चतर प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि इस देश की पहचान के साथ-साथ इसकी अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 22.2 में कलाओं के विषय में निर्देश हैं। भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन राष्ट्र एवं राष्ट्र के नागरिकों के लिए महत्त्वपूर्ण है । बच्चों में अपनी पहचान और अपनेपन के भाव तथा अन्य संस्कृतियों और पहचानों की सराहना का भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसी प्रमुख क्षमताओं को बच्चों में विकसित करना जरूरी है। बच्चों में अपने सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा एवं परम्परा की भावना और ज्ञान के विकास द्वारा ही एकता,

सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्म-सम्मान निर्मित किया जा सकता है । अत: व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति का योगदान महत्त्वपूर्ण है ।

प्रतिष्ठान की मुख्य वैदिक शिक्षा (वेदों की श्रुति या मौखिक परम्परा/वेद पाठ/वैदिक ज्ञान परम्परा) सहित अन्य आवश्यक आधुनिक विषय- संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि, भारतीय कला, SUPW आदि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों की नींव/ स्रोत भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) विषयों की अनुप्रविष्टि (इनपुट) पर आधारित हैं। ये सभी निर्देश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के शैक्षिक चिन्तकों, प्राधिकरणों के परामर्श एवं नीति को ध्यान में रखते हुए प्रारूप पुस्तकें पीडीएफ फॉर्मेट में उपलब्ध करायी गयी हैं। इन पुस्तकों को भविष्य में NCF के अनुरूप अद्यतन किया जाएगा और अन्त में प्रिन्ट रूप में उपलब्ध कराया जाएगा।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के राष्ट्रीय आदर्श वेदविद्यालय के अध्यापक महानुभावों ने, वेद अध्यापन (वैदिक मौखिक एवं श्रुति परम्परा/वेद पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) में समर्पित आचार्यों ने, सम्बद्ध वेद पाठशालओं के संस्कृत एवं आधुनिक विषयों के अध्यापकों ने, आधुनिक विषय पाठ्यपुस्तकों को इस रूप में प्रस्तुत करने में पिछले दो वर्षों में अथक परिश्रम किया है। उन सभी को हृदय की गहराई से धन्यवाद समर्पण करता हूँ। राष्ट्र स्तर के विविध विशेषज्ञों ने समय-समय पर पधार कर पाठ्यपुस्तकों में गुणवत्ता लाने में विशेष सहायता प्रदान की है। उन सभी विशेषज्ञों एवं विद्यालयों के अध्यापक महानुभावों को भी धन्यवाद अर्पित करता हूँ। अक्षर योजना हेतु, चित्राङ्कन हेतु, पेज सेटिंग हेतु मेरे सहयोगी कर्मचारियों ने कार्य किया है, उन सभी को हृदय की गहराई से कृतज्ञता समर्पण करता हूँ।

पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए रचनात्मक आलोचना सहित सभी सुझावों का स्वागत है।

आपरितोषात् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानाम् आत्मन्यप्रत्ययं चेतः॥

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् १.०२)

(जब तक विद्वानों को पूर्ण सन्तुष्टि न हो जाए तब तक विशिष्ट प्रयोग को सब तरह से सफल नहीं मानता क्योंकि प्रयोग में विशेष योग्यता प्राप्त विद्वान भी पहले प्रयोग के सफलता में आश्वस्त नहीं रहता है।)

प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल्

सचिव

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

पाठ्यपुस्तक के आलोक में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के आलोक में राष्ट्रीय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, भारत सरकार द्वारा संस्थापित महर्षि सान्दीपनि वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा देश भर में मान्यता प्राप्त वेद पाठशालाओं/गुरु शिष्य इकाइयों में अध्ययनरत वेद भूषण प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम एवं वेद विभूषण प्रथम और द्वितीय वर्ष तथा स्कूली शिक्षा में छठीं, सातवीं, आठवीं, नवीं, दसवीं, ग्याराहवीं एवं बाराहवीं कक्षा के छात्रों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. एवं राज्य शिक्षा बोर्डों तथा भारतीय ज्ञान परम्परा विषयक विविध प्रकाशित स्त्रोतों के मानक अनुसार सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

सामाजिक विज्ञान में सम्मिलित विषय यथा भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र आदि हमें, समाज को समझने में बहुविध सहायता प्रदान करते हैं। इसी समझ के आधार पर हम अपने भविष्य को व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से उत्कृष्टतम बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह सम्पूर्ण विश्व हजारों-लाखों वर्ष पूर्व से समयानुरूप विविध घटनाओं और परिवर्तनों का परिणाम है। इन घटनाओं परिवर्तनों और परिणामों को जानने व समझने में सामाजिक विज्ञान की यह पाठ्यपुस्तक निश्चित ही सहायक है।

सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में अधिकांश विषयों को वैदिक वाङ्मय के सैद्धान्तिक स्वरूप और उपयोगिता को दृष्टि में रखकर जोड़ा गया है, जिससे अध्येताओं को भारतीयता और सांस्कृतिक गौरव का निश्चय ही अनुभव होगा। इस पुस्तक में विविध मानचित्रों, चित्रों एवं अद्यतन आँकड़ों को समाहित कर छात्रों के लिए अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में समय समय पर माननीय सचिव महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक के विषय सङ्कलन, मन्त्र सङ्कलन, शब्द विन्यास, त्रुटि सुधार आदि की दृष्टि से राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के समस्त आचार्यों एवं अध्यापकों का योगदान रहा है, विशेषतया श्री आयुष शुक्ला एवं श्री अभिजीत सिंह राजपूत जी का साथ ही विविध विद्यालयों के सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों श्री विजेन्द्र सिंह हाड़ा, श्री विक्रम बासनीवाल, श्री अनिल शर्मा, श्री मुकेश कुशवाहा, श्री लक्ष्मीकान्त मिश्र, श्री अमरेश चन्द्र पाण्डेय, श्री नरेन्द्र सिंह, श्रीमती अनुपमा त्रिवेदी, श्रीमती नेहा मैथिल जी का भी अभूतपूर्व सहयोग

प्राप्त हुआ है। इन सब के साथ टङ्कण कार्य में श्रीमती किरण परमार का कार्य अति सराहनीय रहा है। इस सहयोग के लिए आप सभी को हृदय से धन्यवाद अर्पित करते हैं।

हमारा प्रयास सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक को वैदिक विद्यार्थियों के लिए सतत् अधिकतम उपयोगी बनाने का रहा है, क्योंकि सामाजिक विज्ञान एक गतिशील विषय होने के कारण सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में पाठ्य सामग्री के संशोधन एवं परिवर्धन की आवश्यकता सदैव बनी रहती है। इस सन्दर्भ में सम्मानित शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों तथा सामाजिक विज्ञान में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

सादर धन्यवाद

दिनाङ्क-

डॉ. प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी

रविन्द्र कुमार शर्मा

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	1
1	हमारी पृथिवी	2-10
2	हमारा पर्यावरण	11-23
3	प्राकृतिक वनस्पति एवं जैव विविधता	24-30
4	मरुस्थल में जीवन	31-36
5	मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियायें	37-44
	इतिहास	45
6	7 वीं से 18 वीं सदी के मध्य हुए परिवर्तनों को समझना	46-54
7	मध्यकालीन भारत- नए राजवंशो का उदय	55-67
8	मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला	68-76
9	जनजातीय और यायावर समुदाय	77-83
10	मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय	84-91
11	अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ	92-96
	नागरिक जीवन	97
12	स्वास्थ्य और सरकार	98-105
13	राज्य शासन की कार्य प्रणाली	106-110
14	सञ्चार माध्यम और विपणि: (बाजार) की समझ	111–118
15	समानता एवं लिंग बोध	119-124
	आदर्श प्रश्न पत्र	125-133

वेदभूषण द्वितीय वर्ष

भूगोल

अध्याय–1

हमारी पृथिवी

आइये जानें- पृथिवी की संरचना, शैल, पृथिवी में परिवर्तन, मुख्य स्थलाकृतियाँ।

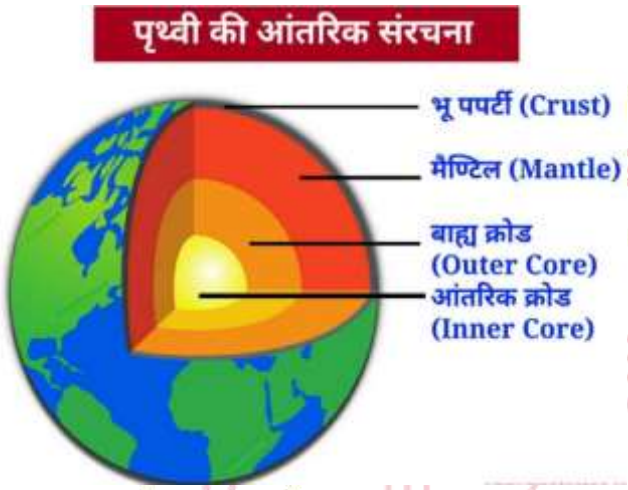

चित्र- 1.1 पृथिवी की आन्तरिक संरचना

पृथिवी के आन्तरिक संरचना– हमारी पृथिवी एक के ऊपर एक संकेद्री परतों से मिलकर बनी हुई है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि **पृथिव्याः सप्त धामभिः।** (1.22.16) अर्थात् पृथिवी सात प्रकार के धामों (परतों) से बन्धी हुई है। अथर्ववेद में कहा गया है कि- **श्याममयोस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम्।** (11.3.7) इस मन्त्र में लोहे को पृथिवी का मांस एवं ताँबे को पृथिवी का रक्त बतलाया गया है, अर्थात् पृथिवी के गर्भ में लोहा एवं ताँबा उपलब्ध हैं। आधुनिक भू-वेत्ताओं ने भी पृथिवी के आन्तरिक हिस्से को तीन भागों में बाँटा है- 1. भू-पर्पटी 2. मैंटल 3. क्रोड।

भू- पर्पटी- पृथिवी के ऊपरी भाग को भू-पर्पटी कहते हैं। भू-पर्पटी महाद्वीपीय क्षेत्रों में लगभग 35 कि.मी. तथा सागरीय तटों मे 5 कि.मी. की गहराई तक है। यह मुख्यत: बेसाल्ट चट्टानों से बनी हुई है। इसके दो भाग हैं- सियाल (SIAL) और सीमा (SIMA)। सियाल क्षेत्र में सिलिका, एलुमिना एवं सीमा क्षेत्र में सिलिकन एवं मैग्नेशियम की बहुलता है।

मैंटल- भू-पर्पटी के नीचे मैंटल होता है। यह लगभग 2900 कि.मी. की गहराई तक फैला होता है।

क्रोड- पृथिवी की सबसे आन्तरिक परत क्रोड होती है, जिसकी त्रिज्या लगभग 3500 किलोमीटर है। पृथिवी का क्रोड भाग मुख्यत: निकिल और लोहे की बनी होती है, जिसे **निफे** (नि-निकिल+फे-फेरस) कहते हैं। केन्द्रीय क्रोड का तापमान एवं दाब काफी उच्च होता है। यहाँ पर पदार्थ लगभग द्रव अवस्था (मैग्मा) के रूप में पाये जाते हैं। अथर्ववेद में पृथिवी की इस अवस्था का उल्लेख है- **वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निम्।** (12.1.6) अर्थात् जगत

क्या आप जानते है-

- पृथिवी के आयतन का 1% भाग भू-पर्पटी, 84% भाग मैंटल और 15% भाग क्रोड हैं।
- पृथिवी का व्यास 12742 कि.मी. हैं।

क्या आप जानते है-

- जीवाश्म- पृथिवी की शैलों की परतों में दबे मृत पौधों एवं जीव-जन्तुओं के अवशेषों को जीवाश्म कहतें हैं।

के लिए हितकारी अग्नितत्त्व पृथिवी के अन्दर व्याप्त है। इसी मन्त्र के पूर्वपद में कहा गया है कि- **हिरण्यवक्षा जगतो निवेसनी**।(12.1.6) अर्थात् पृथिवी अपने गर्भ में सुवर्ण को धारण की हुई है।

पृथिवी की आन्तरिक संरचना का ज्ञान हमें शैलों के घनत्व, भू-गर्भिक ताप, ज्वालामुखी क्रियाएँ तथा भूकम्पीय तरंगों के आधार पर प्राप्त होता है। इन्हें पृथिवी की विवर्तनिक शक्तियाँ भी कहते हैं, जिनके कारण पृथिवी के आन्तरिक भाग में हलचल होती है।

शैल- पृथिवी की भू-पर्पटी बनाने वाले खनिज पदार्थों के किसी भी प्राकृतिक पिण्ड को शैल कहते हैं। प्रत्येक शैल में एक से अधिक खनिज पदार्थ मिश्रित रूप में होते हैं। शैलों को निर्माण के आधार पर मुख्यत: तीन भागों में बाँटा गया है- 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैल 3. कायान्तरित शैल।

1. **आग्नेय शैल-** आग्नेय शैलों का निर्माण ज्वालमुखी उद्गार के समय पृथिवी के गर्भ से निकलने वाले लावा (मैग्मा) के ठण्डा होकर ठोस हो जाने पर होता है। ये शैल रवेदार एवं कठोर होती हैं। बहुमूल्य खनिज जैसे लौह-अयस्क, सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा, निकिल आदि इसी शैल में पाये जाते हैं। ग्रेनाईट, बेसाल्ट, ग्रेवों आदि आग्नेय शैल के उदाहरण हैं।

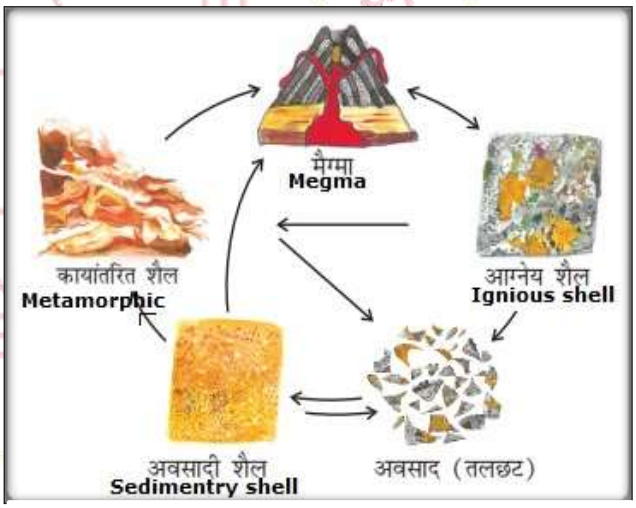

चित्र-1.2 शैल

आग्नेय शैल दो प्रकार के होते हैं- **बहिर्भेदी शैल** एवं **अन्तर्भेदी शैल**। जब लावा पृथिवी के आन्तरिक भाग से निकलकर सतह पर आ जाता है और ठोस रूप धारण कर लेता है तो इसे **बहिर्भेदी आग्नेय शैल** कहते हैं। इनकी संरचना बहुत बारीक कणों से हुई है। बेसाल्ट इसका अच्छा उदाहरण है। भारत में दक्षिण का पठार बेसाल्ट शैलों से निर्मित है। द्रवित लावा कभी-कभी भूपर्पटी के अन्दर ही ठण्डा हो जाता है, तो ऐसे बने ठोस शैलों को **अन्तर्भेदी आग्नेय शैल** कहते हैं। ग्रेनाइट पत्थर इसी शैल के उदाहरण है।

2. **अवसादी शैल-** जब शैल टूटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त होकर एक स्थान पर परत के रूप में जमा होकर ठोस रूप धारण कर लेते हैं, तो उन्हें **अवसादी या परतदार शैल** कहते हैं। बलुआ पत्थर,

चूना पत्थर, कोयला, स्लेट, नमक की चट्टान, शेलखरी आदि अवसादी शैल के उदाहरण हैं। अधिकांश जीवाश्म एवं खनिज तेल इन्हीं शैलों में पाये जाते हैं। दामोदर नदी, महानदी तथा गोदावरी नदी की बेसिनों में स्थित अवसादी चट्टानों में कोयला पाया जाता है।

3. **कायान्तरित शैल**- जब आग्नेय या अवसादी शैल ताप, दाब एवं रासायनिक क्रियाओं के कारण वलित या भ्रंसित होते हैं, तो **कायान्तरित शैल** का निर्माण होता है। स्लेट, शिस्ट, क्वार्टजाईट, संगमरमर, नीस आदि कायान्तरित शैल के उदाहरण हैं।

क्या आप जानते है-

- पृथिवी के केन्द्र की गहराई अनुमानत: समुद्र की सतह से छ: हजार किलोमीटर है, जहाँ मानव का पहुँचना असंभव है।
- विश्व की सबसे गहरी खान दक्षिण अफ्रीका में स्थित है, जिसकी गहराई 4 किलोमीटर है।

विविध खनिजों से बने ये शैल मानव के लिए अति उपयोगी होते है। खनिजों में प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाले पदार्थ जो निश्चित भौतिक गुणधर्म एवं निश्चित रसायनिक तत्त्वों से मिश्रित होते हैं। इनका उपयोग ईंधन जैसे कोयला, प्राकृतिक गैस एवं पेट्रोलियम पदार्थों के रूप में होता है। इसके अतिरिक्त इनका उपयोग उद्योगों, औषधियों एवं उर्वरकों आदि में किया जाता है।

पृथिवी में परिवर्तन- पृथिवी अनेक स्थलमण्डलीय प्लेटों में विभाजित है। ये प्लेटें सदैव धीरे-धीरे चारों ओर घूमती रहती है। जिनकी गति वर्ष में लगभग कुछ मिलीमीटर होती है। इसका कारण पृथिवी के आन्तरिक भाग में पिघला मैग्मा जो वृत्तीय रूप में गतिशील रहता है। इसके कारण पृथिवी की सतह में भी परिवर्तन होता है। पृथिवी की गति को उनमें प्रयुक्त बल के आधार पर विभाजित किया गया है। पृथिवी के आन्तरिक भाग में घटित बल को **अन्तर्जनित बल** (एंडोजेनिक फोर्स) कहते हैं। पृथिवी की सतह पर उत्पन्न होने वाले बल को **बहिर्जनित बल** (एक्सोजेनिक फोर्स) कहते हैं। अन्तर्जनित बल कभी-कभी तेज गति उत्पन्न करते हैं, तो कभी धीमी गति उत्पन्न करते हैं। जिसके कारण पृथिवी पर ज्वालामुखी एवं भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं।

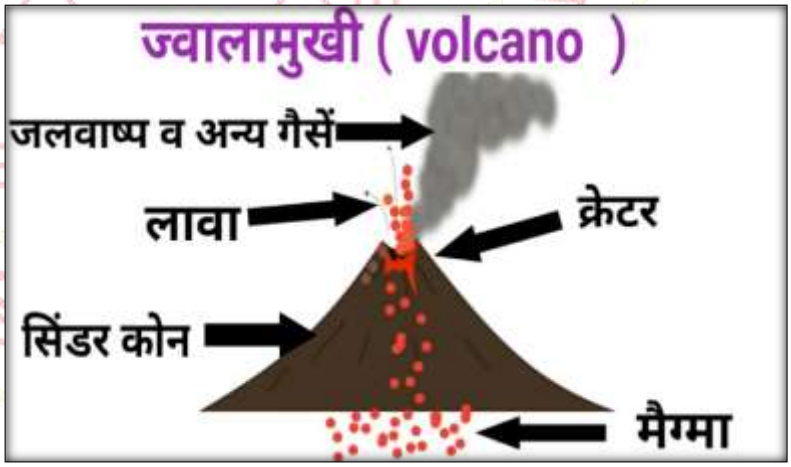

चित्र-1.3 ज्वालामुखी के विभिन्न अंग

ज्वालामुखी- पृथिवी के धरातल पर वह दरार या छिद्र जिससे समय-समय पर पृथिवी के अन्दर से तप्त लावा, गैसें, भाप, आदि बाहर निकलता है, उसे ज्वालामुखी कहते हैं। जब लावा एवं अन्य पदार्थ ज्वालामुखी छिद्र के चारों और जमा होने लगते हैं तब **ज्वालामुखी शंकु** बनता है। ज्वालामुखी के ऊपर बीच में स्थित छिद्र को **ज्वालामुखी छिद्र** कहते हैं। इस छिद्र का सम्बन्ध धरातल के नीचे एक पतली नली से होता है, जिसे **ज्वालामुखी नली** कहते हैं। जब ज्वालामुखी का छिद्र बड़ा हो जाता है, तो उसे **ज्वालामुखी का मुख (क्रेटर)** कहते है। जब ज्वालामुखी फूटता है तो, उससे अनेक गैसें जैसे- सल्फरडाई ऑक्साईड, हाईड्रोजन एवं कार्बनडाई ऑक्साईड के साथ कुछ ठोस पदार्थ के रूप में शैल के खण्ड, धूल और राख के कण आदि भी निकलते हैं, जिन्हें **टेफ्रा** कहते हैं। ज्वालामुखी उद्गार के समय निकलने वाला तरल पदार्थ जब धरती की ऊपरी सतह पर आता है, तो उसे **लावा** कहते हैं। भू-गर्भ में गैसों की उत्पत्ति, रेडियो ऐक्टिव तत्त्वों द्वारा भू-गर्भताप में वृद्धि तथा भू-प्लेटों के खिसकने के कारण ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं। यह विस्फोट दो रूपों में होता है- जब ज्वालामुखी का विस्फोट किसी एक केन्द्रीय मुख से भारी धमाकों के साथ होता है तो उसे **केन्द्रीय विस्फोट** कहते हैं। जब ज्वालामुखी से विस्फोट न होकर भू-पटल पर पड़ी दरारों से लावा रिसकर बाहर आता है तो इसे **दरारी विस्फोट** कहते हैं।

ज्वालामुखी का वर्गीकरण- क्रियाशीलता के आधार पर ज्वालामुखी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है- 1. सक्रिय ज्वालामुखी 2. प्रसुप्त ज्वालामुखी 3. शान्त ज्वालामुखी ।

1. **सक्रिय ज्वालामुखी-** वे ज्वालामुखी जिनके मुख से निरन्तर धुआँ, लावा, गैस, धूल आदि पदार्थ निकलते रहते हैं, तो उसे **सक्रिय ज्वालामुखी** कहा जाता है। इटली का **विसुवियस** तथा भू-मध्यसागर का स्ट्रम्बोली सक्रिय ज्वालामुखी के उदाहरण हैं।
2. **प्रसुप्त ज्वालामुखी-** वे ज्वालामुखी, जो लम्बे समय तक शान्त रहने के पश्चात् अचानक सक्रिय हो उठते हैं, उन्हें **प्रसुप्त ज्वालामुखी** कहते हैं। इसके अचानक विस्फोट के कारण अपार जन धन की हानि होती है। जापान का **फ्यूजीयामा** ऐसा ही ज्वालामुखी है।
3. **शान्त ज्वालामुखी-** वे ज्वालामुखी, जो अब निष्क्रिय हो चुके हैं अर्थात् अब उनमें कोई विस्फोट नहीं होता है और न ही होने की सम्भावना है, उन्हें **शान्त ज्वालामुखी** कहते हैं। अफ्रीका का **किलिमञ्जारो**, ईरान का **कोहू सुल्तान** शान्त ज्वालामुखी हैं।

उद्गार के अन्य रूप- ज्वालामुखी उद्गार के अन्य रूपों में- 1. गीजर 2. उष्ण स्रोत 3. धुँआरे हैं।

1. **गीजर-** भूमि छिद्र से होकर भूमिगत जल स्रोतों से वाष्प और गर्म जल का तीव्र निकास गीजर कहलाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित येलोस्टोन पार्क का ओल्ड फेथफुल इसका उदाहरण है।

2. **उष्ण स्रोत**- उष्ण स्रोतों से निरन्तर वाष्प और जल प्रवाहित होता रहता है। जैसे लद्दाख का पुगा, बिहार में राजगीर, हरियाणा में सोना नामक स्थान उष्ण स्रोत के उदाहरण हैं।
3. **धुँआरा**- पृथिवी में वे छिद्र जिनके माध्यम से गैस एवं वाष्प निकलती है **धुँआरा** कहलाते हैं। ये ज्वालामुखी की सक्रियता के अन्तिम लक्षण है। ईरान में कोह सुल्तान का धुँआरा एवं हवाई द्वीप का धुँआरा इसके उदाहरण हैं।

भूकम्प- जब पृथिवी की सतह कम्पित होती है, तो उसे **भूकम्प** (EARTHQUAKE) कहते हैं। यह स्थिति धरातल के नीचे अथवा ऊपरी चट्टानों के लचीलेपन या गुरुत्वाकर्षण की सम स्थिति में क्षणिक अवस्था होने पर पैदा होती है। सर्वप्रथम भूकम्प जिस स्थान पर उत्पन्न होता है, उसे **भूकम्प मूल** कहते हैं। भू कम्प लहरों का जहाँ प्रथम अनुभव होता है, उसे **अधिकेन्द्र** कहते हैं। भूकम्प केन्द्र के चतुर्दिक् समान भूकम्पीय तीव्रता की और खीचीं जाने वाली रेखा को **सम भूकम्पीय रेखा** कहते हैं।

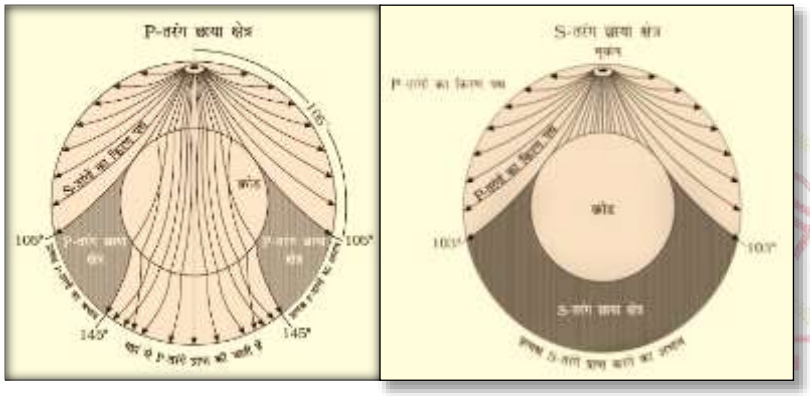

चित्र-1.4 भूकम्पीय छाया क्षेत्र

भूकम्प के कारण- भूकम्प के प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों ही कारण होते हैं। ज्वालामुखी क्रिया, भू-पटल में वलन एवं भ्रंसन, आन्तरिक गैसों का विस्तार, भू-सन्तुलन में अव्यवस्था, भू-पटल में सिकुड़न, भू-विवर्तनिक प्लेट एवं मानव जनित कारक भूकम्प के प्रमुख कारण हैं।

क्या आप जानते है-

- भूकम्प की विश्व में तीन प्रमुख श्रृंखलाएँ- प्रशान्त महासागर तटीय क्षेत्र, मध्य महाद्वीपीय क्षेत्र एवं मध्य अटलाण्टिक क्षेत्र हैं।
- भारत में हिमालयी क्षेत्र, कच्छ का रन, दिल्ली, महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर आदि भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र हैं।

भूकम्प की तीव्रता- भूकम्प की तीव्रता भूकम्पलेखी (सीस्मोग्राफी) नामक यंत्र से मापी जाती है। भूकम्प की तीव्रता मापन के लिए **रिक्टर पैमाना** का प्रयोग किया जाता है। यदि इसकी तीव्रता 2.0 है तो नुकसान की संभावना न के बराबर होती है। 6.0-7.0 तीव्रता वाले भूकम्प अत्यधिक शक्तिशाली होने के कारण नुकसान अधिक करते हैं।

भूकम्प से बचाव के उपाय- मानव ने अभी तक ऐसी तकनीकी का आविष्कार नहीं कर पाया है जिससे भूकम्प की पूर्व जानकारी सम्भव हो सके। प्राय: भूकम्प के आने से पूर्व यह देखा गया है कि जानवरों के

व्यवहारों में परिवर्तन, तालाब की मछलियों में उत्तेजना एवं सांपों का धरातल पर आना आदि भूकम्प के सामान्य लक्षण माने जाते हैं। भूकम्प के दौरान रसोई के काउण्टर या मेज के नीचे अथवा दीवार के अन्दरूनी कोने वाले स्थान, खुले मैदान अपेक्षात्मक सुरक्षित रहते हैं। भूकम्प के समय आग वाले स्थान, चिमनी, खिड़कियों, शीशे वाली वस्तुओं आदि से दूर रहें।

मुख्य स्थलाकृतियाँ- अपक्षय एवं अपरदन की क्रियाओं द्वारा दृश्य भूमि में निरन्तर विघटन होता रहता है। पृथिवी की सतह पर शैलों के टूटने की क्रिया को अपक्षय और जल, पवन एवं हिम जैसे कारकों द्वारा होने वाले क्षय को अपरदन कहते हैं। निक्षेपण की प्रक्रिया में पृथिवी पर अपरदित कण एकत्रित हो जाते हैं। इन दोनों ही प्रकियाओं में भू-पटल पर विभिन्न स्थालाकृतियों का निर्माण होता है।

भूतल का सन्तुलन (lsostasy)- भूतल का सन्तुलन से आशय पृथिवी की सतह पर स्थित पर्वतों, पठारों और समुद्रों के उनके भार के अनुसार भूपर्पटी के नीचे स्थित पिघली चट्टानों के ऊपर संतुलन बनाए रखने की अवस्था से है। पृथिवी की सतह पर नदियों, हिम-नदियों, वायूढ़, भौमजल एवं तटीय स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।

नदी निर्मित स्थलाकृतियाँ- नदियों द्वारा अपरदन, परिवहन एवं निक्षेपण की क्रिया से निर्मित स्थल आकृतियों को नदी निर्मित स्थलाकृतियाँ कहते है। जब नदियों को लम्बवत कटाव से वी (V) आकार की घाटी का निर्माण होता है तो उसे गार्ज एवं कैनियन कहते है। जब नदियों का जल उँचाई पर स्थित खड़े ढाल से वेग पूर्वक नीचे गिरता है, तो उससे जल प्रपात या झरने का निर्माण होता है। जब कठोर शैलों का ढाल नदी के साथ मिलता है तो क्षिप्रिका का निर्माण होता है। जब नदी के प्रवाह मार्ग में जल दाब एवं घर्षण की क्रिया होता है तो गर्तों का विकास होता है, जिसे जलगर्तिका कहते हैं। नदियों द्वारा पर्वतों के तल के पास जब नदियों द्वारा अर्द्ध वृत्ताकार रूप में निक्षेपण होता है तो उसे जलोढ़ पंख कहते हैं। नदी घाटियों के दोनों किनारों पर पुनर्युवन के कारण निर्मित सीढ़ीदार संरचना को नदी वेदिका कहा जाता है। नदी जब मैदानी भागों में आती है तो उसके बहाव में अनेक मोड़ आते हैं, इसे नदी विसर्प या नदी मोड़ कहते हैं। जब नदियों के विसर्प बड़े हो जाते हैं तो गोखुर झील या झाड़न झील का निर्माण होता है। नदियों द्वारा बहाकर लाई गई गाद व मिट्टी जमकर समतल मैदान का निर्माण करती हैं तो उसे बाढ़कृत मैदान कहा जाता है। जब नदी अपने साथ बहा कर लाए गए अवसाद को समुद्र तट पर छोड़ती है, तो त्रिभुजाकार आकृति का निर्माण होता है, उसे **डेल्टा** कहते हैं। भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के मुहाने पर स्थित सुन्दरवन का डेल्टा विश्व प्रसिद्ध है। जो नदियां अपनी जलधारा को तीव्र वेग से सीधे समुद्र में गिराती हैं, ऐसी नदियों के मुहाने को **ज्वारनद मुख** कहते हैं।

हिमनदीय स्थलाकृतियाँ- बर्फ की नदियों को हिमानी नदियाँ कहते हैं। हिमनदी अपने प्रवाह मार्ग में नीचे की कठोर चट्टानों या पृथिवी का अपरदन कर गहरे गड्ढों का निर्माण करते हैं। हिमानी के अपरदन और निक्षेपण द्वारा U आकार की घाटी, लटकती घाटी, हिमगह्वर, हिमोढ़ स्थलाकृतियों का निर्माण होता है ।

क्या आप जानते है-

- विश्व का सबसे ऊँचा जल प्रपात वेनेजुएला का एंजेल जल प्रपात है।
- भारत का सबसे ऊँचा जल प्रपात कर्नाटक राज्य में जोग जल प्रपात शरावती नदी पर है।

पवन निर्मित स्थलाकृतियाँ- नदियों और हिम नदियों की ही भाँति पवन भी अपरदन क्रिया का मुख्य कारक है। पवन मरुस्थलीय क्षेत्रों में धूल एवं बालू के कणों को उड़ा कर ले जाते हैं। जिसके कारण उनके द्वारा भौतिक अपरदन होता है। पवन के अपरदन और निक्षेपण से छत्रक शिला, इन्सेल वर्ग, बालू का टीला, स्तम्भ, यारडंग एवं ज्यूगेन नामक स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। चीन का विशाल लोएस का मैदान इसका उदाहरण है।

समुद्री लहर- समुद्री लहरों के अपरदन एवं निक्षेपण द्वारा विभिन्न तटीय स्थलाकृतियाँ का निर्माण होता है। समुद्री लहरों के लगातार तट से टकराने के कारण भू-शैलों में दरार पड़ जाती है और धीरे-धीरे ये दरारें चौड़ी होकर समुद्री गुफा का रूप ले लेती हैं। गुफाओं के बड़ी हो जाने पर उन्हें **तटीय मेहराब** का निर्माण होता है। समुद्री जल के ऊपर लगभग ऊर्ध्वाधर उठे हुए ऊंचे शैलीय तटों को **समुद्री भृगु** कहते हैं। समुद्री लहरें तटों पर अवसाद जमा कर **समुद्री पुलिन** का निर्माण करती हैं।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. महाद्वीपीय क्षेत्रों में भूपर्पटी का..... विस्तार है।

   अ. 35 कि.मी. ब. 64 कि.मी. स. 44 कि.मी. द. 24 कि.मी.

2. निम्न में से प्राथमिक शैल..... है।

   अ. अवसादी शैल ब. आग्नेय शैल स. कायान्तरित शैल द. बेसाल्ट

3. लावा के जमने से बने कीप के आकार के गड्ढे को ..... कहते हैं।

   अ. होल ब. सुरंग स. क्रेटर द. छिद्र

4. पृथिवी के अन्दर अचानक होने वाली हलचलों के कारण.....आते हैं।

   अ. ज्वार भाटा ब. ज्वालामुखी स. भूकम्प द. इनमें से कोई नहीं

5. समुद्री गुफाओं के बड़े हो जाने पर उन्हें.....कहते हैं।

   अ. हिमनद ब. तटीय मेहराब स. मेष शिला द. घाटी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पृथिवी के सबसे ऊपरी भाग को.....कहा जाता है। (मैन्टल/भू–पर्पटी)
2. आग्नेय शैलों को ..... शैलें भी कहा जाता है। (प्राथमिक/द्वितीयक)
3. केन्द्र में भूकम्प की तीव्रता .....होती है। (अधिक/कम)
4. लावा से बने कीपाकार गड्ढे को .....कहा जाता है। (क्रेटर/डेल्टा)

सत्य/असत्य बताइए–

1. पृथिवी के 29 प्रतिशत भाग पर जल है। (सत्य/असत्य)
2. पृथिवी का व्यास 12742 कि.मी. है। (सत्य/असत्य)
3. धरातल सभी जगह समान है। (सत्य/असत्य)
4. मृदा अपरदन, वायु द्वारा नहीं होता है। (सत्य/असत्य)

सही–जोड़ी मिलान कीजिए-

1. विसुवियस ज्वालामुखी	क. इटली
2. सक्रिय ज्वालामुखी	ख. कोहू सुल्तान
3. प्रसुप्त ज्वालामुखी	ग. स्ट्राम्बोली
4. शान्त ज्वालमुखी	घ. फ्यूजीयामा

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. ऋग्वेद में पृथिवी कितनी परतों का उल्लेख है ?
2. पृथिवी के ऊपरी भाग को क्या कहते हैं ?
3. पृथिवी की सबसे आन्तरिक परत को क्या कहते हैं ?
4. जलप्रपात कैसे बनता है ?
5. विवर किसे कहते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पृथिवी की संरचना के बारे में बताइए?
2. पृथिवी पर शैल कितने प्रकार की होती हैं, नामोल्लेख कीजिए।
3. हिमानी के अपरदन और निक्षेपण द्वारा किन आकृतियों का निर्माण होता है ?
4. 'श्याममयोस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम्' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. ज्वालामुखी के बारे में विस्तार से समझाइए ।

2. भूकम्प और उसकी उत्पत्ति के बारे में विस्तृत जानकारी दीजिए।

परियोजना कार्य–

1. छात्र विभिन्न स्थलाकृतियों को चित्रों के माध्यम से दर्शाईए।

अध्याय –2

हमारा पर्यावरण

आइये जानें- पर्यावरण , प्राकृतिक पर्यावरण, मानव निर्मित पर्यावरण, वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण

पर्यावरण- पर्यावरण फ्रेन्च भाषा के ENVIRONMENT शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। पर्यावरण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग डा. रघुवीर द्वारा **"कम्प्रिहेंसिव इंग्लिश-हिन्दी"** डिक्शनरी में किया गया। शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाए तो पर्यावरण संस्कृत भाषा के **परि** उपसर्ग के साथ **आवरण** शब्द की सन्धि से बना है, जिसका अर्थ चारों ओर से ढका हुआ है। दूसरी शब्द उत्पत्ति के अनुसार 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'अङ्' उपसर्ग पूर्वक 'वृञ्'-'वरणे' धातु को 'ल्युट' प्रत्यय करने से 'पर्यावरण' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ प्राकृतिक प्रकृति है। इन दोनों ही दृष्टियों से पर्यावरण शब्द व्यापक अर्थ देने वाला है। हमारे चारों ओर विद्यमान समस्त वस्तुएँ, परिस्थिति, शक्ति, जो हमारे क्रिया-कलापों को प्रभावित करने के साथ एक सीमा सुनिश्चित करती हैं, उसे **पर्यावरण** कहते हैं। पर्यावरण जीवन का मूल आधार है। इससे हमें हवा, पानी, भोज्यपदार्थ एवं आवास प्राप्त होता है।

चित्र-2.1 पर्यवरण क्षेत्र

पर्यावरण के घटक- प्रकृति में हवा, पानी, मिट्टी तथा खनिज के साथ-साथ जलवायु और सौर ऊर्जा शामिल है, जो प्रकृति के अजैविक भाग का निर्माण करते हैं। प्रकृति में जैविक भाग का निर्माण पौधों, जानवरों और रोगाणुओं से मिलकर हुआ है। पर्यावरण के ये जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्त:क्रिया करते हैं। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया एक तन्त्र में स्थापित होती है जिसे हम **पारिस्थितिकी तन्त्र** कहते हैं। भौतिक भूगोल की दृष्टि से पृथिवी पर स्थित पर्यावरण के दो प्रमुख घटक हैं- प्राकृतिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण ।

प्राकृतिक पर्यावरण- प्राकृतिक पर्यावरण में सभी सजीवों एवं निर्जीवों द्वारा पृथिवी या कुछ उसके क्षेत्र पर स्वाभाविक रूप से किये जाने वाले क्रिया-कलाप शामिल हैं। प्राकृतिक पर्यावरण शब्द का प्रयोग प्राय: निवास स्थान के पर्याय के रूप में किया जाता है। जल, वायु, भूमि, जीव–जन्तु, पेड़–पौधे आदि मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख भाग- स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायु मण्डल एवं जैव मण्डल हैं।

क. **स्थल मण्डल-** पृथिवी का वह भाग जिस पर पर्वत नदियाँ, पठार, मैदान आदि विभिन्न रूप में पाये जाते हैं, उसे **स्थल मण्डल** कहते है। यह पृथिवी के लगभग 29 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है। यह जीवमण्डल का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इसका निर्माण खनिजों तत्वों शैलों व मिट्टी से हुआ है।

ख. **जल मण्डल-** पृथिवी के लगभाग 71% भाग पर जल है, जिसे **जल मण्डल** कहते हैं। इसमें सागरों और महासागरों के अतिरिक्त नदियाँ, झील एवं भूमिगत जल भी शामिल है। पृथिवी की सतह पर उपलब्ध 97% जल खारा है, जो सागरों-महासागरों में स्थित है। शेष 3% जल पीने योग्य है, जिसका 2.4% जल ग्लेशियरों, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में जमा है। 0.6% जल नदियों, झीलों और तालाबों में स्थित है।

चित्र- 2.2 जल चक्र

जल मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं– कठोर और **मृदु** जल। जो जल साबुन के साथ झाग नहीं बनाता है, उसे **कठोर** जल कहते हैं। समुद्री जल कठोर जल होता है। जो जल साबुन के साथ झाग बनाता है, उसे **मृदु** जल या पेयजल कहते है। जल की कठोरता जल में उपस्थित मैग्नीशियम और कैल्शियम के लवणों के कारण होती है। जल शुद्धिकरण के प्रचलित एवं वैज्ञानिक उपायों में– निस्तारण या निथार विधि, फिल्टर विधि, उबालकर एवं क्लोरीनीकरण महत्त्वपूर्ण हैं। जल का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है जैसे- पेयजल, घरेलू उपयोग, कृषि, विद्युत उत्पादन आदि।

महासागरीय परिसंचरण- सागरों एवं महासगरों का जल सदैव गतिमान रहता है। इनकी गतियों को मुख्यत: तीन श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है- तरंगे, ज्वार-भाटा एवं महासागरीय धाराएँ

1. **तरंगे-** जब सागरों एवं महासगरों की सतह पर जल निरन्तर उठता और गिरता है तो, उसे **जल तरंग** कहते हैं। तेज वायु के चलने से उत्पन्न विशाल तरंगे विनाशकारी हो सकती हैं। सागरों के अन्दर उत्पन्न भूकम्पीय लहरों को **सुनामी** कहते हैं। यह लहरें सागरीय तटों पर भारी विनाश करती हैं। अब तक की सबसे बडी सुनामी की लहरों की ऊँचाई 150 मीटर तथा गति 700 किलोमीटर प्रतिघंटा मापी गई है। 26 दिसम्बर सन् 2004 को हिन्दमहासागर में उठी सुनामी तरंगें अति विनाशकारी थी, जो उस भूकम्प का परिणाम था, जिसका अधिकेन्द्र सुमात्रा की पश्चिमी सीमा में था। भारत में आन्ध्रप्रदेश के तटीय क्षेत्र, तमिलनाडु, केरल पुद्दुचेरी तथा अन्डमान और निकोबार द्वीप समूह सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।

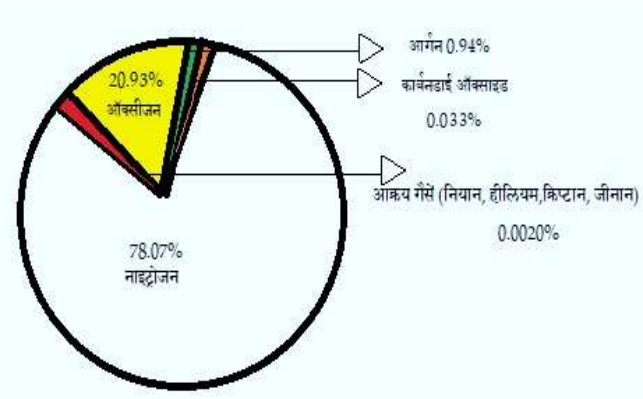

चित्र-2.3 वयुमण्डल का संघठन

2. **ज्वार-भाटा-** समुद्र में प्रतिदिन नियमित रूप से जल का लहरों के रूप में उठना एवं गिरना **ज्वार-भाटा** कहलाता है। समुद्री जल जब सर्वाधिक ऊँचाई पर उठ कर तट के बड़े भाग को डुबोता है तो उसे **ज्वार** कहते है। यही जल जब पुन: अपनी सीमा में चला जाता है तो **भाटा** कहलाता है। पूर्णिमा, अमावस्या और ग्रहण काल में समुद्र में अधिक ऊँचाई वाले ज्वार आते हैं।
3. **महासागरीय धाराएँ-** सागरीय एवं महासागरीय सतह पर नियमित प्रवाहित गर्म अथवा ठण्डी जल धाराओं को महासागरीय धाराएँ कहा जाता है। ये धाराएँ किसी क्षेत्र विशेष के तापमान को प्रभावित करती है। सामान्यत: भूमध्य रेखा के निकट गर्म महासागरीय धाराएँ पैदा होकर ध्रुवों की ओर बहती हैं, जिन्हें **गल्फस्ट्रीम** या **गर्म जलधारा** कहते हैं। उच्च अक्षाशों से निम्न अक्षाशों की ओर बहने वाली जल धाराओं को **ठण्डी या शीत जलधारा** कहते हैं। लेब्राडोर शीत महासागरीय धाराएँ है। जिन स्थानों पर गर्म एवं शीत जलधाराएँ मिलती है वहाँ कोहरे वाला मौसम होता है, जिसके कारण नौका संचालन बाधित होता है। ऐसा क्षेत्र मत्स्यन के लिए उपयुक्त होता है। जापान के आस-पास और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

ग. **वायुमण्डल-** पृथिवी के चारों ओर जो गैसीय आवरण है, उसे **वायुमण्डल** कहा जाता है। वायुमण्डल के निर्माण में नाइट्रोजन व ऑक्सीजन गैसों का प्रमुख योगदान है। वायु मण्डल में गैसों के

अतिरिक्त जल वाष्प व धूल के कण भी मौजूद रहते हैं। शुद्ध और शुष्क वायु के रूप में नाइट्रोजन (78%), ऑक्सीजन (21%), और आर्गन (0.9%) के साथ अन्य गैसें जैसे- कार्बन डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन, हीलियम और ओजोन भी वायुमण्डल में विद्यमान रहती हैं। ये सभी गैसें जीवधारियों के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए पादपों को अपने जीवन के लिए नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। मानव तथा पशु वायु से ऑक्सीजन प्राप्त कर कार्बन डाईआक्साइड छोड़ते हैं। हरे पादप अपने भोज्य के रूप में वायुमण्डल से कार्बन डाईआक्साइड ग्रहण कर प्रकाश संश्लेषण क्रिया के द्वारा ऑक्सीजन छोड़ते हैं। जिसके कारण यह संतुलन बना रहता है। जब हम कोयला तथा खनिज तेल जैसे ईंधनों को जलाते हैं तो भारी मात्रा में कार्बनडाइ ऑक्साइड गैस निकलती है। जिसके कारण पृथिवी पर मौसम तथा जलवायु प्रभावित होता है। आज के भौतिक वातावरण ने वायु को प्रदूषित कर दिया है जिससे मानव जीवन के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें वायु में मिलकर अनेक प्रकार की बीमारियों को जन्म दे रही हैं। इसका ताजा उदाहरण है, भयावह कोरोना वैश्विक महामारी रोग हैं। इसमें सबसे ज्यादा ऑक्सीजन की आवश्यकता महसूस हुई थी।

वायुमण्डल की संरचना- पृथिवी की सतह से वायुमण्डल को पाँच परतों में विभाजित किया जाता है- क्षोभमण्डल, समतापमण्डल, मध्यमण्डल, बाह्यमण्डल, और बहिर्मण्डल।

चित्र- 2.4 वयुमण्डल की परतें

1. क्षोभ मण्डल- इस परत की औसत ऊँचाई 14 से 18 कि.मी. है। मौसम सम्बन्धी घटनाएँ जैसे- श्वसन, कोहरा, वर्षा, ओलावृष्टि आदि इस परत में होती हैं।

2. समताप मण्डल- वायुमण्डल का 16 से 50 कि.मी. तक विस्तृत क्षेत्र समताप मण्डल कहलाता है। इस मण्डल में ओजोन गैस की परत होती है, जो सूर्य से आने वाली हानिकारक विकिरणों का शोषण कर हमारी रक्षा करती है। इस परत में मौसम सम्बन्धी परिवर्तन नहीं होते हैं इसलिए यह परत वायुयानों की उड़ान के लिए उपयुक्त है।

3. **मध्य मण्डल-** समताप मण्डल के ऊपर 80 किलोमीटर तक की ऊँचाई तक यह परत फैली हुई है। अन्तरिक्ष से आने वाले उल्कापिंड इस परत में जल कर नष्ट हो जाते हैं।

4. **बाह्य मण्डल-** यह परत 80 से 400 किलोमीटर तक विस्तृत है। इस परत का एक भाग आयन मण्डल कहलाता है। सञ्चार के लिए यह परत बहुत उपयोगी है। पृथिवी से प्रसारित रेडियो तरंगें आयनमण्डल के द्वारा पुन: पृथिवी पर परावर्तित कर दी जाती हैं।

5. **बहिर्मण्डल-** यह परत वायुमण्डल की सबसे उच्च परत है। यहाँ पर वायु बहुत विरल रूप में मिलती है तथा यहाँ पर हीलियम एवं हाइड्रोजन गैस प्रचुर मात्रा में मिलती है।

मौसम और जलवायु- मौसम से आशय वायुमण्डल में नित्य प्रतिदिन के स्थिति से है। उदाहरण के लिए आर्द्र, शीत, गर्म और शुष्क मौसम आदि। लम्बे समय तक किसी स्थान का औसत मौसम उस स्थान की **जलवायु** कहलाता है। वायु में उपस्थित ताप एवं शीत के परिणाम को **तापमान** कहते हैं। वायुमण्डल के तापमान में परिवर्तन दिन-रात और ऋतुओं के अनुसार होता है। तापमान के वितरण को प्रभावित करने वाला कारक आतपन है। **आतपन** से आशय सूर्य से निकलने वाली उर्जा या सूर्यातप से है, जिसे पृथिवी रोक लेती है। आतपन की मात्रा भूमध्यरेखा से ध्रुवों की ओर क्रमश: घटती जाती है। तापमान को मापने के लिए **तापमापी यन्त्र** का प्रयोग किया जाता है।

क्या आप जानते है-

- तापमान मापन की मानक इकाई डिग्री सेल्सियस है। इसका आविष्कार एंडर्स सेल्सियस ने किया था।
- चन्द्रमा पर वायु नहीं होने के कारण वायुदाब नहीं होता है।
- पवनों का नाम उनके बहने की दिशा के नाम पर निर्धारित होता है। जैसे- पूर्वा और पछुआ पवनें।

वायुदाब- पृथिवी की सतह पर वायु द्वारा लगाये गए दबाव को **वायुदाब** कहते हैं। वायु हमारे शरीर पर भी उच्चदाब के साथ बल लगाती है। जिसका अनुभव प्राय: इसलिए नहीं हो पाता, क्योंकि यह वायुदाब हमारे ऊपर सभी दिशाओं से लगता है और

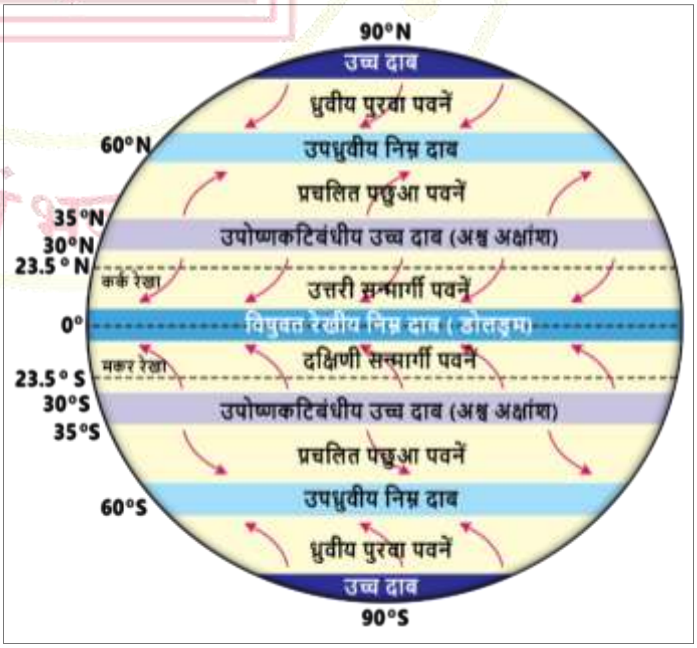

चित्र- 2.5 वयुदाब पेटियाँ

हमारा शरीर इसके विपरीत बल लगाता है। जब हम समुद्र तट पर वायुदाब सर्वाधिक होता है तथा जैसे-जैसे हम वायुमण्डल में ऊपर की ओर जाते हैं तो वायुदाब कम होता जाता है। वायुदाब का क्षैतिज वितरण किसी स्थान पर रहने वाली वायु के ताप को प्रभावित करती है। जब अधिक ताप वाले क्षेत्रों में वायु गर्म होकर ऊपर की ओर उठती है तो निम्न दाब क्षेत्र बनता है। इस कारण आकाश बादल युक्त एवं मौसम नम होता है। निम्न तापमान वाले क्षेत्र में वायु ठण्डी होने के कारण भारी होकर उच्च दाब क्षेत्र बनाती है। जिसके कारण आकाश स्वच्छ होता है। वायु सदैव उच्च से निम्न दाब क्षेत्र की ओर प्रवाहित होती है। वायुदाब को मापने के लिए **वायुदाबमापी यन्त्र** का प्रयोग करते है।

पवन- उच्च से निम्न दाब क्षेत्र की ओर गतिशील वायु को **पवन** कहते हैं। पवन को तीन श्रेणीयों में विभाजित किया जा सकता है- स्थाई पवन, स्थानीय पवन और मौसमी पवन।

1. **स्थाई पवन-** ये पवन वर्ष भर उत्तरी गोलार्ध में उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्वी दिशा में बहती है। इन्हें **पूर्वा या व्यापारिक पवन** भी कहते हैं।
2. **स्थानीय पवन-** किसी स्थान विशेष में वर्ष भर या दिन के समय विशेष में चलने वाली वायु को स्थानीय पवन कहते हैं। चिनुक, सिरोका, फोहन, लू, हिम झंझावात आदि स्थानीय पवन के नाम हैं।
3. **मौसमी पवन-** मौसम के अनुसार प्रवाहित होने वाली पवन को मौसमी पवन कहते हैं। ये पवन ग्रीष्मकाल में समुद्र से स्थल की ओर तथा शीतकाल में स्थल से समुद्र की ओर चलती है। मानसूनी पवनें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, अरबसागर , बंगाल की खड़ी सहित दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में बहती हैं।

चक्रवात- निम्न वायुमण्डलीय दवाब के चारों ओर तेज गर्म हवा को चक्रवात कहते हैं। इन्हें दक्षिणी गोलार्ध में **चक्रवात** तथा उत्तरी गोलार्ध में **हरीकेन या टाइफून** कहते हैं। चक्रवात घड़ी की सुई की दिशा में तथा हरीकेन या टाइफून घड़ी की सुई के विपरीत दिशा में चलते हैं। भारत के पूर्वी समुद्री तट पर स्थित राज्यों में सदैव चक्रवातों का खतरा बना रहता है। अक्टूबर 1999 में ओडिसा में आये महाचक्रवात में 260 कि.मी. की गति से 36 घण्टे से भी अधिक समय तक तेज हवाएँ चलती रहीं जिसके कारण भुवनेश्वर, कटक, पुरी समेत 28 तटीय नगर बुरी तरह से प्रभावित हुए थे।

आर्द्रता- वायु द्वारा जल और वाष्प को धारण करने की मात्रा को आर्द्रता कहते हैं। इसे प्रति ग्राम घनमीटर में मापा जाता है। गर्म वायु अपेक्षाकृत शीतल वायु के जल वाष्प अधिक मात्रा में और अधिक

समय तक धारण करती है। जब जलवाष्प ऊपर की ओर उठता है तब यह संघनित और ठण्डा होकर जल की बूंदों का निर्माण करता है। इन संग्रहित जल बून्दों को **बादल** कहते हैं। जब ये जल की बूंदें भारी होकर वायु में तैर नहीं पातीं तब वर्षा के रूप में भूमि पर गिरती हैं। अधिकांश भूमिगत जल वर्षा से ही प्राप्त होता है। पौधे भूमिगत जल से भी पोषित होते और वर्षा जल को संरक्षित करने में मदद करते हैं। वर्षा तीन प्रकार की होती है- संवहनीय वर्षा, पर्वतीय वर्षा एवं चक्रवाती वर्षा।

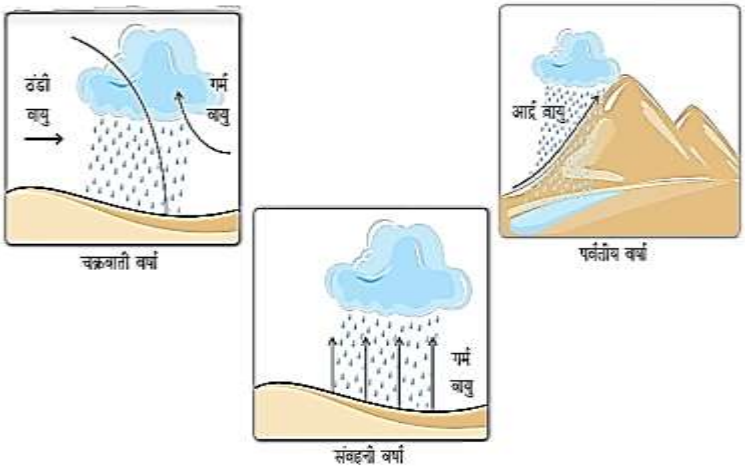

चित्र- 2.6- वर्षा के प्रकार

जैव मण्डल- जैव मण्डल पृथिवी की वह संकरी पट्टी है जिसमें सभी प्रकार का जीवन विद्यमान है। इसमें पृथिवी के हर उस अंग का समावेश है, जहाँ जीवन पनपता है। इसका विस्तार स्थल, जल एवं वायु मण्डल तक होता है। जैव मण्डल में समस्त जन्तु व पादप जगत सम्मिलित हैं।

मानव निर्मित पर्यावरण- मानव द्वारा कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। इसके अन्तर्गत विद्युत एवं मशीनी उपकरण, भवन, पार्क एवं समस्त भौतिक वस्तुएं आती हैं। मानव ने पर्यावरण को दूषित किया है और आज संरक्षण के उपाय भी खोज रहा है। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण का ज्ञान मानव जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान अति आवश्यक है। एक ओर जहाँ विज्ञान एवं तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में नये-नये आविष्कार हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर मानव परिवेश भी उसी गति से प्रभावित हो रहा है। आने वाली पीढ़ी को पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों का ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण का ज्ञान मानवीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है। आज मानव ने तकनीक के प्रयोग द्वारा अपने भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़-छाड़ की है। परिणामत: प्राकृतिक पर्यावरण का सन्तुलन बड़े स्तर प्रभावित हुआ है। यहाँ तक की प्राकृतिक व्यवस्था के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है, जो **पर्यावरणीय समस्याएँ** या **प्रदुषण** कहलाती हैं। पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे- जल, वायु, ध्वनि, मृदा आदि प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन हैं, जो मनुष्य को अपनी जीवन शैली के बारे में पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबन्धन की चर्चा की

जा रही है। मनुष्य वैज्ञानिक तकनीकी द्वारा किये गये परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है? आर्थिक और राजनैतिक हितों के टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्य अपने पर्यावरण के प्रति कितना जागरुक है? यह आज के ज्वलन्त प्रश्न है।

वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण- पर्यावरण हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्त्वों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई हैं। मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से उस पर्यावरण को भी प्रभावित करता हैं। अत: जीवधारी और पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध भी होता है। पर्यावरण के जैविक घटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर सभी जीव-जन्तु और पेड़-पौधे शामिल हैं। हमारे ऋषियों ने सर्वप्रथम पर्यावरण पर चिन्तन करते हुए सृष्टि के आदि रूप को जिस अवस्था में देखा उसका वर्णन वैदिक वाङ्मय में किया है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि **नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं...** (10/129/1–7) अर्थात् सृष्टि के आरम्भ न कोई सत् था, न कोई असत्...। सृष्टि विकास क्रम का उल्लेख करते हुए हमारे मनीषियों ने बताया कि **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्....।** (ऋ. 10/121/1) अर्थात् सर्वप्रथम जीवों का स्वामीभूत हिरण्य गर्भ प्रकट हुआ और उसी से अविच्छिन्न सृष्टि का विकास हुआ।

वेदों में पर्यावरण संरक्षण- आज पृथिवी पर बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिक विकास मॉडल एवं बदलती भौतिक जीवन शैली दिनों-दिन पृथिवी पर विनाश को आमन्त्रित कर रही है, जिसके कारण पृथिवी और पृथिवी के प्राणि जगत पर संकट के बादल छाये हुए हैं। वन एवं उपवनों को विकास के नाम पर नष्ट किया जा रहा है। विभिन्न पशु-पक्षियों की संख्या निरन्तर न्यून से न्यूनतम होती जा रही है। जीवन प्रदाता जल का प्रवाह एवं नदियाँ सिकुड़ती जा रही है। वैदिक ऋषियों द्वारा समय-समय पर पर्यावरण और उसके संरक्षण के प्रति चिन्तन अभिव्यक्त कर मानव जाति को सचेत कर अपने द्वारा उत्तरदायित्त्वों का निर्वहन किया है। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से पृथिवी और पृथिवी पर जीवों के उपयुक्त पर्यावरण का निर्माण महा-अग्निकाण्ड (बिग बैंग) का परिणाम है। प्रकृति कण, प्रतिकण एवं विकिरण के रूप में सदैव विद्यमान रहती है। वैदिक सिद्धान्त में भी प्रकृति के तीन मूल रूप बताये गये हैं- **त्रय: किण्वति भुवनस्य रेत** (ऋग्वेद 7/33/7)। ये तीनों तत्त्व क्रमश: वरूण, मित्र और अर्यमा हैं तथा इनकी संयुक्त सत्ता जो अनादि और अखण्ड है को, **अदिति** कहा गया है।

माता पृथिवी तथा पिता आकाश- वैदिक वाङ्मय में पृथिवी को माता और आकाश को पिता कहा गया है। इनके अतिरिक्त नदियों, वनस्पतियों एवं सम्पूर्ण प्रकृति को माता, देवी एवं देवरूप बताया गया है। इनका शान्त रूप हमें आनन्द प्रदान करता है। इसके विपरीत इनका अशान्त रूप हमें भी अशान्त करता

है। अतः इनकी शान्ति के लिए प्रार्थना की गई है– **द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः। शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥** (यजुर्वेद 36-17) अर्थात् जल शान्ति दें, औषधियां एवं वनस्पतियां शान्ति दें, प्रकृति की शक्तियां, विश्वदेव, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड शान्ति दें। चारों ओर शान्ति ही शान्ति हो। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में उल्लेख हुआ है कि- **यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादतम्। सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥** (12.1.7) अर्थात् देवता जिस भूमि की रक्षा तथा उपासना करते हैं, वह मातृभूमि हमें मधु (मधुरता) से सम्पन्न करें। इसी सूक्त के आठवें मन्त्र में कहा गया है कि- **यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः। यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः। सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥** (12.1.8) अर्थात् हे पृथिवी माता! आपके हिमाच्छादित पर्वत और वन शत्रु रहित हों। आपके पोषक तत्त्व हमें प्रतिष्ठा दें। यह पृथिवी सूक्त पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। ब्लूम फील्ड ने इसे विश्व की सर्वश्रेष्ठ कविता कहा है।

पर्यावरण में मधुमयता- पर्यावरण के मधुमयता वैदिक मनीषियों का सहज चिन्तन है। ऋग्वेद की ऋचा में प्रार्थना की गई है कि- **मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।** (1.90.6, 7, 8) अर्थात् वायु मधुमय हों, नदियों का जल मधुर हो, औषधियां एवं वनस्पतियां मधुर हो, पृथिवी की धूलि मधुर हों, पिता आकाश मधुर हों, सूर्य की किरणें भी मधुर हों। गायें मधुर दुग्ध दें। वृहदारण्यकोपनिषद में आया है कि- **इयं पृथ्वि सर्वेषां भूतानां मध्वस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु।** अर्थात् यह पृथिवी सभी भूतों (मूल तत्त्वों) का मधु है और सभी मूल तत्त्व इस पृथिवी के मधु हैं।

जल- पर्यावरण का दूसरा प्रमुख घटक जल है। ऋग्वेद में जल को जीवों का जनन करने वाली माँ कहा गया- **मातृतमा विषस्य स्थातुर्जगतो जानित्री।** (अथर्ववेद 6/50/7) अर्थात् जल ही समस्त जगत् के सृजन एवं जीवन का आधार है। आधुनिक विज्ञान भी जीवों की उत्पत्ति जल से ही मानता है। भारत के सभी तीर्थों का उद्गम पवित्र जलराशियों के तट पर ही हुआ। ऋग्वेद काल से ही जल संस्कृति का अविरल प्रवाह है। जल आचमनीय, पवित्र, प्राण और पोषण करने वाला था। इसी जल संस्कृति और परम्परा का विकास अर्थववेद में भी हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में आया है कि **आपो वै प्राणः** अर्थात् जल ही प्राण है। आगे कहा गया कि– **यद् देवा अदः सलिले सुंरब्धा अतिष्ठित।** (10.72.6) अर्थात् सभी देव

जल में ही प्रतिष्ठित हैं। देवों तक अपनी प्रार्थना पहुँचाने का साधन जल ही है। वे ही पितरों तक पिण्डदान पहुँचाते है। इसीलिए स्मृति ग्रन्थों में जल संरक्षण को महान पुण्य कर्म बताया गया है। वैदिक संहिताओं में जल को महौषधि, दुरित एवं पाप संशोधक कहकर पर्यावरणीय महत्त्व को दर्शाया गया है। पर्यावरणीय दृष्टि से जल के पर्जन्य (बादल) रूप को महत्त्वपूर्ण बताया गया है। वैदिकवाङ्मय में कुशादि औषधियों से भी जल शोधन की बात कही गई है।

जल का महत्त्व- जल हमारे शरीर की समस्त कमियों को पूर्ण करता है। **शं योरभि स्त्रवन्तु नः** (सामवेद. 33) जल में सभी प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु के पोषण, संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए चारों ओर **कलल रस** होता है, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में चारों ओर रसज् (कोहरा) रूप में स्थित जल विद्यमान रहता है। इसीलिए वैदिक वाङ्मय में जल की अति महत्त्वपूर्ण उपादेयता को समझकर अर्ण:, सलिलम्, आप:, तोयम्, वारि आदि नाम गिनाये गये हैं। अथर्ववेद के आपो देवता सूक्त में जल के नामों का निर्वचन है। वेदों में जल का नामकरण जल के गुणों के आधार पर किया गया है। जल स्रोतों की दृष्टि से वर्षा जल को ऐन्द्र और दिव्य कहा गया है। गङ्गा आदि नदियों को नदी तथा सिन्धु आदि को नद कहा है। इसी प्रकार समुद्र, झील, कुआँ- कूप और वापी, तालाब- पुष्करणी, पुष्कर तथा सर, निर्झर, औदिभद (सोते का जल), विकरि- बालू के नीचे का जल, क्यारी- नहर का जल, पल्वल- गड्ढे का जल। ऋग्वेद में प्याऊ को **प्रपा** कहा गया है। आचार्य सायण ने अपने भाष्य में जल के 16 नामों का उल्लेख किया है। प्राचीन मनीषियों ने जल निर्माण की प्रक्रिया के सन्दर्भ में बताया है कि जीवन दाता मित्र (प्राण) तथा वरूण (उदान) वृष्टि का सृजन कर पृथिवी एवं द्युलोक को धारण करते हैं।

आज केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा जल शोधन एवं संरक्षण विषयक अनेक परियोजनायें- जल स्बावलम्वन योजना, नदी जोड़ो योजना, नमामि गंगे परियोजना के अतिरिक्त बाँध व तालाबों का निर्माण, वाटर हार्वेस्टिंग द्वारा जल को संग्रहित एवं संरक्षित किया जा रहा है ।

वायु- वायु भी पर्यावरण का एक प्रमुख घटक है। जड़-चेतन सभी जीवों का प्राण वायु ही है। **आत्मा देवानाम्** अर्थात् देवों का प्राण वायु है। ऋग्वेद की ऋचा द्रष्टव्य है- **नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि तन्मामवतु।** अर्थात् वायु को नमस्कार है। आप प्रत्यक्ष ब्रह्म है। मैं तुमको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। आप हमारी रक्षा करें। यही मन्त्र यजुर्वेद- 36.9, अथर्ववेद के 19.9.6 तथा तैत्तिरीय उपनिषद में भी आया है। **वार्युथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।** अर्थात् वायु ही सभी भुवनों में प्रवेश करता हुआ प्रत्येक रूप में प्रतिरूप होता है। सृष्टि के जड़-चेतन जीवों में प्राण (वायु) की

सत्ता होती है। पञ्चतत्त्वों से रचित शरीर जब मृत्यु को प्राप्त करता है, तो सभी तत्त्व अपने-अपने मूल रूप में समाहित हो जाते हैं। **अप्स रेतः शिश्रिये विश्वरूपम्** (सामवेद- 1844) अर्थात् वायु हमारी आयु की वृद्धि करता है। **प्र न आयूंषि तारिषत्** (सामवेद-1840) **स नो जीवातवे कृधि** (सामवेद-1841) **वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे** (ऋग्वेद- 10.186.1)। अर्थात् वायु हमारे लिए औषधि के रूप में है। हृदय के लिए प्राण सदृश है।

वायु शोधन विषयक वैदिक दृष्टि- वायु पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति क्रम में दूसरा तत्त्व है। यह अन्य तत्त्वों से अधिक सूक्ष्म होने के कारण अधिक शक्तिशाली भी है। **श्वसन: स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागति:। पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगा:। समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणा:। नभस्वद्वातपवन-पवमानप्रभञ्जना:।** (**अमरकोष** 1/122-125) अर्थात् श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वा, सदागत, पृषदश्व, गन्धवह, गन्धवाह, अनिल, आशुग, समीर, मारुत, मरूत, जगत्प्राण, समीरण, नभस्वात, वात, पवन, पवमान, प्रभञ्जन । वायु के 20 नामों का उल्लेख है। इसकी पहचान स्पर्श गुण के द्वारा की जाती है। जीवाणु शास्त्रियों के एक प्रयोग द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि, नित्य अग्निहोत्र से 8 हजार घन फीट वायु प्रदूषण रहित होने के साथ 96% कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। वायु शोधन के लिए लाक्षा, हरिद्रा, अतीस, हरीतकी, अगर, जगर, तगर, नागर मोथा, हरेणुका आदि द्रव्यों को जलाने से उत्पन्न धुएँ का प्रयोग किया जाना चाहिए। सुश्रत संहिता 5/68–73, में जटामांसी, हरेणु, त्रिफला आदि को कूट-पीस कर शहद के साथ लेप बनाकर नगाड़े या भेरि पर लगाकर बजाने से विष नष्ट हो जाता है।

प्राचीन काल से ही पर्यावरण, पञ्चतत्त्व और सभी जीवों के मध्य विकसित सृष्टि विषयक गहरा, भावपूर्ण अवबोध भारतीय ज्ञान परम्परा में रहा है। हम सब वैदिक संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं, बावजूद इसके पाश्चात्त्य सभ्यता के प्रभाव में आकर हम देव रूपी पृथिवी, जल, वायु एवं अन्तरिक्ष को प्रदूषित कर रहे हैं। जबकी इनके संरक्षण के वैदिक परम्परा के सूत्र आज भी लोक रीति के रूप में प्रचलित हैं, जो पर्यावरण के शुद्धीकरण और संरक्षण के लिए विशेष उपयोगी हैं। उदाहरणार्थ- तुलसी, पीपल एवं वटवृक्षों की पूजा, वृक्षारोपण को अति पुण्य का कार्य बताया गया है। जबकि वृक्षों को काटने एवं तोड़ने को महान पाप कर्म बताया गया है। इसी क्रम में नदियों में धातु के सिक्के डालना एवं दीप दान करना, यज्ञ-हवन आदि कर्मकाण्ड भारतीय जनों का प्रकृति प्रेम एवं वातायन शुद्धि एवं संरक्षण को ही दर्शाता है। आज पाश्चात्त्य वैज्ञानिक भी पर्यावरण चिन्तन की दृष्टि से इन्हें उपयोगी एवं वैज्ञानिक सत्य के रूप में स्वीकार किया है।

इस प्रकार वैदिक संस्कृति में जल व वायु शुद्धि के लिए वनौषधियों और यज्ञ को उपयोगी बताया गया है। आज जल एवं वायु शोधन एवं संरक्षण के लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक मात्रा में

वृक्षारोपण किया जाए, जन जागरुकता अभियान चलाए जाए, फैक्ट्रियों से निकलने वाले धुँए पर नियन्त्रण लगाया जाएं, साथ ही वेद विहित उपायों यथा यज्ञ आदि के आयोजनों पर बल दिया जाए, ताकि भावी पीढ़ी को हम एक स्वस्थ वातावरण प्रदान कर सकें।

वैश्विक स्तर पर 1972 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) बना। 1992 में पर्यावरण और विकास विषय पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में 'कार्यक्रम–21' जारी किया गया, जो पर्यावरण–प्रबन्धन से जुड़ा मसला था। सन् 2000 में अर्थचार्टर कमीशन की त्रिदिवसीय बैठक के तीसरे दिन भारतीय प्रतिनिधियों ने अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त की चर्चा की और स्पष्ट किया वेदों में पर्यावरण संरक्षण के सूत्र भरे पड़े हैं।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न –

1. पर्यावरण को.....भागों में बाँटा गया है।

   अ. एक ब. दो स. तीन द. चार

2. पृथिवी सम्मेलन ..... सम्बन्धित है।

   अ. पर्यावरण संरक्षण से ब. विकास से

   स. पृथिवी की उर्वरता बढ़ाने से द. जनसंख्या से

3. जो जल साबुन के साथ झाग बनाता है उसे ..... हैं।

   अ. कठोर जल ब. मृदु जल स. प्रदूषित जल द. क्षारीय जल

4. पृथिवी पर .....की मात्रा लगातार घटती जा रही है।

   अ. नदी जल ब. भूमिगत जल स. समुद्र जल द. वर्षा जल

5. वायुमण्डल में ऑक्सीजन की मात्रा.....है।

   अ. 15% ब. 20% स. 20.09% द. 20.93%

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. जीव, पेड़ पौधें.....पर्यावरण में शमिल है। (प्रकृतिक/मानव निर्मित)
2. पृथिवी को .....का दर्जा दिया गया है। (माता/पिता)
3. देवों का प्राण .....को कहा जाता है। (जल/वायु)
4. जीवन का आधार .....है। (जल व वायु/धन-सम्पत्ती)
5. पृथिवी पर मात्र .....प्रतिशत पानी है। (28%/3%)

सत्य/असत्य बताइए –

1. वायु, जल, खनिज आदि पर्यावरण के घटक है। (सत्य/असत्य)

2. पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर ढका हुआ। (सत्य/असत्य)

3. कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण को प्रकृतिक पर्यावरण कहा जाता है। (सत्य/असत्य)

4. समुद्री जल मृदु होता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. जैविक	क. वायु, जल, मृदा, खनिज
2. अजैविक	ख. जैविक व अजैविक को संयुक्त रूप से
3. परिस्थितिक तन्त्र	ग. पेड़-पौधे, चूहा, बन्दर, खरगोश
4. आर्गन	घ. 78%
5. कार्बन डाई आक्साईड	ङ. 21%

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पर्यावरण किसे कहते हैं ?
2. पर्यावरण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया ?
3. पृथिवी के कितने प्रतिशत भाग पर जल है ?
4. कठोर जल किसे कहते हैं ?
5. सभी जीवधारी प्राणवायु के रूप में कौन सी गैस ग्रहण करते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. अजैविक संघटकों के नाम लिखिए ?
2. मानव पर्यावरण से आप क्या समझते हैं ?
3. प्राकृतिक पर्यावरण में कौन–कौन से घटक होते हैं ?
4. ऑक्सीजन की उपयोगिता लिखिए।
5. जल प्रदूषण के महत्व को समझाइए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. पर्यावरण के अर्थ का उल्लेख करते हुए उसके प्रमुख घटकों की विवेचना कीजिए?
2. पर्यावरण एवं उसके संरक्षण के सन्दर्भ में वैदिक दृष्टिकोण का उललेख कीजिए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र प्रमुख वायुदाब पेटीका को चित्र के माध्यम से दर्शाइए।

अध्याय –3

प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं जैव विविधता

आइये जानें- वनस्पति का अर्थ व प्रकार, वैदिक वाङ्मय में वनस्पतियाँ, जैव विविधता।

प्राकृतिक वनस्पति का अर्थ- वे पौधे जो बिना मनुष्य की सहायता के उपजते हैं, उन्हें **प्राकृतिक वनस्पति** कहा जाता है। उपयुक्त तापमान एवं परिपूर्ण वर्षा वाले क्षेत्रों में जो वृक्ष उगते हैं, इनके आधार पर सघन एवं खुले वन विकसित होते हैं। कुछ वृक्ष बहुत सी शाखाओं तथा पत्तियों वाले होते हैं, जैसे- नीम, आम, बरगद, पीपल आदि होते हैं। कुछ वृक्ष ऐसे भी हैं जिनमें पत्तियों की मात्रा बहुत कम होती है, जैसे- नारियल, घास, झाड़ियां आदि। वे प्राकृतिक वनस्पतियाँ जिन पर लम्बे समय तक मानवीय प्रभाव नहीं पड़ता वे **अक्षत** वनस्पतियाँ कहलाती है। जलवायु की भिन्नता के कारण वनस्पतियों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है- वन, घासस्थल और कटीली झाडियाँ।

वनों का महत्त्व

- वन एक नवीकरण योग्य संसाधन हैं।
- वन, स्थानीय जलवायु, मृदा अपरदन, पवन, तापमान तथा नदियों की धारा को नियन्त्रित कर वर्षा में भी सहायक होते है।
- वन, विविध उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करते है।
- वन, अनेक जीवों के आवास और मानव को जीविका प्रदान करते हैं।
- वनों से मृदा को जीवाश्म मिलता है।
- पेड़-पौधे वातावरण से कार्बन-डाई ऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं।
- वनों से हमें दैनिक उपयोगी एवं औषधीय सामग्री जैसे– ईंधन, लकड़ी, चारा, जड़ी-बूटियां, लाख, शहद, गोन्द इत्यादि प्राप्त होते हैं।

वन– धरती का वह भाग जो सघन रूप से वृक्षों से घिरा हुआ है, वन (Forest) कहलाते हैं। वन पृथिवी पर पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। पृथिवी का अधिकांश जैविक पारिस्थितिकी तंत्र वनों पर आश्रित है। वनों में अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ और पेड़-पौधों के साथ औषधीय वनस्पती की प्राप्त होती है। अनेकों जीव जन्तुओं का आवास भी वन है। वनों में अनेक आदिवासी समुदाय निवास करते है तथा अनेक प्रकार के प्राकृतिक संसाधन हमें वनों से प्राप्त होते हैं। जलवायु की विविधता की दृष्टि से सामान्यत: वनों की श्रेणियाँ इस प्रकार है-

1. **उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन-** ये वन भूमध्य रेखा एवं उष्ण कटिबन्धों में पाये जाते है। ये क्षेत्र गर्म होने के साथ-साथ वर्ष भर अत्यधिक वर्षा वाले होते है। इन वन क्षेत्रों के पेड़-पौधों के पत्ते प्रतिवर्ष नियमित रूप से नहीं झड़ते हैं, इसलिए इन्हें सदाबहार वन कहते हैं। इन वनों में सफेद देवदारु, वेंत,

बाँस, चपलास, गर्जन, आबनूस, महोगनी आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। ब्राजील के उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन इतने विशाल है कि इन्हें धरती का फेफड़ा तक कहा जाता है। विश्व का सबसे बडा सर्प एनाकोण्डा अमेजन वन क्षेत्रों में पाया जाता है।

चित्र-3.1 उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन

2. **उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन-** जल को संरक्षित करने के लिए शुष्क मौसम में इन वनों के वृक्षों की पत्तियाँ गिर जाती है। अत: इन्हें **उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन या मानसूनी वन** कहते हैं। ये वन भारत, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया एवं मध्य अमेरिका के बड़े भू-भाग में पाये जाते हैं। इन वनों में सागवान, साल, सखुआ, खैर आदि वृक्ष के पाये जाते हैं, जो आर्थिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण हैं। इन वन क्षेत्रों में बाघ, शेर, हाथी, गोल्डन लंगूर, एवं बन्दर आदि पाये जाते हैं।

चित्र- 3.2 उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन

3. **शीतोष्ण सदाबहार वन-** ये वन मध्य अक्षांश के तटीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं। सामान्यत: महाद्वीपों के पूर्वी किनारों जैसे- दक्षिण-पूर्व अमेरिका, दक्षिण चीन एवं दक्षिण पूर्वी ब्राजील में पाये जाते है। इन वनों में प्राय: कठोर एवं मुलायम दोनों प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। बांस, चीड़ एवं युकेलिप्टस आदि इन वनों में पाये जाने वाले प्रमुख वृक्ष हैं।

चित्र-3.3 शीतोष्ण सदाबहार वन

4. **शीतोष्ण पर्णपाती वन-** ये वन उच्च अक्षांश की ओर अधिकांशत: पाये जाते है। उत्तर-पूर्वी अमेरिका, चीन, न्यूजीलैण्ड, चिली एवं पश्चिमी यूरोप के तटीय प्रदेशों में ये वन बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं। जब मौसम शुष्क होता है तो इन वनों के वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। बांस, ऐश, बीच आदि इन वनों में पाये

चित्र- 3.4 शीतोष्ण पर्णपाती वन

जाने वाले प्रमुख वृक्ष है। इन वनों में हिरण, लोमड़ी, भेड़ियाँ, प्रमुख जानवर तथा फ़ीजेंट और मोनाल जैसे पक्षी भी पाये जाते हैं।

5. भूमध्यसागरीय वनस्पति- इन वनों का विस्तार महाद्वीपों के पश्चिमी एवं दक्षिणी-पश्चिमी भागों में 30^0-45^0 अक्षांशों के बीच दोनों गोलार्द्धों के क्षेत्रों में है। अधिकांशत: यूरोप, अफ्रीका एवं एशिया के भूमध्यसागर के समीप वाले प्रदेशों में पाये जाने के कारण इन्हें **भूमध्यसागरीय वन** कहते हैं। ये वनस्पतियाँ भूमध्य सागर के बाहरी प्रदेशों जैसे- संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया, दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका एवं दक्षिण-पश्चिमी आस्ट्रेलिया में भी पाई जाती हैं। इन वन क्षेत्रों में प्राय: संतरा, अंजीर, जैतून एवं अंगूर आदि फल पैदा किए जाते हैं।

चित्र-3.5 शंकुधारी वन

6. शंकुधारी वन– शंकुधारी या टैगा वन उत्तरी गोलार्ध के 50^0-70^0 उच्च अक्षांशों में पाये जाते हैं। इन वनों में लम्बे, नरम लकड़ी वाले सदाबहार वृक्ष होते हैं।भारत में शंकुधारी वृक्ष हिमालयी क्षेत्र में अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। जो सामान्यत: अखबारी कागज, माचिस एवं पैकिंग के लिए बक्से बनाने के काम में आता है। चीड़, देवदार आदि इन वनों के मुख्य वृक्ष है। इन वनों में रजत लोमड़ी, मिंक, ध्रुवीय भालू जैसे जानवर पाये जाते हैं।

घास के मैदान- मूलत: यह घास के मैदान वहाँ पाये जाते हैं, जहाँ जङ्गल की वृद्धि के लिए पर्याप्त और नियमित वर्षा नहीं होती है। लेकिन बारिश इतनी कम भी नहीं होती है कि भूमि रेगिस्तान में बदल जाए। प्राय: ये घास के मैदान जंगलों और रेगिस्तानों के बीच स्थित होते हैं। इस दृष्टिकोण से यह मरुस्थलीकरण को रोकने में सहायक होते हैं। मवेशियों के लिए भोजन उपलब्ध कराने के अलावा ये घास के मैदान अनेकों जीवों के आवास हैं। अंटार्कटिका महाद्वीप के अलावा दुनिया के हर महाद्वीप पर घास के मैदान दुनिया के 20 से 40 प्रतिशत भूमि पर पाये जाते हैं। ये घासस्थल दुनिया के कुल कार्बन उत्सर्जन के 30 प्रतिशत हिस्से को अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। घासस्थलों की मुख्यत: दो श्रेणीयाँ हैं- उष्णकटिबन्धीय घास स्थल एवं शीतोष्ण घास स्थल।

उष्णकटिबन्धीय घास स्थल- ये घास स्थल वाले वन भूमध्य रेखा के दोनों ओर उष्णकटिबन्धी क्षेत्रों में विस्तृत है। इन घासस्थलों में वनस्पतियाँ तीन से चार मीटर की उँचाई वाली होती हैं। सामान्यत: उष्णकटिबन्धीय घास स्थलों में हाथी, जेब्रा, जिराफ, हिरण, तेन्दुआ आदि जानवर पाये जाते हैं।

शीतोष्ण घास स्थल- शीतोष्ण घास स्थल उत्तरी गोलार्द्ध मे कर्क रेखा से आर्कटिक वृत्त में 66.5° अक्षांश पर और दक्षिणी गोलार्ध मे मकर रेखा से अंटार्कटिक वृत्त के मध्य पाये जाते हैं। ये घास के मैदान बहुत उपजाऊ होते हैं। इन क्षेत्रों में मौसम ठण्डा रहता है और वर्षा सामान्य होती है।

प्रमुख घास स्थल

उष्णकटिबन्धीय घासस्थल

- पूर्वी अफ्रीका - सवाना
- ब्राजील - कंपोस
- वेनजुएला - लानोस

शीतोष्ण घासस्थल

- अर्जेन्टीना - पैंपास
- उत्तरी अमेरिका - प्रेअरी
- दक्षिण अफ्रीका - वेल्ड
- मध्य एशिया - स्टेपी
- आस्ट्रलिया - डाउन्स

इन घासस्थलों को विभिन्न महाद्वीपीय देशों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। ये घास स्थल सामान्यत: छोटी एवं पौष्टिक होती है। इन घास स्थलों में जंगली भैंसा, बाइसन एवं एंटीलोप नामक जीव पाये जाते हैं।

कटीली झाडियाँ- जिन प्रदेशों में औसत वार्षिक वर्षा 50% से कम होती है वहां वनस्पतियों की दृष्टि से कँटीली झाडियाँ पाई जाती है। इन्हें मरुस्थलीय वन भी कहा जाता है। ये वन उष्णकटिबन्धीय मरू क्षेत्रों एवं महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों पर पाया जाता है। इन क्षेत्रों में कैक्टस, कैर, खजूर, अकेशिया, बबूल जैसी कांटेदार वनस्पतियाँ पायी जाती हैं।

इसी प्रकार ध्रुवीय क्षेत्रों में भी काई, लाईकेन एवं अन्य छोटी झाडियाँ पाई जाती हैं। इन्हें **टुन्ड्रा** वनस्पति भी कहा जाता है। ये वनस्पतियाँ युरोप, एशिया एवं उत्तरी अमेरिका के ध्रुवीय प्रदेशों में पाई जाती है। यहाँ पाये जाने जाने वालें जीवों की चमड़ी मोटी एवं मोटे फर वाले होते हैं। जैसे सील, वालरस, कस्तुरी-बैल, ध्रुवीय उल्लू, ध्रुवीय भालु और बर्फीली लोमड़ी आदि।

वैदिक वाङ्मय में वनस्पतियाँ- वैदिक संस्कृति में लोकजीवन वनस्पतिमय था। यही कारण है कि हमें वैदिक वाङ्मय में औषधि-वनस्पतियों की स्तुतिपरक अनेक मंत्र मिलते हैं। ऋग्वेद के औषधि सूक्त (10. 97.1-23) मंत्रद्दष्टा ऋषियों ने विविध प्रकार से वनस्पतियों की स्तुति की है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि- **वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असि वीळयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि।** (6/47/26) इस मंत्र में ऋषि ने वनस्पतियों से मित्रवत् व्यवहार की शिक्षा दी है। वृक्ष हमारे विचारों एवं भावनाओं के साथ जुडे रहते हैं। अथर्ववेद में स्पष्ट उल्लेख है कि- **अविर्वै नाम देवतर्तेनास्ते परीवृता। तस्या रूपणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः॥** (10.8.31) अर्थात् अवितत्त्व (रक्षक तत्त्व) के कारण

वृक्षों में हरियाली रहती है। इस मन्त्र में अवि शब्द का अर्थ Chlorophyll से है। यह रक्षार्थक धातु अव् से बना है। जिसका अर्थ रक्षक-तत्त्व से होता है।इस मंत्र में यह भी उल्लेख है कि यह अवितत्त्व ऋत (Tissues) से घिरा है। इसके कारण वनस्पतियाँ हरित होती हैं।वृक्षों को शिव का मूर्त रूप माना गया गया है। भगवान शिव विषपान करते हैं, उसी प्रकार वनस्पतियाँ भी विष रूपी कार्बन-डाई-आक्साइड ग्रहण कर अमृत रूपी आक्सीजन प्रदान करती हैं। यजुर्वेद में शिव को वन, औषधियों, वनस्पतियों, वृक्षों आदि का स्वामी कहा गया है- **वृक्षाणां पतये नम:। ओषधीनां पतये नम:॥** (16.17-19)

वैदिक वाङ्मय में कुछ महत्त्वपूर्ण वनस्पतियों के नामों की सूची

वैदिक नाम	प्रचलित नाम
खदिर	खैर
शिंशपा	शीशम
अश्वत्थ	पीपल
शाल्मली	सेमल
विभीतक	बहेडा
वंश	बाँस

जैव विविधता- वन्य जीवन से तात्पर्य जंगली वनस्पतियों एवं वन्यजीवों के जीवन से है। वनस्पतियों एवं जीवों के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होता है। किसी विशेष क्षेत्र में वनस्पति तथा वन्य प्राणियों में विविधता पायी जाती है, इसे ही **जैव विविधता** कहते हैं। जैव विविधता के तीन प्रमुख कारक हैं-धरातल, जलवायु तथा पारिस्थितिकी तन्त्र।

धरातल- पृथिवी के ऊपरी भाग को धरातल (SURFACE) कहते हैं। धरातल के दो भाग हैं- स्थल भाग और जल भाग। धरातल के स्थलीय भाग के समतल भूमि पर प्राय: कृषि की जाती है। जबकी उबड़-खाबड़ या असमान भू-भाग पर जंगल, घास के मैदान आदि में वन्य प्राणियों को आश्रय मिलता है। स्थलीय भू-भाग में विभिन्न प्रकार की मिट्टी जैसे- दोमट, लाल, काली, पीली आदि प्रकार की मिट्टीयाँ पाई जाती है जो वनस्पतियों एवं कृषि की विविधता का प्रधान कारण होती है। उदाहरण के लिए मरुस्थलीय क्षेत्रों में कँटीली झाडियाँ, डेल्टा क्षेत्रों में पर्णपाति वन, पर्वतीय ढालों तथा गहरी परत वाली मिट्टी के क्षेत्रों में शंकुधारी वन पाये जाते हैं।

जलवायु- जलवायु विस्तृत भू-खण्डों पर लम्बे कालखण्ड के लिए वहां के वातावरण को दर्शाता है। जलवायु का प्रभाव वहाँ रहने वाले जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों एवं कृषि आदि पर व्यापक रूप से पड़ता है। जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्त्व तापमान, सूर्य का प्रकाश एवं वर्षा हैं। वनस्पति की विविधता तथा विशेषताएं तापमान और वायु की नमी पर भी निर्भर करती है। किसी भी स्थान पर सूर्य के प्रकाश का समय, उस स्थान के अक्षांश, समुद्र तल से ऊँचाई एवं ऋतु पर निर्भर करता है। यह वनस्पतियों एवं जीवों के विकास में सहायक है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में कम वर्षा वाले क्षेत्रों की अपेक्षा सघन वन पाये जाते हैं। भारत में लगभग सम्पूर्ण वर्षा दक्षिण पश्चिमी मानसून (जून से सितम्बर तक) एवं उत्तर-पूर्वी मानसून से होती है।

पारिस्थितिकी तंत्र- किसी भी क्षेत्र की वनस्पतियाँ तथा प्राणी आपस में भौतिक पर्यावरण से अन्तर सम्बन्धित होकर जीवोम का निर्माण करते हैं। इसे ही **पारिस्थितिकी तंत्र** कहते हैं।

भारत में जैव विविधता- भारत जलवायु की दृष्टि से विविधता युक्त होने के कारण यहाँ जैव विविधता भी व्यापक रूप में पाई जाती है। भारत में लगभग 47000 विभिन्न प्रजातियों की वनस्पतियाँ पाई जाती है। जैव विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में दसवाँ और एशिया में चौथे स्थान है। भारत में पुष्पों की लगभग 15000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो कि विश्व में कुल पुष्प की प्रजातियों का 6% है। भारत में लगभग 89000 प्रजातियों के जानवर तथा विभिन्न प्रकार की मछलियाँ नदियों, तालाबों तथा समुद्री जल में पाई जाती हैं।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. पेड़ पौधों से हमारे जीवन में प्राण रक्षक गैस.....की प्राप्ति होती है।

   अ. नाइट्रोजन　　ब. कार्बन डाईआक्साइड

   स. आक्सीजन　　द. उपर्युक्त सभी

2. वे पौधें जो बिना मनुष्य की सहायता से उगते हैं.....कहलाती है।

   अ. झाड़ियाँ　　ब. जीव　　स. प्राकृतिक वनस्पति　　द. वृक्ष

3. वन्य जीवों का प्राकृतिक निवास स्थान क्या है ?

   अ. घर　　ब. जंगल　　स. बाग　　द. चिड़ियाघर

4. एनाकोण्डा..... में पाया जाता है।

   अ. उष्ण कटिबंधीय सदावहार वन　　ब. पर्वतीय वन

   स. मरूस्थलीय वन　　द. डेल्टाई वन

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. जैव विविधता की दृष्टि से भारत .....स्थान रखता है।　　(चौथा/दसवाँ)
2. ऐसे वन जिनके पेड़ों के पत्ते नियमित रूप से नहीं झड़ते　　(सदाबहार/पतझड़)
3. प्रेअरी उत्तरी अमेरिका का .....है।　　(उष्ण/शीतोष्ण घास स्थल)
4. भारत में जानवरों की लगभग.....प्रजातियाँ पाई जाती हैं।(89000/15000)

सत्य/असत्य बताइए-

1. वन्य जीवन से आशय वन्य जीवों व जंगली वनस्पतियों से है।　　(सत्य/असत्य)

2. शीतोष्ण घासस्थलों में हाथी, जेब्रा, जिराफ, हिरण, तेन्दुआ पाये जाते है। (सत्य/असत्य)

3. छोटे पादपों को झाडियाँ कहते हैं। (सत्य/असत्य)

4. ध्रुवीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली वनस्पतियों को टुन्ड्रा वनस्पति कहते हैं। (सत्य/असत्य)

5. शंकुधारी वनों को टैगा वनस्पति भी कहते हैं। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. कँटीली झाडियाँ	क. देवदारू
2. शंकुधारी वन	ख.कैक्टस
3. भूमध्यसागरीय वन	ग. गोल्डन लंगूर
4. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन	घ. अफ्रीका

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं ?
2. वन किसे कहते हैं ?
3. जैव विविधता से क्या आशय है ?
4. पारिस्थितिकी तन्त्र किसे कहते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. प्राकृतिक वनस्पति की कितनी श्रेणियाँ हैं ?
2. उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र पर्णपाती वनों की विशेषता लिखिए।
3. वनों के महत्व को समझाइए।
4. भारत में जैव विविधता के बारे में समझाइए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. वन किसे कहते हैं? उनके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए ।
2. प्रमुख घास के मैदानों के बारे में विस्तार से लिखिए ।

परियोजना कार्य-

1. छात्र अपने आस-पास की वनस्पतियों को संग्रहित कर उनकी विशेषताओं को उत्तर-पुस्तिका में लिखिए।

अध्याय- 4

मरुस्थल में जीवन

आइये जानें- मरुस्थल अर्थ व प्रकार, सहारा मरुस्थल, भारत का ठण्डा मरुस्थल।

मरुस्थल- ऐसे शुष्क क्षेत्र जिनमें वर्षा का अभाव, उच्च या निम्न तापमान एवं विरल वनस्पतियां होती हैं, मरुस्थल कहलाते हैं। यहाँ प्राय: विरल आबादी, नगण्य वनस्पतियाँ, कँटीली झाड़ियाँ तथा अधिक वाष्पीकरण के कारण जल स्त्रोतों की कमी बनी रहती है। विश्व में मात्र 20% रेतीले मरुस्थल हैं। **अण्टार्टिक** विश्व का सबसे बड़ा हिम मरुस्थल है तथा सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल **सहारा** है।

मरुस्थल के प्रकार- तापमान के आधार पर मरूस्थल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **शुष्क या गर्म मरुस्थल-** शुष्क मरुस्थल में सामान्यत: 50 सेमी से कम वर्षा होती है। इन स्थानों पर रहने वाले जीव शुष्क जलवायु वाले होते हैं। सहारा, मोजावे, थार ऐसे ही मरुस्थल हैं।
2. **ठण्डा मरुस्थल-** इन मरुस्थलों में हिमपात होने के कारण शीतकाल में अत्यधिक सर्दी होती है। ये उच्च समतल क्षेत्रों में पाये जाते हैं। अण्टार्कटिका, ग्रीनलैण्ड, लद्दाख और आर्कटिक आदि ठण्डा मरुस्थल के उदाहरण हैं।

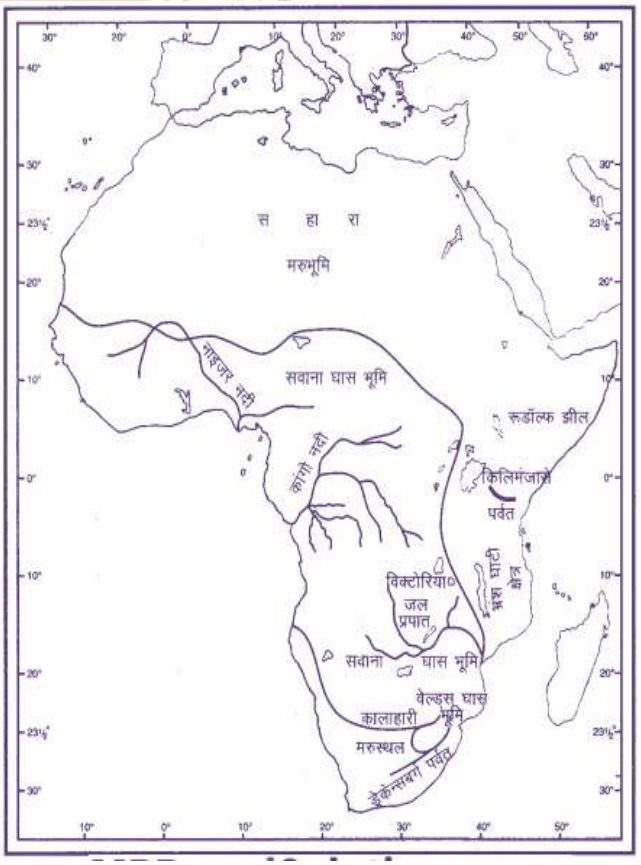

मानचित्र 4.1 अफ्रीका महाद्वीप में सहारा

सहारा मरुस्थल- यह मरुस्थल अफ्रीका के उत्तरी हिस्से में अटलांटिक महासागर से लाल महासागर तक 56,000 किलोमीटर की लम्बाई में एवं सूडान के उत्तर तथा एटलस पर्वत के दक्षिण में 1,300 किमी. की चौड़ाई तक विस्तृत है। इसका क्षेत्रफल (8.54 लाख वर्ग कि.मी.) यूरोप महाद्वीप के बराबर एवं भारत के क्षेत्रफल के दोगुने से भी अधिक है। इसके अन्तर्गत माली, मोरक्को, मौरतानिया, अल्जीरिया, ट्यूनिशिया, लीबिया, नाइजर, चाड, सूडान एवं मिस्त्र आदि देश आते हैं।

सहारा एक मरुस्थलीय पठार है जिसकी औसत ऊंचाई 300 मीटर (कुछ स्थान 2500 मीटर से अधिक ऊँचे) हैं। इस उष्ण कटिबन्धीय मरुभूमि का इतिहास लगभग 30 लाख वर्ष पुराना है। यहाँ कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं, जिनमें अल्जीरिया का होगर तथा लीविया का टिवेस्टी पर्वत मुख्य हैं।

क्या आप जानते है-

- सहारा के अल्जीरिया (त्रिपोली और लीबिया के मध्य) क्षेत्र में 1922 ईस्वी में 57.7 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था।

जलवायु- सहारा मरूस्थल की जलवायु अति उष्ण एवं शुष्क है। यहाँ वर्षा ऋतु अल्पकालिक होती है। आकाश प्राय: स्वच्छ एवं निर्मल होने के साथ ही नमी तेजी से वाष्पित होती है। दैनिक तापान्तर तथा वार्षिक तापान्तर दोनों अधिक होते हैं। दिन का तापमान 50 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तथा रात का तापमान लगभग 0 डिग्री सेल्सियस होता है। वर्तमान सहारा रेगिस्तान पूर्व के समय में पूर्णत: हरा-भरा मैदान था। परन्तु जलवायु परिवर्तन के कारण यह उष्ण एवं शुष्क क्षेत्र में परिवर्तित हो गया।

वनस्पति और जीव- इस विशाल रेगिस्तान की भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर यहाँ विविध प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। कैक्टस, खजूर के वृक्ष एवं ऐकेशिया यहाँ की प्रमुख वनस्पतियाँ हैं। ऐसे कुछ विशिष्ट क्षेत्र भी हैं, जहाँ मरू-उद्यान एवं हरित द्वीप भी पाये जाते हैं। सहारा मरुस्थल में ऊँट, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँपों एवं छिपकलियों की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

सहारा रेगिस्तान में जन जीवन- सहारा रेगिस्तान में जन-जीवन बहुत कठिनाईयों से भरा हुआ है। फिर भी वहाँ के निवासी विभिन्न क्रिया-कलापों में भाग लेते हैं। यहाँ के प्रमुख समुदायों में बेदुईन एवं तुआरेग हैं। चलवासी जनजातियाँ दूध, खाल एवं बाल प्राप्त करने के लिए बकरी, ऊँट, घोडे आदि पालते हैं। पेटी, जूते, चमड़े से बनी पानी की बोतलें, चमड़ा, चटाई, कालीन कपड़े तथा कम्बल आदि यहाँ के प्रमुख निर्माण उद्योग हैं। यहाँ निरन्तर चलने वाली गर्म वायु एवं धूल भरी आँधियों से बचने के लिए लोग भारी वस्त्र पहनते हैं। सहारा के निवासी मरु-उद्यानों एवं मिश्र की नील घाटी में प्राय: निवास करते हैं। इस क्षेत्र में लोग खजूर के साथ-साथ चावल, गेहूं, जौ, सेम एवं कपास जैसी फसलें भी उत्पादित करते हैं। यहाँ प्राप्त प्रमुख खनिजों में लोहा, फास्फोरस, मैंगनीज एवं यूरेनियम हैं। इस क्षेत्र में खनिज तेल की खोज के उपरान्त विकास तेजी से हुआ है। जिससे सहारा की जीवन शैली परिवर्तित हुई है। आज यहाँ आधुनिक शैली के भवनों एवं विशाल राजमार्गों का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ के मूलवासी शहरी जीवन की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं।

भारत का ठण्डा रेगिस्तान- लद्दाख भारत का सबसे ठण्डा रेगिस्तान है। इसे खा-पा-चान (हिम-भूमि), चट्टानी धरती अथवा अनेक दर्रों वाली भूमि भी कहते हैं। यह उत्तर में काराकोरम पर्वत और दक्षिण में हिमालय पर्वत के बीच में स्थित है। यह भारत का सबसे विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र है। लद्दाख का क्षेत्रफल 1,66,698 वर्ग किमी है। केन्द्र शासित प्रदेश लद्दाख के अन्तर्गत पाक अधिकृत गिलगिट, बलूचिस्तान, चीन अधिकृत अक्साई चीन और शक्सगम घाटी का क्षेत्र भी शामिल है। इसमें पाकिस्तान द्वारा अवैध रूप से कब्जाए गये क्षेत्र बलूचिस्तान का क्षेत्रफल 64,817 वर्ग किमी. है, जबकि चीन द्वारा कब्जाए गये क्षेत्र अक्साई चीन का क्षेत्रफल 37,555 वर्ग किमी है। इसके अतिरिक्त 1963 में पाकिस्तान द्वारा 5,180 वर्ग कि.मी. का शक्सगम घाटी क्षेत्र चीन को उपहार में दिया गया जो लद्दाख का हिस्सा है। इसके उत्तर में चीन तथा पूर्व में तिब्बत की सीमाएं हैं। सीमावर्ती स्थिति के कारण सामरिक दृष्टि से भी इसका बड़ा महत्त्व है। लद्दाख उत्तर पश्चिमी हिमालय के पर्वतीय क्रम में आता है जहाँ का अधिकांश धरातल कृषि योग्य नहीं है। गाडविन आस्टिन (K-2, 8611 मीटर) और गाशारब्रूम (8068) सर्वाधिक ऊँचाई वाली चोटियां हैं। यहाँ की जलवायु अत्यन्त शुष्क एवं शीतल है। वार्षिक वृष्टि का औसत 10 सेमी तथा वार्षिक औसत ताप 5^0 C है। यहाँ दिन का तापमान 0 डिग्री सेल्सियस तथा रात का तापमान- 30 से 40 डिग्री सेल्सियस तक होता है। अत: यहाँ नदियां दिन में कुछ ही समय प्रवाहित होती हैं, शेष समय में बर्फ जमी रहती है। सिन्धु नदी को यहाँ की जीवन रेखा कहा जाता है। केन्द्रशासित प्रदेश लद्दाख की राजधानी एवं प्रमुख नगर लेह है, जिसके उत्तर में काराकोरम पर्वत तथा दर्रा है। राजधानी लेह सड़क एवं वायुमार्ग द्वारा देश के मुख्य भागों से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग 1 ए लेह को कश्मीर घाटी से जोड़ता है।

मानचित्र- 4.2 भारत का ठंडा रेगिस्तान (लद्दाख)

हिमालय पर्वत के प्रमुख दर्रे

दर्रे का नाम	अवस्थिति
काराकोरम	लद्दाख
रोहतांग	हिमाचल प्रदेश
जोजीला	जम्मू और कश्मीर
नाथूला	सिक्किम
लिपुलेख	उत्तराखण्ड

क्या आप जानते हैं-

- क्रिकेट का सबसे अच्छा बल्ला बनाने की लकड़ी विलो (शरपत) पेड़ से मिलती है, जो लद्दाख में मिलता है।
- मनाली-लेह राष्ट्रीय मार्ग केवल जुलाई से सितम्बर माह के मध्य खुलता है, जो रोहतांग, बारालाचा, लुनगालाचा, टंगलंग ला से गुजरता है।
- विश्व के सर्वाधिक ठंडे स्थानों में से एक द्रास लद्दाख में है।

जन्तु एवं वनस्पतियाँ- यह क्षेत्र शुष्क होने के कारण वनस्पति विहीन है। यहाँ जानवरों के चरने के लिए कहीं-कहीं पर ही घास एवं छोटी-छोटी झाड़ियां मिलती हैं। घाटी में सरपत, विलो एवं पापुलर के वृक्ष देखे जा सकते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सेव, खुबानी एवं अखरोट जैसे पेड़ पल्लवित होते हैं। लद्दाख में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। यहाँ विशेषकर बकरी, भेड़, याक एवं विशेष प्रकार के कुत्ते आदि दूध, मांस, फर प्राप्त करने के लिए पाले जाते हैं ।

जनजीवन- यहाँ की अधिकांश जनसंख्या घुमक्कड़ है, जिसकी प्रकृति, संस्कार एवं रहन-सहन तिब्बत एवं नेपाल से प्रभावित हैं। पूर्वी भाग में अधिकांश लोग बौद्ध हैं तथा पश्चिमी भाग में अधिकांश लोग मुसलमान हैं। हेमिस गोंपा बौद्धों का सबसे बड़ा धार्मिक स्थान है और अन्य धार्मिक स्थलों में थिकसे, शे एवं लामायुरू हैं। यहाँ के निवासी ग्रीष्मकाल में आलू, मटर, सेम, शलजम एवं जौ की खेती करते हैं। शीत ऋतु में अधिकांशत: लोग धार्मिक अनुष्ठानों एवं उत्सवों में व्यस्त रहते हैं। यहाँ महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ कृषि एवं छोटे व्यवसाय करती हैं। पर्यटन यहाँ का मुख्य उद्योग है।

लद्दाख का इतिहास- लद्दाख में मिले शिलालेखों से पता चलता है की यहाँ सभ्यता और संस्कृति का विकास नव पाषाण काल से प्रारम्भ हुआ था। यहाँ के प्राचीन निवासियों मोन और दार्द लोगों का वर्णन हेरोडोटस, नोर्चुस, मेगस्थनीज, प्लिनी, टालमी आदि विद्वानों के ग्रन्थों में प्राप्त होता है। प्रथम शताब्दी के आस–पास लद्दाख कुषाण राज्य का हिस्सा था। सातवीं शताब्दी में बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने भी इस क्षेत्र का वर्णन किया है। हमारे पास यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि पवित्र कैलाश पर्वत के कारण यहाँ प्राचीनकाल से ही सनातन हिन्दू धर्म का विस्तार एवं कनिष्क के शासन काल में यहाँ बौद्ध धर्म का भी प्रचार-प्रसार हुआ। 5 अगस्त 2019 केन्द्रशासित प्रदेश बन गया।

चित्र- 4.1 बर्फीली पहाड़ियाँ और वन

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. विश्व का सबसे बड़ा.....मरुस्थल है।

अ. सहारा ब. थार स. गोवी द. अटाकामा

2. सहारा मरुस्थल का क्षेत्रफल .....वर्ग कि.मी. है।

अ. 8.54 लाख ब. 7.70 लाख स. 6.54 लाख द. 9.58 लाख

3. लद्दाख मरुस्थल का क्षेत्रफल.....है।

अ. 1,66,698 वर्ग किमी ब. 45,619 वर्ग किमी

स. 15,000 वर्ग किमी द. 16144 वर्ग किमी

4. भारत के सबसे ठण्डे रेगिस्तान का नाम ..... है।

अ. सहारा ब. थार स. गोवी द. लद्दाख

5. गाडविन आस्टिन (K-2) पर्वत शिखर की ऊँचाई.....है।

अ. 8068 मी. ब. 8066 मी. स. 8611 मी. द. 7068 मी.

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गाशारब्रूम पर्वत शिखर की ऊँचाई .....मी. है। (8068 मी./8611 मी.)
2. लद्दाख की राजधानी.....है। (श्रीनगर/लेह)
3. विश्व के लगभग .....भाग पर रेतीले मरुस्थल हैं। (20 %/50 %)
4. लद्दाख में वार्षिक दृष्टि का औसत.....है। (10 से.मी./5 से.मी.)

सत्य/असत्य बताइए-

1. थार मरुस्थल विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल है। (सत्य/असत्य)
2. सहारा मरुस्थल में लोमडी की विभिन्न प्रजाति पाई जाती हैं। (सत्य/असत्य)
3. लद्दाख मरुस्थल नव पाषाणकाल से स्थापित है। (सत्य/असत्य)
4. सिन्धु नदी को लद्दाख की जीवन रेखा कहा जाता है। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए –

1. शुष्क मरुस्थल	क. 2019
2. बौद्ध मठ	ख. लद्दाख
3. ठण्डा मरुस्थल	ग. हेमिस गोंपा
4. लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेश	घ. सहारा

अति लघुत्तरीय प्रश्न–

1. सहारा मरुस्थल लम्बाई कितनी है ?
2. लद्दाख केन्द्रशासित प्रदेश कब बना ?
3. ठण्डा मरूस्थल किसे कहते हैं ?
4. क्रिकेट बैट किस वृक्ष की लकड़ी से बनता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. मरुस्थल से क्या आशय है ?
2. सहारा मरुस्थल की जलवायु कैसी है ?
3. मनाली-लेह राष्ट्रीय मार्ग के बारे में आप क्या जानते हैं ?
4. लद्दाख के सामरिक महत्त्व के बारे में आप क्या जानते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. सहारा मरुस्थल की भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए वहाँ के जीवन के बारे में लिखिए।
2. लद्दाख की जलवायु, वनस्पति और जन जीवन का वर्णन कीजिए।

परियोजना कार्य-

1. भारत के मानचित्र में विभिन्न हिमालयी दर्रों को दर्शाइए।

अध्याय – 5

मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियाएँ

आइये जानें- मानवीय पर्यावरण, बस्तियाँ, परिवहन,सञ्चार, अन्योन्य क्रियाएँ , भूमध्य रेखीय प्रदेश, गङ्गा और ब्रह्मपुत्र का बेसिन, शीतोष्ण घास स्थल ।

मानवीय पर्यावरण- मानवीय प्रयासों से निर्मित पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। मानव प्राचीन काल से ही प्रकृति की गोद में रहते हुए भोजन, वस्त्र एवं निवास के लिए किसी न किसी रूप में प्रकृति पर निर्भर है। बौद्धिक क्षमता के विकास क्रम में उसने अपने रहन-सहन के तरीकों में परिवर्तन करना शुरू किया। वर्तमान में मानव ने भौतिक सुविधाओं एवं विलासिता की सामग्रियों के निर्माण और संग्रहण के लिए प्रकृति को बहुत अधिक नुकसान पहुँचाया है।

बस्तियाँ- बस्तियों से तात्पर्य ऐसे स्थान से है, जहाँ लोग अपने अधिवास बनाते हैं। जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता के कारण मानव बस्तियों का विकास नदियों के किनारे एवं दोआब क्षेत्रों में हुआ। क्योंकि इन क्षेत्रों की भूमि अधिक उपजाऊ थी इसलिए इन क्षेत्रों में कृषि, व्यापार-वाणिज्य और विनिर्माण के विकास के साथ-साथ मानव बस्तियाँ भी बढ़ती चली गईं। विश्व की अनेक मानव सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ। उदाहरण के लिए सिन्धु घाटी, मेसोपोटामिया की सभ्यता आदि। मानव बस्तियाँ स्थायी और अस्थायी दोनों ही रूपों में होती हैं। आज भी घुमन्तु जातियाँ अस्थायी बस्तियाँ बसाती हैं। यद्यपि आज स्थायी बस्तियों का विकास अधिकांशत: हो रहा है। स्थायी बस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं- 1. ग्रामीण बस्ती 2. नगरीय बस्ती।

चित्र- 5.1– ग्रामीण बस्ती (सघनबस्ती)

ग्रामीण बस्ती- ग्रामीण बस्तियों का सम्बन्ध प्रत्यक्षत: भूमि से है। यहाँ रहने वाले लोग प्राय: प्राथमिक गतिविधियों- कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, आखेट, वानिकी, दस्तकारी सम्बन्धी आदि कार्य करते हैं। ग्रामीण बस्ती सघन या विरल दोनों प्रकार की हो सकती है। सघन बस्तियों में आवास पास-पास होते

हैं जबकि विरल बस्तियों में आवास दूर-दूर होते हैं। ऐसी बस्तियाँ मुख्यत: पहाड़ी क्षेत्रों, अति विषम जलवायु व घने जंगली क्षेत्रों में पायी जाती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोग पर्यावरण के अनुकूल घर बनाते हैं। जैसे वर्षा वाले क्षेत्रों में आवास ढाल वाली छत के बनाते हैं। जल जमाव वाले क्षेत्रों में प्लेटफार्म या स्टिल्ट पर घर बनाते हैं। गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में दीवार मोटी एवं छतें तृण, घास-फूस व चिकनी मिट्टी की बनी होती हैं। ध्रुवों पर रहने वाले लोग बर्फ के घर बनाते हैं, जिन्हें **इग्लू** कहते हैं। सामवेद में त्रि-तापों (शीत, वर्षा और आतप) से रक्षा के लिए गृह प्राप्ति की प्रार्थना की गई है- **छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च** (सामवेद –226) । ऋग्वेद के अनुसार गृह पूर्वमुखी एवं सुव्यवस्थित परिमाप का होना अनिवार्य है- **सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैः** (2.15.3)

नगरीय बस्ती- मानव बस्तियों के विकास क्रम में नगरीय बस्तियों का विकास अपेक्षाकृत नया है। नगरीय बस्तियों में घर बहु-मंजिला और सघन होते हैं। नगरीय क्षेत्रों में लोग निर्माण, व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं। ऋग्वेद में सुरक्षा की दृष्टि से लौह एवं स्वर्ण नगरी का संकेत है- **शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि।**(7.3.7) और **पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा** (ऋग्वेद 10.101.8)

क्या आप जानते है-

- मानव के मौसमी प्रवास को ऋतु-प्रवास कहते हैं।

परिवहन- परिवहन से तात्पर्य लोगों एवं वस्तुओं के आवागमन के साधनों से है। मानव सभ्यता के प्रारम्भ में लोग पैदल यात्रा करते थे। नवपाषाण काल में पहिए के आविष्कार से मानव जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। विकास क्रम में परिवहन के साधनों का तीव्र विकास हुआ। पहले से ही हमारे देश में सामान्य रूप से गधे, खच्चर, बैल, ऊँट एवं घोड़ा गाड़ी आदि का उपयोग परिवहन संसाधनों के रूप में किया जाता था, जो आज भी प्रचलन में है। सामवेद में रथ को परिवहन के रूप में प्रयोग होना स्वीकार किया गया है- बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः (सामवेद- 338) आधुनिक तकनीकी विकास के कारण परिवहन के नये संसाधनों यथा- बस, ट्रक, रेल, जलयान, वायुयान आदि का द्रुतगामी संसाधनों का विकास हुआ। परिवहन के अत्याधुनिक साधन, समय एवं

चित्र-5.2 प्राचीन परिवहन का साधन रथ

ऊर्जा दोनों की बचत करते हैं। परिवहन के तीन प्रमुख मार्ग हैं- स्थल, जल एवं वायु मार्ग। परिवहन साधनों के रूप में बस, ट्रक, कार, रेलगाड़ी, वायुयान एवं जलयान आदि हैं।

सञ्चार- सञ्चार से तात्पर्य किसी ज्ञान, भाव या विचारों, सूचनाओं एवं सन्देशों को दूसरों तक पहुँचाना है। प्राचीनकाल में सन्देशों के आदान-प्रदान के लिए मानव के साथ-साथ पक्षियों का प्रयोग किया जाता था। इन्हें सन्देश वाहक कहा जाता था। इसके अतिरिक्त जन सम्पर्क भी सञ्चार का सशक्त माध्यम होता था। आज सञ्चार के क्षेत्र में नए एवं तीव्र संसाधनों के विकास ने विश्व में सूचना क्रांति को जन्म दिया है। डाक, समाचार पत्रों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सचलदूरभाष (मोबाईल), ई-मेल एवं सोशल मीडिया के द्वारा हम बड़ी संख्या में एक साथ लोगों तक सूचना प्रसारित कर सकते हैं। अब सञ्चार उपग्रहों के विकास से सञ्चार की दुनिया में एक नया मोड़ आ गया है। अब इंटरनेट ने सम्पूर्ण विश्व को समीप लाकर खड़ा कर दिया है। आज हम घर बैठे रेल, बस, टेक्सी, हवाई जहाज का टिकट बुकिंग, ऑनलाईन शॉपिंग, आदि कर सकते हैं।

क्या आप जानते है-

- भारत में राष्ट्रीय मार्गों मे एक्सप्रेस-वे नवीनतम हैं। स्वर्ण चतुर्भुजीय महामार्ग दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई को जोड़ता है।
- ट्रांससाइबेरियन रेलमार्ग विश्व में सबसे लम्बा रेलमार्ग है, जो रूस में सेंट पीटर्सबर्ग से ब्लादिवोस्टक तक जाता है.
- भारतीय रेलवे नेटवर्क का विश्व में चौथा स्थान है।

वैदिक वाङ्मय में अग्नि और वेदमंत्र सञ्चार के साधन हैं, जिनके द्वारा देवताओं का आवाहन किया जाता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि **अग्निर्वै देवतानां मुखम्।** (1.) अर्थात् अग्नि देवताओं का मुख है।इसी प्रकार सामवेद में इन्द्र का आवाहन करते हुए कहा गया है- **त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः** (234) अर्थात् हे इन्द्र! मैं अन्न और धन के लिए आपका आवाहन करता हुँ। महाभारत युद्ध का सञ्जय द्वारा महाराज धृतराष्ट्र किया गया वर्णन, वर्तमान समय के सीधा प्रसारण (Live Telecast) का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

मानव पर्यावरण में अन्योन्य क्रियाएँ- अन्योन्य वह क्रिया है जो दो वस्तुओं द्वारा एक साथ सम्पन्न होती है और परस्पर कारण के रूप में विवेचित करती हैं। इस रूप में मानव और पर्यावरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। मानव सृष्टि आरम्भ से ही पर्यावरण के विभिन्न रूप जैसे जलवायु, वर्षा, आदि पर निर्भर रहा है। किसी भी भू-भाग की जलवायु वहाँ के जीवन को प्रभावित करती है। इस दृष्टि से हम भू-मध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन), गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन तथा शीतोष्ण घास के मैदानों में जीवन का अध्ययन करेंगे।

भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन)- भूमध्य रेखा के दोनों ओर 10° से 10° अक्षांशों के बीच पाये जाने वाले स्थानों को भू-मध्य या विषुवत रेखीय प्रदेश कहते हैं। भू-मध्य रेखीय प्रदेश में दक्षिणी अमेरिका का उत्तरीभाग, अफ्रीका का मध्य भाग तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीपों को शामिल किया गया है। इसमें मुख्यत: अमेजन बेसिन, कांगो बेसिन, गिनीतट, इण्डोनेशिया मलेशिया तथा सिंगापुर सम्मिलित हैं। अमेजन नदी पश्चिमी पर्वतों से निकल कर इस क्षेत्र से प्रवाहित होती हुई पूर्व में अन्धमहासागर में मिलती है। यह अपनी अनेक सहायक नदियों से मिलकर बेसिन (द्रोणि) का निर्माण करती है।

क्या आप जानते है-

- जब स्पेनिश अनुसंधानकर्ताओं ने अमेजन नदी की खोज की तब उन पर घास के कपड़े पहने आदिवासियों ने आक्रमण कर दिया था। अनुसंधानकर्ताओं को ये आक्रमणकारी प्राचीन रोमन साम्राज्य के अमेजोंस जैसे लगे। इस प्रकार इसका नाम अमेजन पड़ा है।
- मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ जिस क्षेत्र के पानी को बहाकर ले जाती हैं, वह उसका बेसिन कहलाता है। अमेजन बेसिन विश्व का सबसे बड़ा बेसिन है।
- ब्रोमिलायड एक प्रकार का पादप होता है, जो अपनी पत्तियों में जल संचित रखता है। मेंढक जैसे जीव इनका उपयोग अंडा देने के लिए करते हैं।

जलवायु- यहाँ पर वर्ष भर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। यहाँ का तापमान हमेशा उच्च रहता है। यहाँ की जलवायु उष्ण एवं नम होती है। यहाँ का औसत तापमान 23° से 37° तक होता है। यहाँ प्रतिदिन दोपहर बाद वर्षा होती है और रात्रि में मौसम साफ हो जाता है। यहाँ 200 से.मी. तक औसत वार्षिक वर्षा होती है।

वनस्पतियाँ एवं जीव जन्तु- उष्ण और नम जलवायु के कारण यहाँ सघन वन पाये जाते हैं। यहाँ भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में सदा हरे-भरे रहने वाले चौड़ी पत्ती के वन पाये जाते हैं, जो **सेल्वा** कहलाते हैं। ये वन इतने सघन होते हैं कि यहाँ सूर्य का प्रकाश पृथिवी तक नहीं पहुँच पाता है। इन वृक्षों में महोगनी, रबड़, ताड़, बाँस, चन्दन और सिनकोना मुख्य वृक्ष हैं। यहाँ आर्किड एवं ब्रोमिलायड जैसे परजीवी पौधे पाये जाते हैं। इन वनों में साँप, अजगर, गेण्डा, जंगली सुअर, बिलाव, बन्दर, मकड़ियाँ, पिस्सु, तितलियाँ, कीड़े-मकोड़े आदि पाये जाते हैं।

कृषि उपज- यहाँ वनों को साफ करके खेती की जाती है, जिसे **मिल्पा कृषि** कहते हैं। यहाँ चावल, मक्का, गेहूँ, गन्ना, तम्बाकू, कहवा, चाय, कोको, केला, अन्नानास आदि की खेती की जाती है। अमेजन वेसिन में रबड़ की खेती बहुतायत से होती है।

निवास तथा रहन-सहन- उष्ण एवं नम जलवायु के कारण यहाँ के निवासियों का रहन-सहन बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता है। यहाँ के निवासियों का कद छोटा, रंग काला, नाक चपटी, होठ मोटे होते हैं। कठोर जलवायु के कारण अमेजन वेसिन के लोग आज भी असभ्य जीवन व्यतीत करते हैं। ये वृक्षों पर फूंस की झोपड़ी बनाकर रहते हैं। जबकि कुछ लोग **मलोका** कहे जाने वाले बड़े अपार्टमेण्टों में रहते हैं। जिनकी छत तीव्र ढलान वाली होती है। इन क्षेत्रों में वर्षा वन बहुत तेजी से क्षरित हो रहे हैं, जिसके कारण मिट्टी की ऊपरी परत कटकर बह जाती है और सघन वन बञ्जर भूमि में बदल जाता है। अमेजन बेसिन के निवासियों की जीवन शैली परिवर्तित हो रही है। 1970 ईस्वी में ट्रान्स अमेजन महामार्ग के निर्माण से वर्षा वन के सभी भागों में संभव हो पाया है। अनेक स्थानों पर पहुँचने के लिए हवाई जहाजों तथा हेलीकाप्टरों का प्रयोग किया जा रहा है। विकास की गतिविधियों के परिणामस्वरूप यहाँ की जैव विविधता क्रमश: नष्ट हो रही है।

गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में जीवन- इस जलवायु के प्रदेशों का विस्तार 10° से 30° उत्तरी अक्षांशों (उपोष्ण कटिबन्ध) में विस्तृत है। घाघरा, सोन, गण्डक , कोसी और गङ्गा जैसी नदियाँ एवं ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ इसमें अपवाहित होती हैं।ब्रह्मपुत्र नदी को यरलङ्ग (चीन), साम्पो (तिब्बत), देहांग (अरूणचल प्रदेश), जमुना (बांग्लादेश), मेघना (गङ्गा-ब्रह्मपुत्र की संयुक्त धारा) के नाम से भी जाना जाता है। इस बेसिन की प्रमुख विशेषताओं में गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्र के मैदान, हिमालय के गिरिपाद एवं सुन्दर वन डेल्टा हैं।

जलवायु- यहाँ मानसूनी जलवायु पायी जाती है। अत: गर्मी और सर्दी दोनों ही अधिक पड़ती हैं। यहाँ मानसून काल में मध्य जून से मध्य सितम्बर तक 200 से 250 से.मी. तक वर्षा होती है। यहाँ अनेक प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियाँ पायी जाती हैं। चौड़ी पत्ती के पतझड़ वाले वन पाये जाते हैं। ब्रह्मपुत्र के मैदानी क्षेत्रों में बाँस के झुरमुट पाये जाते हैं।

कृषि एवं जीव-जन्तु- यहाँ के उपजाऊ भागों में चावल, जूट, चाय, कपास, गन्ना, तिलहन, तम्बाकू, मक्का, गेहूँ, आम, जामुन, लीची, केला, पपीता, अनार, कटहल आदि की खेती होती है। विश्व में सबसे अधिक जूट का उत्पादन भारत में होता है। इन प्रदेशों में हाथी, घोड़ा, शेर, चीता, हिरण, गाय, बैल, गैण्डा, ऊँट, बकरी, भेड़, सुअर, बैल, घड़ियाल, विभिन्न प्रकार की मछलियाँ आदि पाये जाते हैं। गंगा नदी में पाई जाने वाली **डाल्फिन मछली** को हमारे देश का राष्ट्रीय जलीय जीव माना गया है।

निवास तथा रहन-सहन- गङ्गा-ब्रह्मपुत्र बेसिन ऊपजाऊ होने के कारण मानव प्रवास के लिए उपयुक्त है इसलिए यहां जन घनत्व अधिक है। यहाँ के लोग गाँवों अथवा शहरों में रहते हैं। यहाँ के लोग कपड़ा, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, विभिन्न धातुओं के बर्तन और कृषि तथा अन्य प्रकार के उद्योग करते हैं।

अनुकूल दशाओं के कारण ये क्षेत्र अधिक जनसंख्या वाले हैं। गङ्गा ब्रह्मपुत्र के मैदानों में कई बड़े शहर- प्रयागराज, वाराणसी, कानपुर, कोलकत्ता, पटना, लखनऊ आदि हैं। इन शहरों और उद्योगों का गन्दा पानी नदियों में जाकर जल को प्रदूषित करता है। जिससे जलप्रदूषण होता है।

क्या आप जानते है-

- जन घनत्व से आशय एक वर्ग कि.मी. क्षेत्र निवास करने वाले लोगों की संख्या है। भारत में सबसे अधिक जन घनत्व (1102) बिहार और सबसे कम अरूणाचल प्रदेश (17) का है।

एतदर्थ 2014 में गङ्गा नदी के संरक्षण के लिए **नमामि गंगे** कार्यक्रम चलाया है। पर्यटन इस बेसिन की महत्वपूर्ण विशेषता है। ताजमहल, प्रयागराज संगम, बौद्ध विहार, वन्यप्राणी अभयारण्य, आनन्द भवन आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

शीतोष्ण घास स्थलों में जीवन- जिन क्षेत्रों में मुख्यत: घास की अधिकता होती है। उसे घास स्थल कहते हैं। सम्पूर्ण धरती के लगभग ¼ भाग पर घास के मैदान हैं। भौगोलिक दृष्टि से घास स्थलों की दो श्रेणियां- '**शीतोष्ण एवं उष्णकटिबंधीय**' घास के मैदान हैं। यहाँ हम शीतोष्ण घास स्थलों के रूप में प्रेअरी के मैदान के जनजीवन के बारे में जानेंगे।

प्रेअरी घास स्थल- उत्तरी अमेरीका के शीतोष्ण घास के मैदानों को '**प्रेअरी**' कहते हैं। ये समतल, पहाडियों वाले ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ वृक्ष कम तथा 2-2 मीटर ऊंची घास अधिक मात्रा में पाई जाती है। यह पश्चिम में राकी पर्वत से लेकर पूर्व में ग्रेट लेक तक फ़ैला है। प्रेअरी का अपवाहन अमेरीका में मिसीसिपी तथा उसकी सहायक नदियाँ, कनाडा में सासकेचान एवं उसकी सहायक नदियाँ करती हैं।

क्या आप जानते है-

- लैटिन भाषा के शब्द प्रिएटा से प्रेअरी शब्द की उत्पत्ति हुई है। जिसका अर्थ शाद्वल है।
- प्रेअरी घास स्थल के निवासियों को रेड इंडियन कहा जाता है, जो अमेरीका के मूल निवासी हैं।

जलवायु- इन प्रदेशों में उच्च तापमान वाली महाद्वीपीय जलवायु होती है। सर्दियों में यहाँ मोटी वर्फ की चादर बिछ जाती है तथा वार्षिक वर्षा सामान्य होती है। यहाँ स्थानीय पवन '**चिनुक**' बहती है। यहाँ पर चक्रवात प्रतिचक्रवात के कारण मौसम बदलता रहता है।

प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव जन्तु- यहाँ चौड़ी पत्ती वाले वन पाये जाते हैं। कम उपजाऊ भूमि पर कठोर और मूल्यवान लकड़ी के वृक्ष पाये जाते हैं। यहाँ सुअर, गाय, बैल, भेड़, घोड़े और मुर्गियाँ अधिक पाली जाती हैं। वनों में हिरण, लोमड़ी, भालू, ऊदविलाव, प्रेअरी कुत्ता, गोफर, बाइसन आदि पाये जाते हैं।

कृषि, निवास तथा रहन-सहन- आर्द्र भागों में कत्थई और भूरे रंग की पौडजौलिक मिट्टी पायी जाती हैं, जिनमें मक्का, गेहूँ और मोटे अनाज पैदा किये जाते हैं। कम सिंचाई वाले भागों में चारा उगाया जाता

है। यहाँ पर उत्तरीअमेरिका के मूल निवासी, ईरकवासी और रेड इण्डियन लोग ही मुख्य निवासी हैं। यहाँ के लोगों का रहन-सहन काफी अच्छा है।

आर्थिक विकास- आर्थिक विकास की दृष्टि से यह प्रदेश उन्नतिशील है। घास की अधिकता के कारण यहाँ पर पशुपालन उद्योग का पूर्ण विकास हुआ है। विश्व में यहाँ सबसे अधिक मक्का पैदा किया जाता है। मक्के की कृषि वाले क्षेत्र को अमेरिकी कृषि का हृदय कहते हैं। यह प्रदेश अनाज, लकड़ी, मछली, माँस, अण्डे आदि के उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ पर परिवहन और यातायात के साधनों का पूर्ण विकास हुआ है।

क्या आप जानते है-

- प्रेअरी क्षेत्र में गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन होने के कारण इसे विश्व का अन्नागार कहा जाता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. भूमध्य रेखा के दोनों ओर 10° से 10° अक्षाशों के बीच के क्षेत्र को.....कहते हैं।

   अ. अल्पाईन प्रदेश　　ब. टैगाप्रदेश

   स. भूमध्य रेखीय प्रदेश　　द. ये सभी

2. बस्तियों का विकास पहले हुआ–

   अ. समुद्र तट पर　　ब. नदियों के किनारे

   स. पहाड़ों पर　　द. इनमें से कोई नहीं

3. वाराणसी किस नदी के किनारे स्थित है–

   अ. गङ्गा　　ब. यमुना　　स. चम्बल　　द. गोमती

4. जूट की खेती के लिए कौन देश प्रसिद्ध है?

   अ. भारत　　ब. भूटान　　स. अफगानिस्तान　　द. अरब देश

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. ग्रामीण जनसंख्या .....पर निर्भर है।　　(व्यापार/कृषि)
2. लोगों व वस्तुओं के आवागमन साधनों को .....कहते हैं।　　(परिवहन/सञ्चार)
3. उत्तरी अमेरिका में शीतोष्ण घास के मैदान.....कहलाते हैं।　　(प्रेअरी/सवाना)
4. घास की अधिकता वाले क्षेत्रों को .....का मैदान कहा जाता है।　　(घास/जंगल)

सत्य/असत्य बताइए-

1. मानवीय प्रयासों से निर्मित पर्यावरण, मानवीय पर्यावरण है।　　(सत्य/असत्य)

2. नगरीय बस्तियाँ विरल बसी होती है। (सत्य/असत्य)

3. उत्तरी अमेरिका के मूल निवासी रेड इण्डियन कहलाते हैं। (सत्य/असत्य)

4. उत्तरीय अमेरीका के प्रेअरी क्षेत्रों में चिनुक नामक पवन बहती है। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. सञ्चार	क. कृषि, पशुपालन, आखेट, दस्तकारी
2. परिवहन	ख. मोबईल, रेडियों, दूरदर्शन, सोशल मिडिया
3. प्राथमिक गतिविधियाँ	ग. मक्का उत्पादन वाले क्षेत्र
4. अमेरिकी कृषि का हृदय	घ. बस, रेल गाड़ी, हवाई जहाज

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. मानव निर्मित पर्यावरण किसे कहते हैं ?
2. ग्रामीणों के घर कैसे होते हैं ?
3. सेल्वा किसे कहते हैं ?
4. गैण्डा कहाँ पाया जाता है ?
5. महोगनी के वृक्ष कहाँ पाये जाते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. परिवहन के प्रमुख साधनों का वर्णन कीजिए।
2. सञ्चार के साधनों का उल्लेख कीजिए।
3. शीतोष्ण घास के मैदान की जलवायु का उल्लेख कीजिए ?
4. भूमध्य रेखीय क्षेत्र के निवासियों का रहन–सहन का वर्णन कीजिए ।
5. अमेजन बेसिन में पाये जाने वाले वनों का उल्लेख कीजिए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. मानवीय पर्यावरण में परिवहन के महत्त्व का उल्लेख करो।
2. गङ्गा–ब्रह्मपुत्र बेसिन का वर्णन करो।

परियोजना कार्य-

1. गंगा नदी के तट पर स्थित नगरों को मानचित्र पर दर्शाइए ।

वेदभूषण द्वितीय वर्ष

इतिहास

अध्याय- 6

7 वीं से 18 वीं सदी के मध्य हुए परिवर्तनों को समझना

आइये जानें- नई और पुरानी शब्दावली, इतिहासकार और अध्ययन स्त्रोत, नवीन सामाजिक एवं राजनीतिक बदलाब समूह, क्षेत्र और साम्राज्य, समय एवं इतिहास कालखण्ड, व्यापार और नगर।

अरब भूगोलवेत्ता 'अल्-इदरीसी' ने 1154 ई. में विश्व का मानचित्र बनाया, जिसमें उसने विविध तथ्यों का समावेश किया। इस मानचित्र में दर्शाये गये भारतीय उप-महाद्वीप में भारत के दक्षिण भाग को उस स्थान पर दर्शाया गया है, जहाँ आज उत्तरी क्षेत्र है और श्रीलंका को ऊपर की ओर दिखाया गया है। इस मानचित्र में स्थानों का नामोल्लेख अरबी में किया गया है। इसमें उत्तरी भारत के क्षेत्र जैसे कन्नोज आदि को दर्शाया गया है। इसके 600 वर्ष पश्चात् 1720 ई. में फ्रान्सीसी मानचित्रकार 'ग्विलाम द लिस्ले' ने एटलस नूवो नाम से विश्व का मानचित्र बनाया। इदरीसी और लिस्ले के मानचित्र में दर्शाये गये भारत के क्षेत्रों में बहुत अधिक अन्तर है। जबकि वास्तविक रूप में वैदिक सभ्यता और संस्कृति का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के साथ ही सुदूर पूर्वी द्वीपों और पाश्चात्य देशों तक था।

नई और पुरानी शब्दावली- हम सब जानते हैं कि सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। हजारों वर्षों के परिवर्तन के साथ भाषा-बोली, खान-पान, रख-रखाव, संस्कृति, यहाँ तक कि संस्कार-व्यवहार में भी परिवर्तन देखा जाता है। समय के साथ-साथ सूचनाओं के सन्दर्भ बदलते हैं तो भाषा और उनके अर्थ भी बदलते हैं। ऐतिहासिक अभिलेख कई तरह की भाषाओं में मिलते हैं और ये भाषाएं भी समय के साथ परिवर्तित हुई हैं, उदाहरण के लिए मध्ययुग की फारसी, आधुनिक फारसी भाषा से भिन्न है। यह भिन्नता सिर्फ़ व्याकरण और शब्द भण्डार में ही नहीं आई है अपितु समय के साथ शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन हुआ है। उदाहरण के लिए **हिन्दुस्तान** शब्द को ही लीजिए। आज हम इसे आधुनिक राष्ट्र, राज्य **भारत** के अर्थ में लेते हैं। तेरहवीं सदी मे जब फ़ारसी के इतिहासकार 'मिन्हाज-ए-सिराज' ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया था, तो उसका आशय पंजाब, हरियाणा और गङ्गा-यमुना के मध्य स्थित क्षेत्रों से था। यह शब्द राजनीतिक अर्थ में उन क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो उस समय दिल्ली के सुल्तान के अधिकार क्षेत्र में आते थे। सल्तनत के प्रसार के साथ-साथ हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग भारत में इस्लामिक साम्राज्य के लिए राजनीतिक रूप से किया जाने लगा। ध्यान देने वाली बात है कि, सल्तनत कालीन

इस्लामिक इतिहासकारों द्वारा हिन्दुस्तान में दक्षिण भारत को शामिल नहीं किया गया था। इसके विपरीत 16 वीं सदी के आरम्भ में बाबर ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग इस उप-महाद्वीप के भूगोल, पशु-पक्षियों और यहाँ के निवासियों की संस्कृति का वर्णन करने के लिए किया। यह प्रयोग 14 वीं सदी के कवि अमीर खुसरो द्वारा प्रयुक्त शब्द **हिन्द** के ही कुछ-कुछ समान था। मगर जहाँ भारत को एक भौगोलिक और सांस्कृतिक तत्व के रुप में पहचाना जा रहा था, वहाँ हिन्दुस्तान शब्द में वे सांस्कृतिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय अर्थ नहीं जुड़े थे, जो हम आज जोड़ते हैं।

इतिहास लेखन की दृष्टि से इतिहासकारों को शब्दों का प्रयोग बहुत सावधानी पूर्वक करना चाहिए। क्योंकि भूतकाल में उन शब्दों के कुछ अलग ही अर्थ रहे होंगे। उदाहरण के लिए **विदेशी** शब्द ही ले लीजिए। हमारे लिए आज इसका अर्थ होता है, ऐसा व्यक्ति जो भारतीय नहीं हो। मध्ययुग में किसी गाँव में आने वाला कोई भी अनजान व्यक्ति, जो उस समाज व संस्कृति का अंग न हो, **विदेशी** कहलाता था। ऐसे व्यक्ति को हिन्दी में परदेशी और फारसी में अजनवी कहा जाता था।

इतिहासकार और उनके अध्ययन स्रोत- इतिहासकार विभिन्न कालखण्डों का अध्ययन करने के लिए भिन्न–भिन्न स्रोतों का सहारा लेते हैं। उदाहरण के लिए 7 वीं से 18 वीं सदी तक के लगभग इन हजार वर्षों के इतिहास को जानने के लिए स्रोतों के रूप में कुछ पारम्परिक स्रोतों तथा इस काल के सिक्कों, शिलालेखों, स्थापत्यों तथा पाण्डुलिपियों (हस्त लिखित सामग्री) पर निर्भर हैं। परन्तु इस काल में आश्चर्यजनक रूप से लिखित सामग्रियां मात्रात्मक और विविधता की दृष्टि से बढ़ गईं। साथ ही आगे के इतिहासकारों ने सूचनाओं के पूर्व स्रोतों का प्रयोग करना कम कर दिया। इस काल खण्ड में कागज की उपलब्धता और सस्ते होने के कारण इसका उपयोग धर्म ग्रन्थों, वृत्तांतों, अदालती दस्तावेजों आदि को लिखने में होने लगा। प्राचीन काल से ही शासक, मठ, मन्दिर एवं समाज के धनी व्यक्ति पाण्डुलिपियों का संग्रह करते थे। परन्तु इनका उपयोग और रखरखाव कठिन था। क्योंकि अभी तक छापेखाने नहीं

चित्र- 6.1 प्राचीन लेख

थे, अत: लेखन कार्य हाथों से ही होते थे। प्रतिलिपिक, मूल पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि बनाते थे। इस प्रतिलिपिकरण के समय शब्दों एवं वाक्यों में भारी फेर बदल हुए। इससे वास्तविक ज्ञान को जानने एवं समझने की समस्या पैदा हुई। उदाहरण के लिए 14 वीं सदी के जियाऊद्दीन बरनी ने अपने वृत्तान्त (1356 ईस्वी.) में लिखा और इसे 2 वर्ष बाद पुनः लिखा था। इन दोनों ही वृत्तान्तों में व्यापक अन्तर है। ऐसा ही पूर्व के कालों में सूचना प्रदान करने वाले मूल अभिलेखों के रूपान्तरण एवं प्रतिलिपि तैयार करते समय भी हुआ होगा। वर्तमान में पाण्डुलिपियों को पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों में देखा जा सकता है। इनसे तत्कालीन इतिहास की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

नवीन सामाजिक एवं राजनीतिक बदलाव समूह- 7 वीं से 18 वीं सदी के कालखण्ड के वास्तविक इतिहास का अध्ययन इतिहासकारों के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि इस कालखण्ड में निरन्तर परिवर्तित होती प्रौद्योगिकी के कारण अनेक प्रकार के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। इस कालखण्ड में लोगों की गतिशीलता बढ़ी। नये अवसरों की तलाश में लोग समूहों में सुदूर यात्रायें करने लगे थे। भारत की अपार सम्पदा, उन्नत ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति ने विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित किया। इस काल में समाज में अनेक समुदायों जैसे- राजपूत, कवि और चारणों आदि का महत्व बढ़ा। राजपूत शब्द क्षत्रिय वर्ण के लिए प्रयुक्त किया गया। इसके अन्तर्गत राजा, सामन्त, सेनापति और सैनिक आते थे, जो भारत के विभिन्न शासकों की सेनाओं में सेवारत थे। राजनैतिक दृष्टि से इस काल में महत्व प्राप्त करने के अवसरों का लाभ मराठा, सिक्ख, जाट, अहोम और कायस्थ जैसे समूहों ने भी उठाया।

क्या आप जानते है-

- अभिलेखागार से आशय उस स्थान से है, जहाँ दस्तावेजों और पाण्डुलिपियों को संग्रहित किया जाता है।
- पर्यावास से तात्पर्य किसी क्षेत्र के पर्यावरण और वहाँ के निवासियों की आर्थिक और सामाजिक जीवन शैली से है।

इस सम्पूर्ण कालखण्ड में क्रमश: प्राकृतिक पर्यावासों के रूप में बड़े पैमाने पर जंगलों को काट कर मैदान बनाना प्रारम्भ हुआ। इस कारण जंगलों पर आश्रित वनवासियों को अपने प्राकृतिक अधिवास छोड़ने पड़े और वे कृषक बन गए। कृषकों के ये नये समूह क्षेत्रीय व्यवस्थाओं जैसे समाज, बाजार, मठों एवं मन्दिरों से प्रभावित होकर भारतीय समाज के अंग बन गये। परिणामत: किसानों के पूर्व एवं नये समूहों के बीच आर्थिक और सामाजिक अन्तर उभरे। कुछ लोग कृषि कार्य और पशुपालन करते थे तथा खाली समय में दस्तकारी जैसे कार्य भी कर लेते थे। कार्य विस्तार के साथ सामाजिक अन्तर भी बढ़े। शनै: शनै: लोग जातियों और उपजातियों में विभक्त हो गये। इस विभाजन का मूल व्यवसाय ही रहा।

यद्यपि यह विभाजन स्थायी नहीं होता था। किसी जाति विशेष के हाथों में सत्ता, प्रभाव और संसाधनों पर नियन्त्रण के आधार पर समाज में उस समुदाय का स्थान परिवर्तित होता रहता था। स्व-समूह के सदस्यों के व्यवहार को नियन्त्रित करने के लिए जाति समूह अपने नियम बनाते थे। जातियों को अपने क्षेत्रीय रीति-रिवाजों का पालन करना पड़ता था। राज्य की सबसे छोटी ईकाई गाँव होती थी। जिस पर मुखिया का शासन होता था।

क्षेत्र और साम्राज्य- इस कालखण्ड में अनेक क्षेत्रों के भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक विशेषताएँ स्पष्ट हो चुकी थीं। ये क्षेत्र विशेष राजवंशों से जुड़ गए। इन राज्यों के मध्य आपसी टकराव होता रहता था। परिणामस्वरूप चोल, खिलजी, तुगलक और मुगल राजवंश इन क्षेत्रों में अपना विशाल साम्राज्य खड़ा किया। 18 वीं सदी में मुगल वंश का अन्त हुआ। क्षेत्रीय शक्तियां पुन: उभरने लगीं। परन्तु विशाल साम्राज्यों के लम्बे शासन के चलते क्षेत्रों की प्रकृति बदल गई थी। परन्तु अनेक छोटे-बड़े राज्यों का शासन कायम रहा और उनकी बहुत सी बातें भारत के अधिकतर भाग पर फैले इन क्षेत्रों को विरासत में प्राप्त थीं। इसका ज्ञान हमें उन अनेक परम्पराओं से मिलता है जो इन क्षेत्रों में प्रचलित थीं। इनमें से कुछ परम्पराएँ एक-दूसरे से भिन्न और कुछ समान थीं। ये पारम्परिक समानताएँ और भिन्नताएँ हमें प्रशासन, अर्थव्यवस्था, संस्कृति तथा भाषा के सन्दर्भ में देखने को मिलती हैं। इन एक हजार वर्षों में विविध क्षेत्रों की प्रकृति कभी भी कटकर अलग से नहीं पनपी थीं। यद्यपि इनकी मूल चारित्रिक विशेषताएं बनी रहीं तथापि समन्वयकारी सर्वक्षेत्रीय शक्तियों का प्रभाव उन पर पड़ा।

धर्म- इस परिवर्तनकारी काल में धार्मिक परम्पराओं में भी अनेक बड़े परिवर्तन हुए। यद्यपि धार्मिक दृष्टि से दैवत्त्व पर लोगों की आस्था व्यक्तिगत होती थी। परन्तु सामान्यत: इसका स्वरूप सामूहिक होता था। अर्थात् धर्म प्राय: स्थानीय समुदायों के सामाजिक और आर्थिक संगठन से सम्बन्धित होता था। इन समुदायों का जैसे-जैसे सामाजिक स्वरूप परिवर्तित हुआ तो आस्थायें भी परिवर्तित हुईं। परिवर्तन के इस दौर में प्राचीन हिन्दू धर्म में नये देवी देवताओं की पूजा, बड़ी मात्रा में मन्दिरों का निर्माण, समाज में पुरोहित वर्ग का बढ़ता महत्त्व इसी बात को दर्शाता है। भक्ति की अवधारणा भी इस काल में प्रकट हुई।

इस युग में भारतीय उपमहाद्वीप में नये धर्मों का प्रवेश हुआ। इस्लाम धर्म सर्वप्रथम 7 वीं सदी में व्यापारियों, अप्रवासियों तथा इस्लामिक धार्मिक नेता और योद्धाओं द्वारा लाया गया। ये लोग कुरान शरीफ़ को अपना धर्म ग्रन्थ मानते और अल्लाह की सत्ता को स्वीकारते थें। अनेक शासकों ने इस्लाम और उनके विद्वानों को संरक्षण दिया था। जो इस्लाम की अलग-अलग व्याख्या करते थे। आरम्भ में इस धर्म का विस्तार करने वाले को **खलीफ़ा** कहा जाता था। इस्लामिक न्याय सिद्धान्तों, धर्म सिद्धान्तों एवं रहस्यवादी विचारों की प्रचलित विभिन्न परम्पराओं में अनेक अन्तर रहे हैं।

समय एवं इतिहास कालखण्ड- इतिहासकारों ने समय के बदलाव को अपने नजरिए से अलग ही देखा है। उनकी दृष्टि सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक बदलाव को देखना एवं समझना है। इतिहासकारों ने इस काल के भारतीय इतिहास को तीन कालखण्डों में विभाजित किया है- हिन्दू, मुस्लिम और ब्रिटिश। इस विभाजन का आधारभूत विचार था कि शासकों का धर्म ही ऐतिहासिक रूप से परिवर्तित होता है। जबकि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कोई विशेष बदलाव नहीं आता। इतिहास लेखन की इस अवधारणा से भारत की विस्तृत विविधता की उपेक्षा हुई।

7 वीं शताब्दी के पूर्व का इतिहास, जिसमें मानव का शिकारी एवं संग्राहक जीवन, प्रारम्भिक कृषि कर्म, अधिवासों के रूप में नगर और ग्राम, प्रारम्भिक दौर के राज्य और साम्राज्य के स्वरूप को प्राचीन इतिहास कहा गया। काल विभाजन की दृष्टि से 7 वीं से 18 वीं सदी तक के एक हजार वर्ष अनेक परिवर्तनों के साक्षी रहे हैं। 16 वीं और 18 वीं सदियां, 8 वीं या 11 वीं सदियों से अनेक रूपों में भिन्न रही। अत: इस सम्पूर्ण काल को एक ही ऐतिहासिक कालखण्ड के रूप में देखना समस्यापरक है। इतिहासकारों द्वारा प्राय: मध्यकाल की तुलना आधुनिक काल से की जाती है। इस तुलना में आधुनिकता के साथ बौद्धिक और भौतिक उन्नति को जोड़कर देखा जाता है जबकि मध्यकाल को रूढ़िवादी कहा जाता है। परन्तु ऐसा नहीं था। क्योंकि इन सहस्त्र वर्षों में प्राय: भारतीय समाज परिवर्तित होता रहा। अनेक क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से इतने समृद्ध हो गये थे की विदेशी व्यापारिक कम्पनियाँ भी उनकी ओर आकर्षित हुई इसलिए इस पुस्तक के अध्ययन के समय परिवर्तन के चिन्हों और सक्रिय ऐतिहासिक प्रक्रियाओं पर ध्यान अवश्य देना होगा।

व्यापार और नगर- मध्ययुगीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास तीव्र गति से हुआ था। उस काल में अधिकांशत: बंजारा समुदाय व्यापार कार्य करते थे। व्यापारीगण सुरक्षादि कारणों से अपने राजा से पारपत्र (आज्ञा पत्र) लेकर समूहों में देश-विदेश में व्यापार करने जाते थे। ये व्यापारी अपने हितों की रक्षा के लिए गिल्ड (व्यापार संघ) बनाते थे। दक्षिण भारत में इन समूहों को **मणिग्रामम्** और **नानादेशी** कहा जाता था। अन्य व्यापारी समूहों में चेट्टियार, मारवाड़ी, ओसवाल, हिन्दू बनिया और मुस्लिम बोहरा (गुजरात) आदि थे, जो वर्तमान में भी व्यापार- वाणिज्य के क्षेत्र में अग्रणी हैं।

ये व्यापारी विदेशों में जाकर कपड़े व मसाले विक्रय करते थे और वहाँ से टिन, सोना, चांदी, आदि लाकर यहाँ बेचते थे। विदेशी व्यापारी भी भारत से मसाले, सूती कपड़े आदि खरीदकर अपने देशों में बेचते थे। यूरोपीय व्यापारियों को इन वस्तुओं ने ही भारत में व्यापार करने के लिए प्रेरित किया था इसलिए भारत के तटीय क्षेत्रों में पत्तनों के विकसित होने के साथ-साथ विदेशी व्यापारी भी बसने लगे थे। कालान्तर में ये क्षेत्र नगरों के रूप में विकसित हुए, उदाहरण के लिए सूरत और मसूलीपट्टनम् ।

मध्ययुगीन भारत के नगर – मध्यकाल में भारत में मुख्यत: तीन प्रकार के नगर थे- राजधानी नगर, धार्मिक नगर और व्यापारिक नगर।

राजधानी नगर- मध्ययुगीन भारत में अनेक नगरों के विकास का कारण राजाओं, महाराजाओं एवं शासकों की राजधानी होना था। जैसे- दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, हम्पी और तंजावुर आदि। **तंजावुर** नगर चोल शासकों की राजधानी था। यह नगर कावेरी नदी के तट पर बसा होने के कारण बहुत ही समृद्ध था। इस नगर में चोल राजा **राजराज** ने विश्वप्रसिद्ध भगवान शिव को समर्पित **राजराजेश्वर** मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस नगर के वास्तुकार का नाम **कुंजरमलन राजराज पेरूथच्चन** था। इस नगर के राजमहलों की स्थापत्य कला बड़ी आकर्षक एवं अद्भुत थी। इस नगर के पास ही **उरैयूर** नगर था, जो सूती वस्त्र, मूर्तियों आदि के लिए प्रसिद्ध था।

धार्मिक नगर- मध्ययुग के कुछ नगरों का विकास इसलिए हुआ कि वहाँ मन्दिर, मठ या तीर्थ-क्षेत्र होने के कारण लोगों की धार्मिक आस्था का केन्द्र थे। इन मन्दिरों एवं मठों को तत्कालीन राजा, महाराजा, व्यापारी, साहूकारों द्वारा भूमि और धन आदि दान में दिया जाता था। इस धन का उपयोग पुजारियों एवं तीर्थ पुरोहितों द्वारा लोक कल्याण के कार्यों में किया जाता था। इन मन्दिरों, मठों में रोजगार मिलने के कारण इनके आस–पास बस्तियाँ बसी, जो धीरे–धीरे नगरों में परिवर्तित हो गई। इस प्रकार से नये धार्मिक नगरों का प्रार्दुभाव हुआ। ऐसे नगरों में विदिशा (मध्यप्रदेश), सोमनाथ (गुजरात), कांचीपुरम (तमिलनाड़ु), तिरुपति (आन्ध्रप्रदेश), अजमेर (राजस्थान), वृंदावन (उत्तरप्रदेश), अमृतसर (पञ्जाब) आदि मुख्य हैं।

मानचित्र-6.1 मध्यकालीन भारत के प्रमुख नगर

व्यापारिक नगरों का उदय- मध्ययुगीन भारत में दो प्रकार के व्यापारिक नगरों का विकास हुआ था- छोटे व्यापारिक नगर और बड़े व्यापारिक नगर।

छोटे व्यापारिक नगर- 8 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में व्यापारिक महत्त्व के छोटे–छोटे नगरों का विकास होने लगा था। इन नगरों के विकास मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में वृद्धि था। ग्राम निवासी अपनी पैदावार को बेचने के लिए इन स्थानों पर आते थे, जिन्हें **मंडपिका** (मंडी) कहा जाता था। इन स्थानों की गलियों में छोटे-छोटे बाजार होते थे, जिन्हें 'हाट' कहा जाता था। इन बाजारों में शिल्प, विविध धातुओं की सामग्री, मिट्टी के बर्तन, तेल, खांडसारी और वस्त्र (बाजार) आदि अनेक प्रकार की दुकानें होती थी। अत: आस–पास के लोग यहाँ पर वस्तुओं के क्रय-विक्रय करने के लिए आते थे। इन स्थानों पर तत्कालीन जमींदारों एवं सामन्तों ने महल और किले बनाकर धीरे–धीरे अपने राज्य स्थापित किया और कर वसूलने का कार्य करने लगे थे।

बड़े व्यापारिक नगर- 17 वीं-18 वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों की ईस्ट इंडिया कम्पनियाँ, जब भारत में व्यापार करने आई तो उन्होनें अपनी राजनीतिक, प्रशासनिक एवं व्यापारिक गतिविधियों को पूर्ण करने के लिए नये नगरों बम्बई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों का विकास किया, जिससे पूर्व मध्ययुगीन नगर धीरे-धीरे अपना वैभव खो कर पतन की ओर अग्रसर हुए। यूरोपीय देशों में भारतीय वस्त्रों की अधिक मांग होने के कारण भारतीय वस्त्र उद्योग का तीव्र विकास हुआ था इसलिए भारत में वस्त्रों से सम्बन्धित उद्योग जैसे- बुनाई, कताई, रंगाई आदि का विकास हुआ था। यूरोपीय देशों की नौ-सैनिक शक्ति अच्छी होने के कारण इनका समुद्री व्यापार नियंत्रण हो गया था। परिणामस्वरूप भारतीय व्यापारियों का व्यापार घटने लगा। अत: भारतीय व्यापारी अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एजेन्ट के रूप में कार्य करने लगे। 18वीं सदी में हुए वैश्विक परिवर्तनों का प्रभाव भारतीय व्यापार-वाणिज्य पर भी पड़ा था।

सूरत- मुगलकाल में सूरत व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था। इस नगर में सभी वर्ग, धर्म व जाति के लोग रहते थे। यहाँ का सूती वस्त्र, सुनहरी, गोटा जरी का काम विश्व में प्रसिद्ध था। यहाँ काढियावाड़ी सेठों, साहुकारों और महाजनों की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ थी। सूरत की हुंडियों (एक ऐसा दस्तावेज जिसमें जमा रकम का हिसाब रहता था) को विदेशों में मान्यता प्राप्त थी। सत्रहवीं शताब्दी में यहाँ अंग्रेजों, डचों एवं पुर्तगालियों ने अपने गोदाम स्थापित कर लिए थे। अंग्रेज इतिहासकार ओविंगटम(1689) के अनुसार **यहाँ एक साथ 100 जहाज बंदरगाह पर लंगर डाले रहते थे, जिससे इस नगर की व्यापारिक उन्नति प्रकट होती है।** 1668 ईस्वी में इसे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपना मुख्यालय बनाया था। सूरत आज भी प्रमुख व्यापारिक नगर है।

मसूली पट्टनम- मसूलीपट्टनम् (मछलीपट्टनम) नगर आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के किनारे पत्तन नगर है। यह नगर मसालों और छींटदार वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था। इस नगर में तेलुगु चेट्टीयार,

फारस के सौदागरों एवं गोलकुण्डा के अमीर वर्गों का व्यापार अधिक था। 1686–87 ईस्वी में मुगल बादशाह औरंगजेब ने गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।कम्पनी काल में इस नगर पर हालैंड एवं इंग्लैड दोनों देशों ने कब्जा करने का प्रयास किया था।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. अल्-इदरीसी ने ..... भारत का मानचित्र बनाया।

   अ. 1154 ई. ब. 1190 ई. स. 1290 ई. द. 1425 ई.

2. यूरोप के लोग समुद्री यात्रा के लिए.....इस्तेमाल करते थे।

   अ. नक्शा ब. घर स. खिलौने द. दवात

3. अभिलेखों को..... रखा जाता है।

   अ. अभिलेखागार में ब. पुलिस थाने में

   स. जेल में द. उपर्युक्त सभी

4. अठारहवीं सदी में किस देश के भूगोलवेत्ता ने..... का मानचित्र बनाया।

   अ. भारत ब. फ्रान्स स. रूस द. नेपाल

5. तंजावुर नगर .....राज्य की राजधानी था।

   अ. चोल ब. चालुक्य स. विजयनगर द. राष्टकूट

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये-

1. मूल पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि.....बनाते थे। (नकलनवीस/खजांची)
2. 1154 ई में .....ने विश्व का मानचित्र बनाया। (लिस्ले/अल इदरीसी)
3. भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम धर्म .....में आया। (5वीं सदी/7वीं सदी)
4. व्यापारी समूहों को..... कहते थे। (गिल्ड/शील्ड)

सत्य/असत्य बताइए-

1. सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है। (सत्य/असत्य)
2. मुगल शासन का अन्त 20वीं सदी में हुआ था। (सत्य/असत्य)
3. भारतीय इतिहास को तीन कालखण्डों में विभाजित किया गया है। (सत्य/असत्य)
4. मसूलीपट्टनम कर्नाटक राज्य में है। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. लिस्ले	क. 7 वीं सदी
2. जियाउद्दीन बरनी	ख. 1720 ई.
3. इस्लाम	ग. 1668 ई.
4. सूरत	घ. 1356 ई.

अति लघूत्तरीय प्रश्न-

1. अभिलेख किसे कहते हैं?
2. प्राचीन काल में नक्शे का उपयोग कहाँ होता था ?
3. ब्रिटिश इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को कितने भागों में बांटा था ?
4. तंजावुर नगर के वास्तुकार का नाम था?
5. दक्षिण भारत में व्यापारियों के समूह को क्या कहते थे?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. नई और पुरानी शब्दावलियों को स्पष्ट कीजिए।
2. इतिहासकारों की सबसे प्रमुख समस्या क्या थीं ?
3. 7 वीं से 18 वीं सदी के मध्य हुए सामाजिक परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए।
4. मध्ययुगीन भारत के व्यापार के बारे में बताइए?
5. धार्मिक नगरों के विकास को समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. अभिलेखागारों की इतिहास संरक्षण के रुप में भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. समय और इतिहास के कालखण्डों पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।
3. 18वीं सदी के नगरों व व्यापारिक केन्द्रों पर प्रकाश डालिए।

परियोजना-

1. आपके गाँव अथवा शहर के अभिलेख कहाँ रखे जाते हैं ? इनका संधारण और देखभाल कौन करता है ?

अध्याय–7

मध्यकालीन भारत- नए राजवंशों का उदय

आइये जानें- राष्ट्रकूट, पाल,चोल, गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, चौहान वंश, दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य ।

भारतीय उपमहाद्वीप में 7 वीं से 12 वीं शताब्दी के मध्य भारत में अनेक राजवंशों का उदय हुआ। इस कालखण्ड में चोल, राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार प्रमुख राजवंश थे। छठी शताब्दी के उपरान्त भारत के अनेक क्षेत्रों में बड़े जमींदारों, योद्धाओं और सरदारों का उदय हुआ। शासक इन्हें अपना सामान्त मानते थे। शासक इन सामन्तों से अपेक्षा करते थे कि वे उन्हें सैन्य सहायता प्रदान करें एवं दरबार में उपस्थित होकर उपहार भेंट करें। सत्ता और सम्पत्ति प्राप्त करने के उपरान्त, ये सामन्त अपने आपको महासामन्त, महामण्डलेश्वर आदि घोषित कर देते थे और कभी-कभी अपने शासक से स्वतन्त्र हो जाते थे। इस प्रकार 7 वीं से 12 वीं शताब्दी के मध्य में निम्न राजवंशों का उदय हुआ।

सारणी 7.1

ध्रुव	**780-793 ई.**
गोविन्द ततीय	793-814 ई.
अमोघवर्ष	814-878 ई.
कृष्ण	878-914 ई.

1. **राष्ट्रकूट**- राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना 736 ई. में दन्तिदुर्ग ने चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन द्वितीय को हरा कर की थी। दन्तिदुर्ग वातापी के चालुक्यों के अधीन एक सामन्त था। दन्तिदुर्ग ने नासिक को अपनी राजधानी बनाया और हिरण्यगर्भ नामक एक अनुष्ठान भी किया। जिससे वह जन्म से क्षत्रिय न होते हुए भी क्षत्रियत्व प्राप्त कर लिया। ऐलोरा के प्रसिद्ध **कैलाश मन्दिर** का निर्माण राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम (756-772 ई.) में कराया था।

सारणी 7.2

धर्मपाल	**770-810 ई.**
देवपाल	810-850 ई.
विग्रहपाल	850-860 ई.
नारायण पाल	860-915 ई.

2. **पालवंश**- पालवंश के संस्थापक गोपाल थे। इस वंश का शासन 750 ई. से 1174 ई. तक सम्पूर्ण बङ्गाल एवं बिहार में रहा। इस वंश का सबसे महान शासक धर्मपाल था। धर्मपाल ने ही भागलपुर के पास विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। पाल शासकों ने लगभग 400 वर्ष तक शासन किया, जिनमें से अधिकांश शासक बौद्धधर्म के अनुयायी थे।

3. **चोलवंश**- चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय (850-880 ई.) ने 9 वीं शताब्दी में की थी। विजयालय प्रारम्भ में पल्लवों का सामन्ती सरदार था। जिसने तंजौर पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया। राजराजेश्वर (985-1014 ई.) चोल वंश के सबसे शक्तिशाली शासक हुए। राजराजेश्वर ने सर्वप्रथम पश्चिम के गङ्गों को हराकर उनका प्रदेश अपने साम्राज्य में मिला लिया। राजराजेश्वर के पश्चात् उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1012-1044 ई.) भी पराक्रमी राजा हुआ। राजेन्द्र प्रथम को राजराजेश्वर ने अपनी मृत्यु से दो वर्ष पहले ही अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। राजेन्द्र प्रथम ने पाण्ड्य और चेर राज्यों पर विजय प्राप्त करने के बाद उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया था। चोल शासकों के शासन को तमिल साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में कंबन-रामावतार, तोलामोलि-सूलामणि तथा तिरुतक्कदेवर-जीवक चिंतामणि' नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

चित्र- 7.1- राजा राजेन्द्र

सारणी 7.3

मण्डलम	**प्रान्त**
नाड़ु	जिला
कुर्रम	ग्राम समूह

4. **गुर्जर-प्रतिहार वंश**- गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की स्थापना 725 ई. में नागभट्ट प्रथम ने की थी। नागभट्ट प्रथम पहले कन्नौज राज्य में एक दरबारी था। गुर्जर-प्रतिहार वंश में वत्सराज, भोजराज प्रथम तथा महेन्द्रपाल प्रथम शक्तिशाली शासक हुए। इस राजवंश ने भारत के बड़े भू-भाग पर 8 वीं शताब्दी से 11 वीं शताब्दी तक शासन किया। इस वंश का अन्तिम शासक यशपाल था।

सारणी 7.4

वत्सराज	**783-795 ई.**
नागभट्ट द्वितीय	795-835 ई.
रामभद्र	835-836 ई.
मिहिरभोज	836-889 ई.
महेन्द्रपाल	890-910 ई.

राज्यों में प्रशासन- इन नए राजवंश के राजाओं ने कई उपाधियाँ धारण की जैसे- महाराजाधिराज, त्रिभुवनचक्रवर्तिन आदि। ये शासक अपने सामन्तों, किसान, व्यापारी तथा ब्राह्मणों के संगठनों में अपनी सत्ता को साझा करते थे। इन सभी राज्यों में पशुपालकों, किसानों, कारीगरों, व्यापारियों पर वित्तीय स्थिति को सुदृढ करने के लिए **कर** (टैक्स) लगाया जाता था। इस कर का उपयोग किलों व मन्दिरों के निर्माण तथा युद्धों में होता था। सामान्यतः प्रभुत्त्वशाली परिवार के सदस्यों को ही कर वसूली के लिए नियुक्त किया जाता था। यह नियुक्ति प्रायः वंशानुगत होती थी।

चोलवंश के अभिलेखों से पता चलता है कि, उस समय 400 से अधिक कर वसूले जाते थे। सबसे अधिक **वेट्टी** नामक कर जबरन श्रम के रूप में वसूला जाता था।

प्रशस्तियाँ और भूमि अनुदान- किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा में लिखा गया ग्रन्थ प्रशस्ति कहलाता है। इन प्रशस्तियों से हमें यह जानकारी मिलती है कि राजा अपने आपको प्रदर्शित करना चाहते थे जैसे- विजयी, योद्धा, शूरवीर आदि। प्रशस्ति किसी वंश के बारे में भी बताती है। प्रशस्तियाँ विद्वान ब्राह्मणों द्वारा लिखी जाती थी, जो प्रशासन (राज्य संचालन) में सहायता करते थे। शासक प्रायः ब्राह्मणों को भूमि दान में देकर सम्मानित करते थे। ये ताम्रपत्रों पर लिखित अनुदान, भूमि प्राप्त करने वाले को दिये जाते थे। **चोलों के एक भूमि अनुदान के अनुसार- हमने मिट्टी की मेड़ व झाड़ियाँ लगाकर भूमि का सीमाङ्कन कर दिया हैं। इस भूमि पर फलदार वृक्ष, पानी, बगीचे-फलोद्यान, खुली जगह, चबूतरे, नहरें, झीले, आदि है। जिसको यह भूमि प्राप्त होती है, वह इससे कर वसूल सकता है।** 12 वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा 'राजतरङ्गिणी' में कश्मीर के शासकों का इतिहास लिखा गया।

क्या आप जानते है-

- वर्तमान पंचायती शासन व्यवस्था चोल प्रशासन की देन है।चोल राज्य में गाँव से लेकर मंडलम तक स्वशासन की व्यवस्था थी। उस समय गाँवों में दो प्रकार के संगठन- उर (सामान्य लोगों का) और सभा (विशिष्ट लोगों का) कार्य करते थे।

त्रि-राष्ट्र संघर्ष- छठीं शताब्दी में राजनीतिक शक्ति का केन्द्र पाटलिपुत्र के स्थान पर कन्नौज हो गया था। कन्नौज, गङ्गानदी के किनारे स्थित होने के कारण व्यापारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथा गङ्गा-यमुना के मध्य अवस्थित होने से उत्तर भारत का सबसे उपजाऊ मैदान था। इस कारण गुजरात के **गुर्जर प्रतिहार, दक्कन के राष्ट्रकूट एवं बङ्गाल के पाल शासकों ने** कन्नौज पर अधिकार करने के लिए लगभग 200 वर्षों तक संघर्ष किया, जिसे इतिहास में **'त्रि-राष्ट्र संघर्ष'** कहा गया है। इस संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहार राजाओं की विजय हुई।

भारतीय शासकों ने बड़े-बड़े मन्दिरों का निर्माण करवा कर मन्दिर स्थापत्यकला का प्रदर्शन किया। परन्तु जब बाहरी आक्रान्ताओं ने उपमहाद्वीप पर आक्रमण किया तो उन्हें यहाँ के मन्दिरों को मुख्य रूप से निशाना बनाया। क्योंकि यहाँ के मन्दिर धन-सम्पदा से बहुत सम्पन्न थे। गजनी के शासक सुल्तान महमूद (997 ई. से 1030 ई.) ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया। इसके आक्रमण का प्रमुख केन्द्र गुजरात का सोमनाथ मन्दिर होता था। सोमनाथ मन्दिर से वह अपार धन, सम्पदा लूटकर गजनी ले गया तथा मन्दिर को भी अत्यधिक क्षति पहुँचाई। महमूद गजनी ने भारतीय उपमहाद्वीप के बारे में

जानकारी प्राप्त करने के लिए अलबरूनी को यहाँ का इतिहास लिखने के लिए नियुक्त किया। अलबरूनी ने संस्कृत विद्वानों की सहायता से भारत उपमहाद्वीप का इतिहास **'किताब-अल-हिन्द'** लिखा था।

चौहानवंश- चाहमान वंश जिसे चौहान वंश भी कहा जाता है, एक भारतीय राजपूत राजवंश था। चौहान वंश के शासकों ने 7 वीं शताब्दी से लेकर 12 वीं शताब्दी तक राजस्थान एवं दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। प्रारम्भ में चौहानों ने शाकम्भरी (सांभर) को अपनी राजधानी बनाया। राजा अजयराय ने 12 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अजयमेरू (अजमेर) को अपनी राजधानी बना लिया। इस कारण चौहानों को

सारणी 7.4

विग्रहराज प्रथम	**734-759 ई.**
गोविन्दराज प्रथम	809-836 ई.
विग्रहराज द्वितीय	971-988 ई.
विग्रहराज तृतीय	1070-1090 ई.
पृथिवीराज चौहान	1178-1192 ई.

क्या आप जानते है-

- पृथिवीराज चौहान के विषय में जानने के प्रमुख स्रोत- पृथिवीराज रासो, पृथिवीराज विजय और हम्मीर महाकाव्य है। पृथिवीराज रासो के रचयिता चन्दरबरदाई हैं, जो मित्र और राजकवि थे। पृथिवीराज रासो और प्रबंध चिंतामणि के अनुसार पृथिवीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को इक्कीस बार युद्ध में हराया था। जबकि तत्कालीन मुस्लिम लेखकों ने इतिहास को पक्षपातपूर्ण तरीके से प्रस्तुत कर दोनों के मध्य दो युद्दों का ही उल्लेख किया है।
- कहा जाता है कि तराइन के द्वितीय युद्ध हार के बाद पृथिवीराज को बन्दी बनाकर मोहम्मद गोरी अपने साथ ले गया। दण्ड स्वरूप गोरी के आदेश पर पृथिवी राज को अँधा कर दिया गया। गोरी ने पृथिवीराज के शब्दभेदी बाण की चर्चा सुन रखी थी। इसकी वास्तविकता को परखने के लिए उसने पृथिवीराज से शब्दभेदी बाण चलाने के लिए कहा। चन्द्रबरदाई ने संकेतों के माध्यम से गोरी की स्थिति पृथिवीराज को बताई। जैसे ही गोरी ने आदेश दिया, पृथिवीराज के बाण ने गोरी की इहलीला समाप्त कर दी। जब तक गोरी के सैनिक पृथिवीराज तक पहुँचते उसके पूर्व ही चन्द्रबरदाई ने अपना खंजर पृथिवीराज को भोंक कर पुनः उसी खंजर को स्वयं के सीने में उतार दिया।

अजमेर का चौहान भी कहा जाता है।

चौहानों को अपने साम्राज्य विस्तार के लिए गुजरात के चालुक्यों और उत्तरप्रदेश के गहड़वालों से भी युद्ध करना पड़ा। चौहान वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक पृथिवीराज तृतीय (1168-1192 ई.) हुआ, जिसे इतिहास में **पृथिवीराज चौहान या राय पिथौरा** के नाम से जाना जाता है। पृथिवीराज चौहान तेरह वर्ष की आयु में 1178 ई. में अजमेर का शासक बना। उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसके नाना अनंग पाल तोमर ने उसे दिल्ली राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया। इन दोनों राजवंशों के शासनकाल में

दिल्ली एक महत्वपूर्ण और समृद्धशाली व्यापारिक केन्द्र बना। इसी काल में दिल्ली शहर में जैन व्यापारियों द्वारा मन्दिरों का निर्माण करवाया गया। इस काल में प्रचलित देहलीवाल सिक्के यहीं ढाले जाते थे।

1191 ई. में पृथिवीराज चौ हान ने अफगान शासक मुहम्मद गोरी को तराइन के प्रथम युद्ध में परास्त किया। किन्तु एक वर्ष बाद ही मुहम्मद गोरी पूर्ण तैयारी के साथ पुन: तराइन के मैदान में युद्ध के लिए आया। तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में पृथिवीराज चौहान की हार हुई। इसी हार के साथ भारत में हिन्दू राजशाही प्रायः समाप्त हो गई।

चित्र- 7.2 पृथिवीराज चौहान

दिल्ली सल्तनत- इतिहासकारों ने 1206 से 1526 ईस्वी तक के कालखण्ड को सल्तनत काल कहा है। इस दौरान भारत पर शासन करने वाले 5 मुस्लिम वंश- गुलाम वंश (1206 से 1290), खिलजी वंश (1290 से 1320), तुगलक वंश (1320 से 1414), सैयद वंश (1414 से 1451) तथा लोदी वंश (1451 से 1526) थे। जिनके शासकों को सुल्तान कहा जाता था। इनके शासन काल को **सल्तनत-ए-हिन्द** या **सल्तनत-ए-दिल्ली** कहा जाता है।

गुलाम वंश- गोरी की मृत्यु के पश्चात् उसके द्वारा भारत में विजित क्षेत्रों पर उसके गुलाम और विश्वासपात्र सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने 12 जून 1206 को सत्ता सम्भाली। यहीं से दिल्ली सल्तनत की सत्ता प्रारम्भ हुई। मुस्लिम इतिहासकारों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को **हातिमताई** की संज्ञा दी है। उसने अपने गुरु बख्तियार काकी की याद में कुतुबमीनार की नींव रखी थी। अजमेर में संस्कृत पाठशाला को तुडवाकर **ढाई दिन का झोंपड़ा** नामक मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। 1210 ईस्वी में चौगान खेलते समय घोड़े से गिर कर इसकी मृत्यु हो गई।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)- इल्तुतमिश को गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। वह ऐबक का दामाद एवं गुलाम था। उसे **गुलामों का गुलाम** कहा जाता है। उसने 1229 ईस्वी में बगदाद के खलीफा से वैधानिक शासक की उपाधि ग्रहण की थी। उसने अपना शासन चलाने के लिए चालीसा (40 रईस) का गठन किया था। उसे 1233-34 ई. में नागदा के गुहिलोत और गुजरात के सोलंकी शासकों ने परास्त किया था। परन्तु उसने इसके बाद मालवा पर आक्रमण कर, भिलसा नगर के 300 मन्दिर और महाकाल मन्दिर उज्जैन को क्षति पहुँचाई। उसने अपने राज्य का विभाजन इक्ता (प्रान्त) नामक प्रशासनिक इकाईयों में किया था।

रजिया सुल्तान (1236-1240)- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद चालीसा सरदारों ने इल्तुतमिश के पुत्र रूकऊद्दीन फ़िरोज को सुल्तान बनाया था। परन्तु उसकी अयोग्यता के कारण इक्तेदारों (प्रान्तपति) एवं जनता ने इल्तुतमिश की पुत्री रजिया को सुल्तान बनाया। रजिया की गतिविधियों से चालीसा के सरदार नाराज थे। अत: शीघ्र ही उसे पदच्युत कर दिया गया। इसके बाद 1240 से 1265 ईस्वी तक के गुलाम वंश के उत्तराधिकारी अयोग्य एवं कमजोर सिद्ध हुए थे।

गयासुद्दीन बलबन (1265-1290)- बलबन, सुल्तान इल्तुतमिश का दास था। परन्तु वह अपनी योग्यता के बल पर इक्तादार (प्रान्तपति) बना था। उसे उलगु खाँ की उपाधि दी गई थी। बलबन का प्रमुख कार्य चालीसा सरदारों की शक्ति को समाप्त करना था। वह अपने राजत्व सिद्धान्त के लिए भी इतिहास में जाना जाता है।

खिलजी वंश (1290-1320)- गुलाम वंश के सुल्तान भारत में सल्तनत को स्थायित्व एवं सुदृढता प्रदान नहीं कर पाये थे। जब 13 वीं सदी में तुर्की शासन की सत्ता खिलजियों के हाथ में आई तो उसने राजसत्ता को भारत में दृढता प्रदान करने का कार्य किया। खिलजी साधारण वर्ग से थे इसलिए वे भली-भाँति जानते थे कि जब तक वे भारतीय मुसलमानों को प्रशासन में शामिल नहीं करेंगे तब तक भारत में सत्ता स्थापित करना कठिन है। 1290 ईस्वी में जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की थी। परन्तु वह अपने शासन के 6 वर्षों में आन्तरिक कलहों से परेशान रहा था।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)- अलाउद्दीन खिलजी 1296 ई. में अपने चाचा और ससुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके दिल्ली का सुल्तान बना था। वह उदारता व मानवतावाद के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करता था। उसने रणथम्भौर (1301 ईस्वी), चित्तौड़गढ (1303 ईस्वी) तथा जालौर (1308 ईस्वी) पर आक्रमण किये। चित्तौड़गढ़ युद्ध के समय वहाँ की रानी पद्मिनि ने 16000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया था। अलाउद्दीन खिलजी ने सर्वप्रथम दक्षिण भारत पर देवगिरि एवं द्वारसमुद्र पर आक्रमण किया और वहाँ की धन सम्पदा को लूटा था। इस अभियान में इसका सेनापति मलिक काफूर था। अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक सुधारों में- स्थायी सेना का गठन, सैनिकों को नकद वेतन, घोडों को दागने की प्रथा और बाजार नियन्त्रण व्यवस्था को लागू किया था।

तुगलक वंश- 1320 ईस्वी में खुसरो खाँ को पराजित करके गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना। 1324 ईस्वी में बङ्गाल विद्रोह को दबाने के लिए सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक बङ्गाल पहुँचकर विद्रोह का दमन कर दिया। इस अभियान से वापस लौटते समय दिल्ली के पास उसके पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक ने उसके स्वागत के लिए लकड़ी का महल बनवाया था। उसमें आग लगने से गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु

हो गई थी। कुछ इतिहासकार ऐसा मानते है कि मुहम्मद बिन तुगलक ने ही इस महल में आग लगवाई थी। उसने भारत में सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाया था।

मुहम्मद बिन तुगलक (1324-1351)- मुहम्मद बिन तुगलक को अपने कार्यों एवं योजनाओं के कारण सर्वाधिक विवादास्पद सुल्तान माना जाता है। उसके शासन काल में गङ्गा-यमुना के दोआब में कर वृद्धि, दिल्ली सल्तनत की राजधानी दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद (देवगिरी) में जन-बल समेत हस्तान्तरित करना, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन आदि योजनाओं के असफल होने के कारण इतिहाकारों ने उसे पागल बादशाह की उपाधि दी है। 1351 ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई।

फिरोजशाह तुगलक (1351-1388)- मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद फिरोजशाह तुगलक 1351 ईस्वी में सुल्तान बना था। उसने रोजगार दफ्तर, दीवान-ए-खैरात आदि विभागों की स्थापना की थी। वह प्रथम सुल्तान था, जिसने सर्वप्रथम इस्लाम के कानून और उलेमा वर्ग को शासन में प्रधानता दी थी। उसकी मृत्यु 1388 ईस्वी में हो गई थी। उसके बाद उसके उत्तराधिकारी अयोग्य एवं कमजोर सिद्ध हुए। 1398 ईस्वी में तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश को खत्म कर दिया।

क्या आप जानते है-

- ऐसे नगर जिनकी किलेबन्दी हुई हो और उनमें सैनिक रहते हों, गैरिसन शहर कहलाते हैं।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक की मृत्यु पर कहा गया है कि सुल्तान को प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।

सैयद वंश (1414-1451)- तैमूर भारत से वापस लौटते समय अपने सेनापति खिज्र खाँ को लाहौर और दीपालपुर का शासक नियुक्त किया था। उसने तैमूर की सहायता से 1414 ईस्वी में दिल्ली की सत्ता हासिल कर ली और इसके साथ ही दिल्ली पर सैयद वंश का शासन स्थापित हो गया। इस वंश के प्रमुख शासक मुबारक शाह और मुहम्मद शाह थे।

लोदी वंश (1451-1526)- लोदी वंश के शासक अफगानिस्तान की पश्तो जाति के थे। लोदीवंश का सर्वप्रथम शासक बहलोल लोदी था। उसे सैयद वंश के शासकों ने पंजाब का सूबेदार बनाया था। परन्तु अपनी योग्यता एवं सैन्य क्षमता के बल पर 1451 ईस्वी में दिल्ली का सुल्तान बन गया। 1489 ईस्वी में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र सिकन्दर शाह सुल्तान बना था। लोदी वंश का आखिरी शासक इब्राहिम लोदी था, जो उत्तर भारत का एकीकरण करना चाहता था। लेकिन मेवाड़ के राणा सांगा ने खातोली के युद्ध (1517 ईस्वी.) में उसे परास्त कर उसके प्रभाव को सीमित कर दिया था। बाबर ने 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध में लोदी वंश का अन्त कर मुगल सत्ता दिल्ली पर स्थापित कर दी थी।

मुगल साम्राज्य- बाबर पश्चिम एशिया के दो आक्रान्ताओं, तैमूर एवं चगेज खाँ का वंशज था। मङ्गोल का निवासी होने के कारण वह मुगल कहलाया। मुगल तैमूर के वंशज होने पर गर्व का अनुभव करते थे। क्योंकि उनके इस महान पूर्वज ने 1398 ई. में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

बाबर (1526-1530)- प्रथम मुगल शासक बाबर ने जब 1494 ई. में फरगना राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त किया तो उसकी उम्र केवल 12 वर्ष की थी। उसने 1526 ई. में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को पानीपत में हराया और दिल्ली तथा आगरा को अपने कब्जे में कर लिया था। इस तरह बाबर द्वारा विजित प्रदेश की सीमाएं तत्कालीन मेवाड़ की सीमाओं से लगने लगी। उस समय मेवाड़ पर उत्तर भारत के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक राणा सांगा का शासन था। शीघ्र ही मुगलों की बढ़ती सीमा को रोकने के लिए राणा सांगा अपनी सेना लेकर 1527 ईस्वी में खानवा के मैदान में पहुँचा। मेवाड़ की शक्तिशाली सेना के बारे में सुनकर बाबर की सेना भयभीत हो गई और उसने युद्ध करने से मना कर दिया था। परन्तु बाबर ने धार्मिक कट्टरता से युक्त ओजस्वी भाषण में इस युद्ध को जेहाद (धर्म युद्ध) कहा, जिससे मुगल सेना में उत्साह पैदा हो गया। राणा सांगा तथा मुगल सेना में भयंकर युद्ध हुआ। बाबर द्वारा इस युद्ध में तुलगमा युद्ध पद्धति एवं आग्नेय अस्त्रों के प्रयोग के कारण राणा सांगा की पराजय हुई। इस प्रकार भारत में मुगल सत्ता को स्थायित्व प्राप्त हुआ।

मुगल शासक

शासक	काल
बाबर	(1526-1530)
हुमायूं	(1530-1540)
अकबर	(1556-1605)
जहांगीर	(1605 -1627)
शाहजहाँ	(1627-1658)
औरंगजेब	(1658-1707)
बहादुरशाह	(1707-1712)
जहांदार शाह	(1712-1713)
फर्रुख्शियार	(1713-1719)
मोहम्मद शाह	(1719-1748)
अहमद शाह बहादुर	(1748-1754)
आलमगीर द्वितीय	(1754-1759)
शाह आलम द्वितीय	(1760-1806)
अकबर शाह द्वितीय	(1806-1837)
बहादुर शाह द्वितीय	(1837-1857)

हुमायूँ (1530-1556)- बाबर की मृत्यु के बाद उसकी वसीयत के आधार पर हुमायूँ दिल्ली का बादशाह बना। लेकिन उसके भाई इससे सन्तुष्ट नहीं थे और उत्तराधिकार का युद्ध हुआ। युद्ध के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य चार भागों में बँट गया, जिससे हुमायूँ की ताकत कमजोर हो गई। उस समय बिहार के सूबेदार शेरशाह सूरी ने बङ्गाल को विजित कर सूरी वंश स्थापना की थी इसलिए हुमायूँ ने शेरशाह की सत्ता को कुचलने के लिए 1539 ईस्वी में चौसा एवं 1540 ईस्वी में कन्नौज युद्ध किये। परन्तु इन युद्धों में पराजित हुमायूँ को हिन्दुस्तान छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। हुमायूँ ईरान के शासक तहमास्प की शरण में चला गया और अपनी शक्ति को पुनः संगठित करने लगा। लेकिन वह शेरशाह के जीवनकाल में भारत वापस नहीं आ सका।

शेरशाह एक योग्य शासक था। उसने अपने 5 वर्ष के अल्पकालिक शासन में नई नगरीय, सैन्य व्यवस्था, रुपया नामक मुद्रा और डाक व्यवस्था स्थापित की थी। उसने यातायात के लिए काबुल से चटगाँव तक ग्रान्ड ट्रंक(मौर्यकालीन उत्तरापथ) नामक सड़क जीर्णोद्धार करवाया था। मई 1545 में कालिञ्जर दुर्ग के घेरे के समय उसकी मृत्यु हो गई। धीरे-धीरे सूरी वंश कमजोर हुआ और लगभग दश वर्ष पश्चात् 22 जून 1555 ई. में सरहिन्द के युद्ध में हुमायूँ ने सिकन्दर शाह सूरी को परास्त कर एक बार पुन: दिल्ली पर कब्जा कर लिया। 1556 ईस्वी में पुस्तकालय की सीढियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

क्या आप जानते है-

- महाराणा प्रताप (1540 ई.-1597 ई.) का जन्म वर्तमान राजस्थान के कुम्भलगढ़ में हुआ था। इनके पिता का नाम महाराणा उदयसिंह और माता का नाम रानी जयवन्ताबाई था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक 1572 ई. में गोगुन्दा में हुआ था। उस समय दिल्ली पर मुगल बादशाह अकबर का शासन था।अकबर बिना युद्ध के ही प्रताप को अपने अधीन लाना चाहता था इसलिए उसने प्रताप को समझाने के लिए जलाल खाँ, भगवानदास, राजा टोडरमल और मानसिंह को भेजा था। परन्तु राणा प्रताप ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया जिसके परिणामस्वरूप 1575 ई. में हल्दी घाटी का ऐतिहासिक युद्ध हुआ था।इस युद्ध के परिणामस्वरूप महाराणा की आर्थिक स्थिति कमजोर होती चली गई।इस कठिन परिस्थिति में भामाशाह ने महाराणा प्रताप की आर्थिक सहायता की थी। इसके फलस्वरूप महाराणा ने अपनी सेना को पुन: संगठित कर अपने जीवनकाल में मेवाड़ के अधिकांश क्षेत्र को मुगलों की अधीनता से मुक्त करा लिया था। 1597 ई. में महाराणा प्रताप की मृत्यु पर अकबर की मनोदशा का वर्णन करते हुए दरबारी दुरसा आढ़ा ने लिखा है- अस लेगो अणदाग पाग लेगो अणनामी, गो आडा गवड़ाय जीको बहतो घुरवामी। नवरोजे न गयो न गो आसतां नवल्ली, न गो झरोखा हेठ जेठ दुनियाण दहल्ली। गहलोत राणा जीती गयो दसण मूंद रसणा डसी, निसा मूक भरिया नैण तो मृत शाह प्रतापसी।

अकबर (1556-1605)- हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर ने 13 वर्ष की अल्पायु में मुगल राज्य का शासक बना था। उस समय दिल्ली का सम्राट हेमचन्द्र 'हेमू' था। उसने 1556 ईस्वी में अकबर के विरूद्ध पानीपत का द्वितीय युद्ध लड़ा और परास्त हुआ। एक बार पुन: दिल्ली पर मुगलों की शासन स्थापित हुआ। अकबर अपने शासन के आरम्भ में अपने संरक्षक बैरम खान, मुगल हरम और अपने घरेलू कर्मचारियों से प्रभावित था।

अकबर की विजय- सत्ता संभालने के बाद अकबर ने राज्य विस्तार की दृष्टि से 1562 ई. में मालवा, 1572 ई. में गुजरात, 1574 ई. में बङ्गाल, 1581 ई. में काबुल, 1586 ई. में कश्मीर, 1601 ई. में

खानदेश को मुगल सत्ता के अधीन कर लिया था। परन्तु वह अपने जीवनकाल में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप को अपने अधीन न कर सका। वह, राणा और उसकी शक्ति से बहुत प्रभावित था।

अकबर की नीतियां- अकबर का जन्म एक हिन्दू राणा अमरशाल के यहाँ अमरकोट में हुआ था, जिससे उसके बचपन पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पड़ा था। उसने राज्य विस्तार के लिए 'सुलह-ए-कुल' की नीति अपनाई और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। अकबर ने हिन्दू-मुस्लिम धर्म एवं अन्य पन्थों की अच्छी-अच्छी शिक्षाओं को मिलाकर 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की थी। उसने अपने राज्य को प्रशासनिक दृष्टि से मनसबों में बाँटकर, वहां पर मनसबदार नियुक्ति की थी, जिनमें आमेर नरेश मानसिंह का नाम उल्लेखनीय है। प्रशासन के सुचारू सञ्चालन के लिए उसने नवरत्नों (मंत्रिमण्डल) का गठन किया था। बीरबल (प्रधानमंत्री), तानसेन (संगीत), अबुल-फजल(साहित्य) और टोडरमल (वित्त) आदि प्रमुख नवरत्न थे। अकबर के शासन काल में स्थापत्य एवं अन्य कलाओं का विकास हुआ। उसने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी में गुजरात विजय के उपलक्ष्य में बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया था।

जहाँगीर (1605-1627 ई.)- जहाँगीर, चित्रकला का पारखी एवं न्याय प्रिय शासक था। उसने अपने पिता अकबर के सैन्य अभियानों को आगे बढ़ाने के साथ ही महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह से सन्धि की थी। जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा **तुजुके जहाँगीरी** में गुलाब से इत्र बनाने की विधि का उल्लेख किया है। उसके शासन के अंतिम वर्षों में उसकी पत्नि नूरजहाँ ने शासन कार्यों को प्रभावित किया, जिसके कारण राजकुमार खुर्रम (शाहजहाँ) ने विद्रोह किया और जहाँगीर को जेल में ड़ाल दिया । 1627 ईस्वी में जहाँगीर की मृत्यु हो गई।

शाहजहाँ (1627- 1658) ई.- शाहजहाँ ने 1628 ईस्वी में मुगल सत्ता सँभाली। उसने अपने शासन काल में बुन्देलखण्ड विद्रोह (1627–1636) तथा खाने-जहाँ-लोदी का विद्रोह (1628-1631) को समाप्त किया। पुर्तगालियों के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए 1632 ईस्वी में उसने हुगली पर अधिकार कर लिया। शाहजहाँ के शासन काल में मुगल-सिक्ख (गुरु हरगोविन्द सिंह) संघर्ष में मुगलों की विजय हुई। शाहजहाँ ने दक्षिण में साम्राज्य विस्तार के लिए अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर आदि राज्यों पर अपना अधिकार स्थापित कर, इस्लामीकरण को बढ़ावा दिया था। उसने स्थापत्य की दृष्टि से ताजमहल (आगरा), लालकिला (दिल्ली), जामा मस्जिद (दिल्ली) आदि का निर्माण कराया। मुगल इतिहासकारों ने शाहजहाँ के शासनकाल को स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा है। 1657-58 ई. में शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार युद्ध में विजयी औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को शेष जिंदगी के लिए आगरा के कैदखाने में कैद कर दिया था, जहाँ 1658 ईस्वी. में उसकी मृत्यु हो गई।

औरंगजेब (1658-1707)- उत्तराधिकार के लिए हुए संघर्ष में औरंगजेब ने अपने भाईयों की हत्या कर सत्ता हासिल की थी। औरंगजेब एक क्रूर, धर्मान्ध, मुर्तिभञ्जक, साम्राज्यवादी, और कट्टर सुन्नी मुसलमान था। 1663 ई. में उत्तर-पूर्व में उसने अहोमों को पराजित किया। परंतु अहोमों ने 1680 ई. में पुनः विद्रोह कर दिया। मारवाड़ के राठौड़ राजपूतों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया। इन विद्रोहों का मुख्य कारण उनकी आंतरिक राजनीति और उत्तराधिकार के मामलों में मुगलों का हस्तक्षेप करना था। औरंगजेब के शासनकाल में दक्षिण में मराठा सरदार वीर शिवाजी का अभ्युदय हुआ शीघ्र ही उनका वर्चस्व बढ़ने लगा। शिवाजी के प्रभाव को रोकने के लिए औरंगजेब ने अभियान चलाए, जो प्रारम्भ में सफल रहे। औरंगजेब ने संधि के लिए शिवाजी को आगरा बुलाया और धोखे से कैद कर लिया । परन्तु शिवाजी अपनी चातुर्यता से कैदखाने से निकल गये और 1674 ईस्वी में अपने को स्वतंत्र शासक घोषित कर मुगलों के विरूद्ध अनेक विजयी अभियान चलाए। जब शहजादा अकबर द्वितीय ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह किया तो उसे मराठों और दक्कन के अन्य राज्यों का सहयोग मिला। 1685 ई. में बीजापुर और 1687 ई. में गोलकुंडा को मुगलों ने अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार औरंगजेब को उत्तर भारत में सिक्खों, जाटों और सतनामियों, उत्तर-पूर्व में अहोमों और दक्कन में मराठों के विद्रोहों का सामना करना। दक्षिण के विद्रोहों में उलझे औरंगजेब की 1707 ईस्वी में मृत्यु हो गई।

मुगल वंश के पतन के कारण- मुगलवंश के पतन का प्रमुख कारण- उत्तराधिकार के नियमों का अभाव, धार्मिक कट्टरता, दक्षिण नीति के कारण दिवालिया होना, हिन्दु राजाओं एवं सामन्तों से सम्बन्ध विच्छेद करना, अयोग्य उत्तराधिकारी आदि थे। इतिहासकारों का मानना है कि मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण औरंगजेब की धर्मान्धता और दक्षिण की नीति थी।

वास्तव में देखा जाये तो किसी भी विदेशी शासन के पतन का विशेष कारण, विदेशी शासकों द्वारा वहाँ की संस्कृति में स्वत: को न जोड़ पाना और उस संस्कृति को आघात पहुँचाना रहा है। जिन विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति के आदर्शों को ग्रहण कर समाहित कर लिया, कालान्तर में वे पूर्णत: भारतीय बन गए। जैसे- शक, हूण और कुषाण आदि। जिन आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति के आदर्शों को ग्रहण नहीं किया वे शीघ्र ही पतनोन्मुख हो गए।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न -

1. राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना.....की।

अ. राजेन्द्र प्रथम ने　　ब. दन्तिदुर्ग ने

स. पृथिवीराज चौहान ने　　द. कृष्ण प्रथम ने

2. विजयालय ने.....को अपनी राजधानी बनाई।

अ. तंजौर ब. कन्नौज स. काबुल द. लाहौर

3. तराइन का द्वितीय युद्ध सन्.....में हुआ।

अ. 1191 ई. ब. 1291 ई. स. 1192 ई. द. 1292 ई.

4. कुतुबुद्दीन ऐबक.....का सेनापति था।

अ. मुहम्मद गोरी ब. अलाउद्दीन खिलजी

स. बलबन द. हेमू

5. गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक.....था।

अ. सिकन्दर लोदी ब. इल्तुतमिश

स. मुबारक शाह द. मुहम्मद

6. अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर सन्.....में आक्रमण किया।

अ. 1302 में ब. 1301 में स. 1303 में द. 1308 में

7. खानवा का युद्ध सन् .....में हुआ।

अ. 1527 में ब. 1526 में स. 1489 में द. 1398 में

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने .....को अपनी राजधानी बनाया। (नासिक/बातापी)
2. तराइन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी को .....ने हराया (पृथिवीराज चौहान/अजयराज चौहान)
3. चित्तौड़ आक्रमण (1303) के समय रानी .....ने 16000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया। (पद्मिनी/कर्मावती)
4. भारत में मुगल वंश की नींव .....द्वारा रखी गई। (बाबर/हूमांयू)
5. अकबर.....को अपने अधीन नहीं कर सका। (राणा प्रताप/मानसिंह)

सत्य/असत्य बताइए –

1. पालवंश का सबसे प्रतापी शासक धर्मपाल था (सत्य/असत्य)
2. अजमेर को अजयराज चौहान ने अपनी राजधानी बनाया। (सत्य/असत्य)
3. त्रि-राष्ट्र संघर्ष राष्ट्रकूट, पाल व चोल शासकोम्के मध्य हुआ (सत्य/असत्य)
4. गुलामों का गुलाम इल्तुतमिश को कहा जाता है। (सत्य/असत्य)
5. लोदी वंश का प्रथम शासक सिकन्दर लोदी था। (सत्य/असत्य)

सही–जोड़ी मिलान किजीए –

1. गुर्जर प्रतिहार	क. बङ्गाल
2. राष्ट्रकूट	ख. दक्कन
3. पाल	ग. गुजरात
4. 1206 -1290 ई.	क. खिलजी वंश
5. 1290 – 1320 ई.	ख. गुलाम वंश

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. प्रशस्ति किसे कहते है ?
2. विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की ?
3. महमूद गजनी ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किये।
4. तराइन का द्वितीय युद्ध हुआ कब हुआ था ?
5. इतिहास में पागल सुल्तान की उपाधि किसे दी गई है ?
6. बाबर ने इब्राहिम लोदी को कौनसे युद्ध में पराजित किया था ?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. त्रिपक्षीय संघर्ष के बारे में आप क्या जानते है ?
2. चोल वंश का वर्णन करो।
3. चालीसा के बारे में आप क्या जानते हैं ?
4. महाराणा सांगा के बारे में आप क्या जानते हैं ?
5. शेरशाह सूरी के सुधारों के बारे मे आप क्या जानते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. 7 वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य किन–किन राजवंशों का उदय हुआ? वर्णन करो।
2. खिलजी वंश की विस्तृत जानकारी दीजिए ।
3. मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों को समझाइये ।

परियोजना कार्य-

1. महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी का जीवन परिचय लिखिए।

अध्याय- 8

मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला

आइये जानें- मध्यकालीन भारत में वास्तुकला, वास्तुकला की विशेषताएँ, मध्यकालीन भारत में मन्दिर निर्माण, इस्लामिक वास्तुकला, चर्च/गिरिजाघर और हम्पी नगर।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से ही विभिन्न शासकों द्वारा बहुतायत से भव्य भवनों, राजप्रासादों, दुर्गों, मन्दिरों, कूपों आदि का सुदृढ़ व्यवस्थित एवं उच्चकोटि के निर्माण कार्य कराये जाते रहे हैं। वास्तुकला के प्राचीन स्वरूप हमें वैदिक वाङ्मय में प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में भवन निर्माण विषयक उल्लेख आया है कि- **कुलायेधि कुलायं कोशे कोशः समुञ्जितः। तत्र मर्तो वि जायते यस्माद्विश्वं प्रजायते॥** (9.3.20) **इस मंत्र को** वास्तुकला का आधार मानकर गृह निर्माण् आदि कार्य में अनुसंधान किया गया है। **इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालाम्** (अथर्व. 3.12.01) अर्थात् शाला (घर) में निवास करने वाले लोग पूर्ण सुरक्षित रहें। इन मंत्रों से स्पष्ट है कि भारत में अति प्राचीनकाल से ही वास्तुकला उन्नत अवस्था में थी।

मध्यकालीन भारत में वास्तुकला- मध्यकाल में राजमहल और किले सुरक्षादि कारणों से ऊँचे स्थलों, पहाडों की उपत्यकाओं, जल के मध्य, मैदानों आदि स्थानों पर होता था। इसकाल में सार्वजनिक उपयोग के लिए मन्दिर, मस्जिद, कुएँ, बावड़ी, धर्मशालाएं, सराय तथा बाजार आदि भवन होते थे। इन भवनों के निर्माण प्रशासकों, सेठ, साहुकारों एवं व्यापारियों सहित अन्य लोगों के द्वारा भी करवाया जाता था। मध्यकालीन हिन्दू राजाओं- चौहान, चन्देल, परमार, प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट, चोल, चालुक्य एवं मुस्लिम शासकों आदि ने उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सैन्य महत्त्व के अनेक भवनों का निर्माण कराया था।

मध्यकालीन वास्तुकला की विशेषताएँ- पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त अवशेषों द्वारा राजाओं के कार्य, कालगणना एवं संस्कृति का ज्ञान करना सुलभ हो जाता है। स्मारकों, महलों, मन्दिरों, मकबरों से हमें उनके तत्कालीन निर्माण में प्रयुक्त शिल्प विज्ञान का ज्ञान होता है। क्योंकि जब हम एक विस्तृत अधिरचना वाले विशाल भवन का निर्माण करना चाहते हैं तो उसके लिए अधिक उच्च कौशल एवं तकनीक की आवश्यकता होती है।

सातवीं से दशवीं शताब्दी के मध्य भवनों और महलों में कक्षों, दरवाजों और खिड़कियों का निर्माण अधिक होने लगा था। इस समय वास्तुकार दो खम्भों को सीधा खडा करके उनके आर-पार लम्बवत शहतीर रखकर खिड़कीयाँ, दरवाजे और छतों का निर्माण करते थे। वास्तुकला की इस शैली को **अनुप्रस्थ**

टोडा निर्माण शैली कहते हैं। सल्तनत काल से मुगल काल के मध्य मन्दिरों, मस्जिदों, मकबरों तथा सीढीदार कुओं (बाबड़ियों) के निर्माण में इस शैली का प्रयोग अधिक हुआ था।

इस काल के भवन निर्माण कार्य में चूना पत्थर से बने गारे का प्रयोग किया जाता था। यह उच्च श्रेणी का मसाला होता था, जिसमें पत्थर के टुकडों के मिलाने से कंकरीट बनती थी। इसकी वजह से विशाल ढांचों का निर्माण सरलता पुर्वक और तेजी से होने लगा था। बारहवीं शताब्दी में भवन निर्माण कला में दो प्रकार के परिवर्तन हुए–

क्या आप जानते है-

- भूतल से ऊपर किसी भी भवन के भाग को अधिरचना कहते हैं। राजस्थान के बूंदी जिले में राजा अनिरुद्ध सिंह की रानी नाथावत जी ने 1699 ई. में जन उपयोग के लिए अनेक बाबडियों का निर्माण करवाया था। उनमें से रानीजी की बाबडी प्रसिद्ध है।

1. निर्माण सामग्री सम्बन्धी कार्यों में चूना पत्थर व सीमेंट का प्रयोग होने लगा था। जिससे बडी–बड़ी इमारतों के निर्माण को मजबूती मिलने लगी थी।
2. इस काल में धार्मिक एवं सांस्कृतिक संक्रमण के कारण वास्तुकला प्रभावित हुई, जिसके कारण भारतीय वास्तुकला में इण्डो-ईरानी शैली विकसित हुई। इस शैली के तहत खिडकियों व दरवाजों के ऊपर मेहराब आदि का निर्माण होने लगा था। इमारतों की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

मध्यकालीन भारत में मन्दिर निर्माण- वैदिक सभ्यता-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मन्दिरों का प्राचीनकाल से ही विशिष्ट योगदान रहा है। अथर्ववेद में संकेत है- **ऊरुं देवेभ्यो अकृणोरुलोकम्** (7.84.2)। इस मंत्र को आधार पृथिवी पर स्वर्ग तुल्य मन्दिरों के निर्माण की परम्परा आरम्भ हुई। इसके अतिरिक्त वैदिक वाङ्मय में वर्णित यज्ञीय-पात्र जैसे- द्रोणकलश, चमस, उत्कर, जुहू, स्रुवा आदि उन्नत कला के भाग है।

मध्यकालीन भारत में हिन्दू शासकों द्वारा अपने इष्टदेव को समर्पित अनेक भव्य और विशाल मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था। ये मन्दिर पूजास्थल होने के साथ-साथ सामरिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते थे। मध्यकालीन मन्दिरों में मध्यप्रदेश के खजुराहो में चन्देल वंश के राजा धंगदेव द्वारा 999 ई. का **कंदरिया महादेव मन्दिर** अपनी अलंकृत शैली, उच्च वास्तु कौशल एवं परिष्कृत उत्कीर्णित मूर्तियों के कारण विश्व-विख्यात है। तमिलनाडु राज्य के तञ्जावुर में (1003-1010 ई.) के मध्य चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा निर्मित **राजराजेश्वर** मन्दिर अपनी विशालता एवं स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। इसके निर्माण में लगे बहुत ही भारी पत्थरों के प्रयोग के

चित्र-8.1 वृहद्देश्वर मंदिर

कारण, इसे **वृहद्देश्वर मन्दिर** भी कहते हैं। इतने विशालकाय पत्थरों को इतनी अधिक ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए वास्तुकारों ने चढ़ाईदार लम्बे रास्ते बनवाये थे। आज भी इन मन्दिर के पास के गांव को चारुपल्लम कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ चढाईदार रास्ते का गाँव है। यूनेस्को ने इस मन्दिर को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है।

मन्दिरों के नष्ट होने के कारण- हमारे देश में प्राचीन काल से ही राजाओं, महाराजाओं एवं व्यापारी वर्ग ने अपनी ईश्वर व सनातन धर्म के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति को प्रकट करने के लिए, मन्दिरों, मठों एवं आश्रमों का निर्माण करवाते थे। इन मन्दिरों का इतिहास गौरवशाली व वैभवपूर्ण रहा है। ये मन्दिर इतने समृद्ध थे कि इनके खजाने में अपार धन-सम्पदा जैसे- सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात आदि भरे पडे थे। इन मन्दिरों के पास अपनी निजी भूमि और विशाल भवन होते थे। ये मठ-मन्दिर तत्कालीन समाज को संगठित एवं नियमित करने के साथ-साथ रोजगार के बड़े माध्यम थे, जिनमें हजारों के संख्या में लोग काम करते थे। इन मन्दिरों की सम्पन्नता की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में फ़ैली हुई थी। आर्थिक रूप से मजबूत होने पर भी ये नष्ट क्यों हो गये? इन कारणों पर हम निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत चर्चा करेंगे-

1.**आर्थिक समृद्धि-** ये मन्दिर आर्थिक रूप से समृद्ध थे। इनकी वैभवता की कहानियाँ विश्व विख्यात थी। जो कि विदेशी आक्रान्ताओं को आक्रमण के लिए लालायित करती थी। ऐसे आक्रान्ताओं में महमूद गजनवी का नाम विशेष उल्लेख्य है। इसने 1001 से 1030 ईस्वी के मध्य तक भारत पर 17 बार आक्रमण कर भारत की अकूत सम्पदा लूटी। इसे मूर्ति भञ्जक भी कहा जाता है। 1026 ई. में सोमनाथ पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था और वहाँ के मन्दिरों को जमकर लूटा था जो कि इतिहास में प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध अरबी इतिहासकार अलबरूनी ने अपने यात्रा वृत्तान्त में इसका वर्णन किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार व बौद्ध भिक्षु धम्मकित्ति ने वर्णन किया है कि- **9 वीं शताब्दी में पांड्य वंश के राजा श्रीमारश्रीवल्लभ (815-862) ने श्रीलङ्का पर आक्रमण करके वहाँ के बौद्ध मठों में से सोने की मूर्तियाँ और अपार धन-सम्पदा ले गया था। उन मूर्तियों को वापस प्राप्त करने के लिए सिंहली शासक सेन द्वितीय ने मुदरई पर आक्रमण किया था।**

2. **धार्मिक कारण-** मुस्लिम आक्रमणकारी अपने धर्म इस्लाम का प्रचार-प्रसार करने के लिए भी इन मन्दिरों, मठों व आश्रमों को नष्ट कर, उस स्थान पर मस्जिद् का निर्माण करा देते थे। इन बर्बर आक्रान्ताओं ने हिन्दु सनातन संस्कृति को नष्ट करने के लिए मन्दिरों का विनाश किया। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि, मुगल शासक औरंगजेब रोजाना जबरदस्ती हजारों हिन्दुओं को मुसलमान बनाता था। आज भी देश के अनेक भागों में मुस्लिम आबादी अधिकतर हिन्दूओं की वंशजों की है।

3. **राजनैतिक कारण-** अरबी एवं मुस्लिम आक्रमणकारी अपने साम्राज्य विस्तार के समय भी इन मन्दिरों पर आक्रमण करके अपने राज्य में मिला लेते थे एवं वहाँ पर इस्लामिक शासन की स्थापना कर देते थे और वे अपने आप को समाज में इस्लामिक योद्धा के रूप में स्थापित करते थे।

इस्लामिक वास्तुकला- मध्ययुगीन भारत में इस्लामिक आक्रान्ता अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रविष्ट हुए। अपना शासन स्थापित कर लेने के पश्चात् ये भारत में ही रहने लगे थे। इस युग में भारत में अरबी संस्कृति का भारतीय वास्तुकला पर व्यापक प्रभाव पडा था। मध्यकालीन मुस्लिम शासकों ने भारत में इस्लामिक सभ्यता से सम्बन्धित अनेक भवनों तथा- किले, बाग, मस्जिद् और मकबरों का निर्माण, पूर्व निर्मित हिन्दू मन्दिरों को तहस-नहस कर करवाया था। तत्कालीन समय में मथुरा-श्रीकृष्ण जन्मभूमि , अयोध्या- श्रीराम जन्मभूमि और काशी- विश्वनाथ मन्दिर परिसरों में निर्मित मस्जिदें इसके उदाहरण हैं।

मध्ययुगीन इस्लामिक शासकों ने अधिकांशत: स्थानीय वास्तुकला की शैली को अपनाया था। मुगल सम्राट अकबर ने अपनी राजधानी फतेहपुर सीकरी की कई इमारतों को मालवा व गुजरात शैली में निर्मित करवाया था। मुगल सम्राट शाहजहाँ के शासन काल को मध्ययुगीन भारत की स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है।

क्या आप जानते है-

- 18 वीं सदी में उत्कीर्णित संगमरमर या बलुआ पत्थर पर रंगीन पत्थरों द्वारा दाब देकर बनाए गए सुन्दर और अलंकृत प्रारूपों को पितरा-दुरा कहा जाता है।

इस समय भारतीय वास्तुकला पर अरबी और ईरानी शैली का प्रभाव पडा था। हमारे मन्दिरों में गुम्बदों का निर्माण मुगल शैली में होने लगा था। मुगल सम्राट शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला, आगरा में ताज महल आदि अनेक विश्व प्रसिद्ध इमारतों का निर्माण करवाया था। उसने अपने सिंहासन (तख्त-ए-ताउस) के निर्माण में **पितरादूरा** शैली को अपनाया था। वृन्दावन के मन्दिरों की निर्माण शैली मुगल शैली से प्रभावित है।

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद पाश्चात्य ब्रिटिश शासकों ने भी मुगल शैली को अपनाया था। परन्तु ब्रिटिश कालखण्ड में भारतीय वास्तुकला में निरन्तर नये प्रयोगों के कारण इण्डो-यूरोपीय शैली का विकास हुआ।

कुतुबमीनार- भारत की राजधानी दिल्ली के पास महरौली नामक स्थान पर ईंटों से बनी विश्व की सबसे ऊंची मीनार है। इस पांच मंजिला भवन की ऊंचाई 72.5 मीटर है। इसका निर्माण 1192 ई. में कुतबुद्दीन ऐबक ने शुरु करवाया था और इस निर्माण को इल्तुतमिश ने पूर्ण किया था। इस मीनार के निकट क़ातुल इस्लाम मस्जिद, जिसे सत्ताईस हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर उनके अवशेषों से निर्मित की गई थी। इसी प्रांगण में सात मीटर ऊंचाई का प्राचीन लौह स्तम्भ भी है। यह मध्ययुगीन भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहरों की सूची में शामिल किया गया है।

चित्र- 8.2 महरौली का लौहस्तम्भ एवं कुतुबमिनार

सल्तनत काल के बाद मुगल काल में भारतीय वास्तुकला का शैली आदि की दृष्टी से विस्तार हुआ। मुगलकालीन इतिहासकारों ने मुगल शासकों को साम्राज्य व धर्म की कार्यशाला को वास्तुशिल्पी बताया है।

चर्च/गिरिजाघर- ईसाईयों के प्रार्थना स्थल को चर्च कहा जाता है। चर्च निर्माण की गोथिक शैली इतिहास में प्रसिद्ध है। इस शैली के चर्च फ्रांस में अधिक बनाये गये। इन चर्चों की प्रमुख विशेषताएं. नुकीले ऊंचे महराब, रंगीन कांच का प्रयोग, जिनमें बाईबिल से लिए गये चित्रों व दृश्यों का चित्रण किया गया है।

शिल्पकला का विकास- वैदिकवाङ्मय में अनेक प्रकार की कलाओं का वर्णन प्राप्त होता है। इन कलाओं में स्थापत्य एवं शिल्प कलाओं का विशिष्ट स्थान है। सामवेद में सुरक्षित घर एवं किले की निर्माण की बात कही गई है- **सुप्रावीरस्तु स क्षयः** (सामवेद-1352)। घोड़ों के निवास के लिए भी आवास बनाये जाने की चर्चा सामवेद में प्राप्त होता है- **अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिनः** (सामवेद-1737)।

मध्यकाल में भारत में शिल्पकला का विकास तीव्र गति से हुआ था। तत्कालीन भारत में बीदर की शिल्पकला विश्वप्रसिद्ध थी। यहाँ पर तांबे तथा चांदी की जड़ाई का काम होता था, जिसे **बीदरी शिल्पकला** कहते हैं। मध्ययुगीन भारत में लोहार, सुनार, राजमिस्त्री, बुनकर और मूर्तिकार आदि समुदायों का विकास हुआ। चोलकालीन शासकों के समय मूर्तिकला का विकास चरम स्तर पर था।

क्या आप जानते है-

- लोहार, सुनार, राजगीर, बढ़ई और कसेरे के कार्य करने वाले लोगों को पाँचाल या विश्वकर्मा कहते हैं।

इस काल की कांस्य मूर्तियां **लुप्त मोम** तकनीक से बनाई जाती थीं। मध्यकालीन भारत में विजयनगर का साम्राज्य अपने वैभव के चरमोत्कर्ष पर था। यहाँ के शासकों ने तीन शताब्दियों तक सनातनी परम्पराओं और संस्कृति को संरक्षित कर, उच्चकोटि की प्रशासनिक व्यवस्थाओं के साथ ही विविध कलाओं जैसे-वास्तुकला, शिल्पकला, साहित्य आदि को सम्वर्धित किया था। इस साम्राज्य की राजधानी हम्पी अपने वास्तु और शिल्प के कारण आज भी विश्व प्रसिद्ध है।

सारणी 8.1

राजवंश	संस्थापक	शासनकाल
संगम वंश	हरिहर और बुक्का	1336 ई.-1485 ई.
सलुव वंश	नरसिम्हा सलुव	1485 ई.-1505 ई.
तुलुव वंश	वीर नरसिम्हा	1505 ई.-1570 ई.
अरविडु वंश	तिरुमल्ल	1570 ई.-1650 ई.

हम्पी- हम्पी नगर, कर्नाटक राज्य में कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों की घाटी में स्थित है। दक्षिण भारत में विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो यदुवंशी भाइयों ने की थी। मध्ययुगीन भारत में हम्पी व्यापार एवं वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ के बाजारों में विदेश से मुस्लिम, चेट्टी, पुर्तगाली आदि लोग व्यापार करने आते थे। विजय नगर साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध

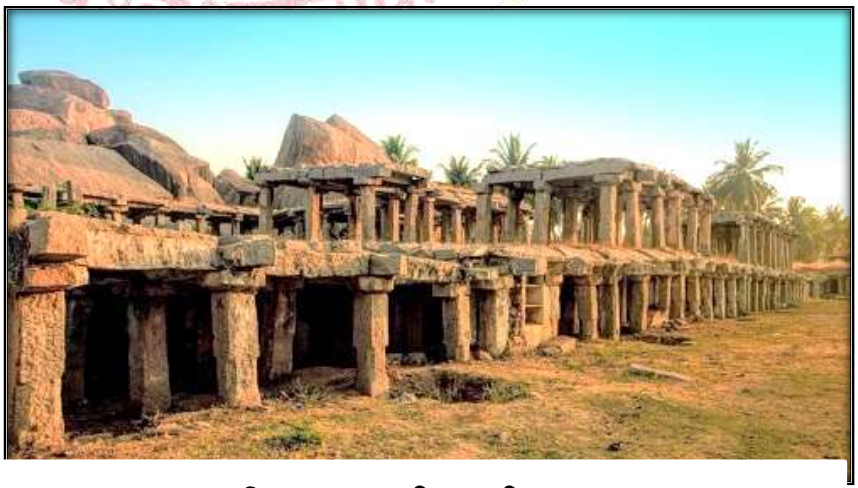

चित्र-8.3- प्राचीन हम्पी बाजार

शासक कृष्ण देवराय था। उसके शासनकाल में हम्पी का चहुँमुखी विकास हुआ। कृष्ण देवराय के दरबार में विश्व प्रसिद्ध वैदिक वाङ्मय के मूर्धन्य विद्वान **सायण** रहते थे।

सायणाचार्य ने वेदों पर भाष्य लिखा, जो वेदों के अध्ययन के लिए उपयोगी है। 15 वीं-16 वीं शताब्दी में हम्पी एक सुविकसित एवं समृद्ध नगर था। यहाँ की वास्तुकला विशिष्ट थी। यहाँ महलों, इमारतों के ऊपर भव्य मेहराब और गुम्बद बनाये जाते थे।

यहाँ का **विरूपाक्ष (शिव) मन्दिर** अपने स्थापत्य के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध है। हम्पी की भव्यता और दिव्यता की प्रशंसा करते हुए विदेशी यात्री **पायस** ने कहा है- "आकार में वह रोम के समान विशाल और विस्तृत है। इस नगर में असंख्य लोग निवास करते हैं। इसके बाजारों में सम्पूर्ण विश्व की ऐसी कोई वस्तु नहीं जो न बिकती हो"। विजय नगर के शासकों ने प्रसिद्ध मालदेवी नदी पर एक विशाल बांध, पेयजल और सिंचाई के लिए अनेक नहरों तथा जलाशयों का निर्माण करवाया था। हम्पी में नवरात्रि पर्व के अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। उनमें महानवमी पर्व बहुत लोकप्रिय था। पुरातत्त्वविदों ने महानवमी मंच को खोज निकाला है।

चित्र- 8.4 विरूपाक्ष मन्दिर

क्या आप जानते है-

- हम्पी नगर का नामकरण स्थानीय मातृदेवी पम्पा के नाम पर किया गया था। विजय नगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री निकोलो द कोण्टी (इटली), अब्दुर्रज्जाक (ईरान) और डोमिंगो पायस, बारबोसा (पुर्तगाल) हैं।

पुरातत्त्वविदों को यहाँ खुदाई में पाँच सौ से अधिक स्मारक चिन्ह मिले है। उनमें विट्ठल मन्दिर, हजारास्वामी मन्दिर, चिदम्बरम मन्दिर, महलबाजार और पत्थर का रथ मण्डप, आदि मुख्य हैं। 1565 ईस्वी में मुस्लिम आक्रमण कारियों ने विजयनगर साम्राज्य को युद्ध में हराकर हम्पी नगर को नष्ट कर दिया था। हम्पी को युनस्को ने 1986 ई. में विश्व विरासत सूची में शामिल किया है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. सातवीं से अठारहवीं शताब्दी के मध्य के इतिहास को ..... जाता है।

अ. प्राचीन इतिहास　　ब. मध्यकालीन इतिहास

स. आधुनिक　　द. कोई नहीं

2. राजराजेश्वर मन्दिर का निर्माण.....ने कराया था।

अ. कुतुबुद्दीन ऐबक　ब. जहाँगीर　स. शाहजहाँ　द.राजराज प्रथम

3. कुतुबमीनार .....में स्थित है।

अ. आगरा　ब. दिल्ली　स. जयपुर　द. लखनऊ

4. ताजमहल स्थित है –

अ. दिल्ली　ब. राजस्थान　स. हरियाणा　द. आगरा

5. युनेस्को द्वारा विश्व विरासत सूची में किस दक्षिण भारतीय नगर को शामिल किया है–

अ.अजमेर　ब. किशनगढ़　स. हम्पी　द. कोई नहीं

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. भूतल से ऊपर किसी भी भवन के भाग को .....कहते हैं। (अधिरचना/मेहराब)
2. विदेशी यात्री डोमिंगो पायस.....का निवासी था। (स्पेन/पुर्तगाल)
3. सायणाचार्य ने वेदों पर..... लिखा था। (भाष्य/ टीका)
4. डोमिंगों पायस.....का निवासी था। (पुर्तगाल/इटली)

सही–जोड़ी मिलान कीजिए–

1. संगम वंश	क. तिरुमल्ल
2. सलुव वंश	ख. वीर नरसिम्हा
3. तुलुव वंश	ग. नरसिम्हा सलुव
4. अरविदु वंश	घ. हरिहर और बुक्का

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. वृन्दावन में बने मंदिरों की वास्तुकला किस शैली से मिलती–जुलती है ?
2. पाण्ड्य राजा श्री वल्लभ ने श्रीलंका पर आक्रमण कर किसे पराजित किया था ?
3. कँदरिया महादेव मन्दिर का निर्माण किस चन्देल राजा ने कराया था ?
4. महमूद गजनवी ने किस मन्दिर पर आक्रमण दिया था ?
5. हम्पी वर्तमान भारत के किस राज्य में है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. राजा मन्दिरों का निर्माण क्यों करवाते थे ?
2. बारहवीं शताब्दी में निर्माण कार्यों में क्या परिवर्तन हुआ ?
3. अनुप्रस्थ टोडा निर्माण कला शैली के बारे में लिखिए।
4. वास्तुकला की महराब शैली का वर्णन कीजिए।
5. मध्ययुगीन शिल्प कला का वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. भारत के मंदिरों को क्यों नष्ट किया गया ? कारण सहित सविस्तार से लिखिए।
2. प्राचीन हम्पी नगर के वैभव का वर्णन कीजिए।

परियोजना-

1. मध्ययुगीन भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों और उनके निर्माताओं की सूची बनाइए।

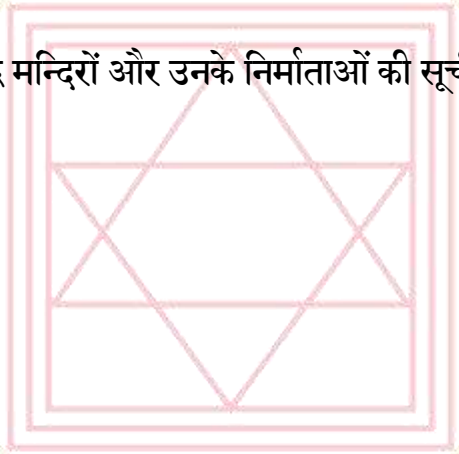

अध्याय – 9

जनजातीय और यायावर समुदाय

आइये जानें- जनजातियाँ,यायावर, बंजारे, गोंड, अहोम और मंगोल।

वैदिक संस्कृति में मनीषियों की उदार एवं उदात्त विचार चेतना जैसे- **वसुधैव कुटुम्बकम्।** (सम्पूर्ण वसुधा ही एक कुटुम्ब है।) एवं **यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।** (जहाँ संसार ही एक घर है।) ने इस सम्पूर्ण प्रायद्वीप को एकता के सूत्र में पिरोये रखा है। प्राचीन भारत में समाज के संगठन का आधार कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था थी। अथर्ववेद के अनुसार **यया दासान्यार्याणि वृत्रा करः** (20.36.10) अर्थात् राजा इन्द्र ने ज्ञान से वञ्चित लोगों को ज्ञान प्रदान कर श्रेष्ठ मानव बनाया। इस मंत्र में संकेत मिलता है कि श्रेष्ठ और गुणीजनों ने शैनैः शैनैः मानव को सुसभ्य और संस्कारित बनाया था।कालान्तर में मानव की इस विकास यात्रा में कुछ विकार भी उत्पन्न हुए। परन्तु विकास यात्रा के इसी क्रम में सातवीं शताब्दी के पश्चात् इस्लामिक आक्रान्ताओं और यूरोपीयन लोगों के द्वारा वैदिक वाङ्मय की उपेक्षा के कारण अनेक जटिल राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिवर्तन हुए। लेकिन ये परिवर्तन सभी स्थानों पर समान नहीं थे। क्योंकि अलग-अलग प्रजातीय समाज अलग-अलग तरीकों से विकसित हुए थे।

जनजातियाँ- सामान्यतः ऐसे समाज जो प्रचलित ज्ञान तथा उपासना से वंचित रहकर, जंगलों, पहाडों एवं गुफाओं में निवास करते हैं, **जनजातीय समाज** कहलाते हैं। इन लोगों की परम्पराएँ और ज्ञान पद्धति सामान्य समाज से भिन्न होती है। जनजातीय समाज के लोग प्रायः छोटे–छोटे कुलों (कबीलों) में रहते हैं। इनके जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि व वनों से प्राप्त होने वाले उत्पाद हैं।

सर्वप्रथम तो हमें इस बात पर विचार करना होगा कि ये जनजातियाँ भारत की मूल निवासी थीं या फिर कहीं बाहर से आकर यहाँ पर रहने लगी थी। कई बार हम इन जनजातियों के लिए आदिवासी शब्द का प्रयोग करतें हैं। इस शब्द के अर्थ से तो यह पता चलता है कि ये लोग भारत के ही मूल निवासी हैं। उदाहरण के लिए हमारे रामायण, महाभारत सहित अनेक धर्म शास्त्रों में जनजातियों का वर्णन हुआ है। रामायण में केवट और निषादराज के प्रसंग इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। आधुनिक इतिहासकारों ने अपने इतिहास लेखन में इन जनजातियों को कम ही महत्व दिया है और समाज की मुख्यधारा से अलग और पिछड़ा हुआ माना है। इन जनजातियों के पास अपना लिखित इतिहास नहीं है।

एक ही पूर्वज की सन्तानों के घर या परिवारों के समूह को कुल कहते है। इन कुलों का संगठन नातेदारी/रिश्तेदारी पर आधारित होता है। इनमें से कई जनजातियाँ खेती से अपना जीविकोपार्जन करते हैं, तो कई जनजातियों के लोग शिकारी, संग्राहक या पशुपालक होते हैं। वे प्रायः प्राकृतिक

संसाधनों का प्रयोग करते हैं और जंगलों में अलग-अलग समूह में रहते हैं। इनमें कुछ ऐसे समुदाय भी हैं, जो भरण-पोषण के लिए भ्रमणशील रहते हैं, खानाबदोश कहलाते हैं।

जनजातीय समूह के लोग संयुक्त रूप से प्राचीन काल से ही भूमि और चारागाहों पर नियन्त्रण रखते थे। स्वंय के बनाये नियमों के आधार पर परिवारों के मध्य सम्पत्तियों का बँटवारा करते थे। इस्लामिक एवं ब्रिटिश कालखण्ड में श्रेणीबद्ध समाज अधिक जटिल हो गया था, जिसका प्रभाव जनजातीय समाजों पर भी पड़ा था।

भारत में जनजातियों के निवास स्थान- भारतीय उपमहाद्वीप में ये जनजातियां सामान्यत: जंगलों, पहाडों, रेगिस्तानों व दूसरी दुर्गम स्थानों पर निवास करती हैं। आज भी भारत के अधिकांश राज्यों-पंजाब में खोखर, राजस्थान में भील व मीणा, जम्मू कश्मीर में गडरिया, मध्यप्रदेश में भील, लम्बादी, बंजारा, गोण्ड, कोल, मुण्डा आदि, बङ्गाल, झारखण्ड, बिहार व उडीसा में संथाल, कोल आदि, उत्तर-पूर्व में नागा, कर्नाटक, महाराष्ट्र में कोली बेराद आदि, गुजरात में भील, कोली, पटोलिया, डाफर और दक्षिण भारत में अहोम जनजातियां प्रमुख हैं। इन जनजातियों ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शासन सत्ता को प्रभावित किया है तथा अनेक बार अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष भी किया है। 1591 ई. में मुगल सेनापति राजा मानसिंह ने चेरों के आन्दोलन का दमन किया था। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध 1828 ई.- 1878 ई. तक नागाओं के संघर्ष और 1855 ई. का संथाल विद्रोह हुए।

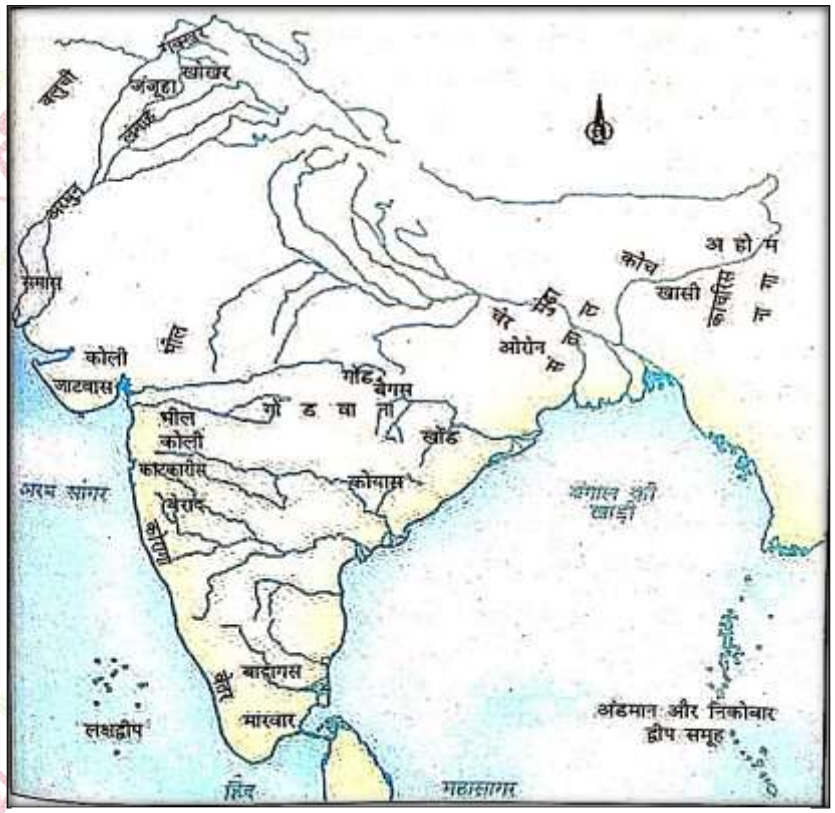

मानचित्र- 9.1 भारत में प्रमुख जनजातीय क्षेत्र

इस प्रकार इन जनजातियों ने अपनी स्वायत्तता और स्वतंत्रता के लिए अनेक संघर्ष किए और अपनी संस्कृति को नष्ट होने से बचाया। श्रेणीबद्ध समाज और जनजातीय समाज दोनों अपनी विविध

आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर भी रहे हैं। टकराव और निर्भरता के इस संबंध ने दोनों तरह के समाजों को धीरे-धीरे बदलने का काम भी किया।

यायावर लोगों की जीवनशैली और निवास- यायावर लोग अपने जीविकोपार्जन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमणशील रहते थे इसलिए उन्हें घुम्मकड़ अथवा खानाबदोश भी कहते थे। प्राय: उनका जीवन, पशु उत्पादों पर निर्भर रहता था। इनके अतिरिक्त वे खेतिहर गृहस्थों से अनाज, कपडे, बर्तन आदि आवश्यक वस्तुएँ खरीद कर, उनसे ऊन, घी इत्यादि का विनिमय करते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते समय रास्ते में वस्तुओं का क्रय-विक्रय भी करते थे। कुछ यायावर लोग अपने जानवरों को वस्तुओं की ढुलाई के लिए किराये पर भी देते थे।

मध्ययुगीन भारत में अनेक यायावर जातियाँ जैसे- पशुपालक (जो घोडों, गधों, बैलों आदि पशुओं को पालकर बेचने का काम करती थी), दस्तकार (हाथ से सामान बनाकर बेचने वाले), फेरीवाले, नर्तक, गायक, तमाशबीन और बहुरुपिया की भी जातियाँ थी। ये लोग विभिन्न नगरों और गाँवों में जीवकोपार्जन के लिए अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। ये घुमन्तु जातियाँ एक या दो वर्ष पश्चात् पुन: अपने पुराने स्थानों पर आते-जाते रहते थे। इन यायावर जातियों में बंजारा जनजाति अग्रणी थी। बंजारों के पास बहुत अधिक मात्रा में सामान लाने व ले जाने के लिए हजारों की संख्या में बैल, हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट आदि जानवर होते थे इसलिए इन्हें सौदागर भी कहा जाता था।

बंजारे- बंजारे लोगों का समूह टांडा कहलाता था।एक टांडा में कई परिवार होते थे। उनकी जीवन शैली घुमन्तु जातियों से सदृश्य थी। ये अपने व्यापार के लिए गाय, बैल, गधे, घोड़े आदि रखते थे। परन्तु कई बार अपने पशुओं को राजाओं, नबाबों, सामन्तों और व्यापारियों आदि को किराये पर भी देते थे। ये वस्तुओं को उनके उत्पादन क्षेत्रों से क्रय करते थे। क्योंकि ये वस्तुएँ उन स्थानों पर सस्ती मिलती थीं। इसके पश्चात् वे क्रय की गई वस्तुओं को अन्य स्थानों पर अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए विक्रय कर देते थे। उनकी यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती थी। उनका टांडा दिनभर में 6 या 7 मील से अधिक यात्रा नहीं करता था।

चित्र-9.1 बन्जारा टाण्डा

गोंड- भारत में नर्मदा नदी के दक्षिण भाग में स्थित विशाल वन प्रदेश को **गोंडवाना** कहते हैं। इस क्षेत्र में गोंड नामक जनजाति छोटे-छोटे कुलों में निवास करती थी। प्रत्येक कुल का अपना राजा या राय

होता था। **अकबरनामा** में उल्लिखित है कि गढ कटंगा के गोंड राज्य में 70,000 गाँव थे। इन राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था केन्द्रीकृत होती थी। राज्य गढ़ों में विभाजित थे और ये गढ़ किसी न किसी गोंड कुल (परिवार) के नियन्त्रण में होते थे। गढ़ों का विभाजन चौरासी में किया गया था और चौरासियों का उपविभाजन बरहोतों (बारह गाँवों का समूह) में होता था। मध्यकाल में बड़े-बड़े साम्राज्यों के उदय ने गोंड समाज की दिशा व दशा को बदल डाला। उनका मूलतः बराबरी वाला समाज धीरे-धीरे असमान सामाजिक वर्गों में विभक्त हो गया था। गोंड राजाओं से अनुदान में प्राप्त भूमि के कारण ब्राह्मण वर्ग अधिक प्रभुत्वशाली हो गया था। गोंड सरदार अपनी धूमिल प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त करना चाहते थे। अत: उन्होंने राजपूतों के समकक्ष मान्यता प्राप्त करने के लिए प्रयास प्रारम्भ किए इसलिए गढ़ कटंगा के गोंड राजा अमनदास ने संग्रामशाह की उपाधि धारण की थी तथा उसके पुत्र दलपत ने महोबा के चंदेल राजपूत राजा सालवाहन की पुत्री राजकुमारी दुर्गावती से विवाह किया था। दलपत की अल्पायु में मृत्यु के पश्चात् रानी दुर्गावती ने अपने पाँच साल के पुत्र वीर नारायण के नाम से सत्ता की बागडोर संभाली। उसके शासनकाल में गोंड राज्य का विस्तार हुआ था। रानी दुर्गावती मुगल सम्राट अकबर के समकालिक थी। 1565 ई. में मुगल सेनापति आसिफ़ खान के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने साम्राज्य विस्तार और आर्थिक संपदा प्राप्त करने के लिए गढ़ कटंगा पर आक्रमण किया था। रानी दुर्गावती ने मुगल सेना का बहादुरी से मुकाबला किया था। अन्तत: रानी की हार हुई परन्तु रानी ने मुगलों के प्रति आत्मसमर्पण करने के बजाय मर जाना उचित समझा और वीर गति को प्राप्त हुई। युद्ध के परिणामस्वरूप मुगलों ने गोंड राज्य के अधिकांश भाग पर आधिपत्य स्थापित कर, शेषभाग वीरनारायण के चाचा चंदरशाह को दे दिया था। इस युद्ध के पश्चात् हुई लूट में मुगल सेना को बेशकीमती सिक्के और बहुत अधिक संख्या में हाथी प्राप्त हुए थे। गढ़ कटंगा के पतन के पश्चात् गोंड़ राज्य निरन्तर कमजोर होता गया था। कुछ समय बाद वे शक्तिशाली बुन्देलों और मराठों के खिलाफ संघर्ष में भी असफल रहे थे।

गोंड लोग स्थानांतरीय कृषि करते थे। इस कृषि में जंगल के किसी भाग के पेड़ों और झाडियों को काट और जला कर, उस स्थान को कृषि योग्य बनाकर खेती की जाती थी। जब वह भूमि अपनी उर्वरकता खो देती तब भूमि का दूसरा भाग इसी प्रकार साफ किया जाता था। कृषि का यह क्रम निरन्तर चलते रहने के कारण, इसे स्थानांतरीय या झूम कृषि भी कहते थे। यह कृषि भारत के विभिन्न राज्यों में आज भी की जाती है।

अहोम- तेरहवीं सदी में अहोम जनजाति वर्तमान म्यांमार (बर्मा) से आकर ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र में बस गई थी। उन्होंने पुरातन राज व्यवस्था भुईयाँ (भू-स्वामी) का दमन कर, नये राज्य एवं शासन व्यवस्था की स्थापना की थी। सोलहवीं सदी में उन्होंने चुटीयों (1523 ई.) और कोच-हाजो (1581 ई.) को हराकर

एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी थी। 1662 ई. मुगल सेनापति मीर जुमला ने अहोम राज्य पर आक्रमण किया था। यद्यपि इस युद्ध में अहोमों की पराजय हुई थी। लेकिन मुगल शासक अधिक समय तक उन पर नियन्त्रण नहीं रख सके थे। अहोम लोग आग्नेय अस्त्रों के प्रयोग में दक्ष थे। अहोम राज्य बेगार पर आश्रित होने के कारण लोगों से जबरन कार्य करवाते थे। बेगार करने वालों को **पाइक** कहा जाता था। अहोम समाज कुलों में विभाजित था, जिन्हें **खेल** कहा जाता था। एक खेल के नियन्त्रण में कई गांव होते थे। समाज के वयस्कों के लिए सैनिक सेवा अनिवार्य थी। अहोम लोग दस्तकारी की कला से परिचित नहीं थे। वे दूसरे राज्यों से आवश्यक वस्तुएँ मंगवाते थे। अहोम लोग अपने जनजातीय देवी-देवताओं की उपासना करते थे। इस समाज पर धीरे-धीरे ब्राह्मणों के प्रभाव में वृद्धि हुई और राजा शिवसिंह के समय (1714-44 ई.) ये हिन्दू धर्म में समाहित हो गए थे। अहोम समाज बहुत अधिक सुसंस्कृत समाज था, जहाँ विद्वानों का आदर किया जाता था। इस जनजाति में नाट्य कर्म की प्रधानता थी। संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का उनकी स्थानीय भाषा में अनुवाद किया गया था। **बुरंजी** नामक ऐतिहासिक ग्रन्थों को पहले अहोम और बाद में असमिया भाषा में लिखा गया था। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि इस युग के दौरान भारत उपमहाद्वीप में काफी सामाजिक परिवर्तन हुआ। वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज और जनजातीय लोग एक-दूसरे के सम्पर्क में आये और उनमें विचारों का आदान प्रदान हुआ था। विचारों के आदान-प्रदान से इनमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जैसे- रहन-सहन, आजीविका व धर्म सम्बन्धी परिवर्तन हुए थे। ये जनजातियां शासन में भाग लेने के कारण अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुईं। अपने अधिकारों की प्राप्ति और रक्षा के लिए संघर्षशील रहीं।

मंगोल- इतिहास में सबसे प्रसिद्ध पशुपालक और शिकारी संग्राहक जनजाति मंगोलों की थी। वे मध्य एशिया के घास के मैदानों (स्टेपी) और उत्तर की ओर वन प्रदेशों में रहते थे। चंगेज खान ने 1206 ई. में मंगोल और तुर्कों में एकता स्थापित कर, विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। मंगोल लोगों के पास सुसंगठित सैन्य व प्रशासनिक व्यवस्थाएं थीं, जो विभिन्न जातीय और धार्मिक समूहों के समर्थन पर आधारित थी। मुगल वंश का संस्थापक जलालुद्दीन मुहम्मद बाबर भी मंगोलियन था।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. पंजाब में ..... जनजाति पाई है।

अ. मीणा ब. भील स. राईका द. खोकर

2. निम्न में से.....यायावर जाति है।

अ. मीणा ब. भील स. बंजारा द. खोकर

3. गढ़ कटंगा के गोंड राज्य में.....गाँव थे।

अ. एक लाख ब. 70 हजार स. 60 हजार द. 10 हजार

4. अहोम भारत में.....से आये थे।

अ. नेपाल ब. भूटान स. बर्मा द. चीन

5. मंगोल.....के निवासी थे।

अ. मध्य एशिया ब. दक्षिण एशिया स. अरब द. यूरोप

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. जनजातीय लोग ..... के मूल निवासी है। (भारत/अफ्रीका)
2. बंजारों के कुटुम्ब ..... कहलाते हैं। (टांडा/पाइक)
3. सबसे प्रसिद्ध पशुपालक व शिकारी संग्राहक जनजाति ..... थी। (अहोम/मंगोल)
4. नर्मदा नदी के दक्षिण भाग में स्थित प्रदेश को .....कहते हैं। (गोंडवाना/कलिंग)

सत्य/असत्य बताइए-

1. जनजातियों के घरों व परिवारों के समूहों को कुल कहा जाता है। (सत्य/असत्य)
2. गोंड जनजाति स्थानान्तरित कृषि करती थी। (सत्य/असत्य)
3. खानाबदोश लोग एक ही स्थान पर रहकर जीविका चलाते थे। (सत्य/असत्य)
4. गोंड राजा अमनदास ने संग्राम शाह की उपाधि धारण की थी। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. भील व मीणा	क. मध्यप्रदेश
2. गडरिया	ख. पंजाब
3. संथाल	ग. राजस्थान
4. खोखर	घ. जम्मू कश्मीर

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. जनजाति किसे कहते हैं ?
2. हमारे देश में कौन– कौन सी जनजाति पाई जाती हैं ?
3. अहोम लोगों द्वारा लिखी गई ऐतिहासिक कृति कौनसी थी ?
4. गोंडवाना राज्य का विस्तार किसने किया था ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. यायावरों और खेतिहरों के बीच विनिमय का माध्यम क्या था?
2. तत्कालीन व्यापार-वाणिज्य में बंजारा समुदाय का क्या योगदान था ?
3. प्राचीन भारत में जनजातियों की स्थिति का वर्णन करो ?
4. स्थानान्तरीय कृषि से आप क्या समझते ?
5. अहोम लोगों का प्रारम्भिक इतिहास का उल्लेख कीजिए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. यायावर लोगों की जीवन शैली का वर्णन कीजिए।
2. गोंड साम्राज्य का विस्तार से वर्णन कीजिए।

परियोजना-

1. अपने आस-पास के क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियों की सूची बनाकर उनके इतिहास का पता लगाइए।

अध्याय –10

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय

आइये जानें- ईश्वर के प्रति आस्था, मध्यकालीन भारत में भक्ति और सूफी आन्दोलन,क्षेत्रीय संस्कृतियाँ – मलयालम भाषा, जगन्नाथी सम्प्रदाय, राजस्थानी वीरता की परम्परा, लघु चित्र परम्परा, कत्थक नृत्य, क्षेत्रीय संस्कृति के रूप में बङ्गाल।

ईश्वर के प्रति आस्था- सृष्टि के आरम्भ से ही मानव ईश्वर की उपासना और भक्ति करता रहा है। वैदिक वाङ्मय में उल्लेख है - **अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।** (सामवेद–66) हे मेरे आराध्य अग्निदेव ! हम आपके साथ मित्र बनकर रहना चाहते हैं, ताकि हम सदा सुखी रहें। सामवेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि- **ईशानमिन्द्र तस्थुष।** (सामवेद–680) अर्थात् हे इन्द्र ! सम्पूर्ण जगत के स्वामी आप हैं। **तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठम्।** (सामवेद-1483) अर्थात् संसार का श्रेष्ठ आत्मा स्वयं ब्रह्म (ईश्वर) ही है। मानव अपनी विकास अवस्था के प्रारम्भ में अलग-अलग समूहों में रहते हुए अपने कुल देवता, ग्राम देवता और मातृदेवी आदि की पूजा और भक्ति करता आया है। राज्यों और साम्राज्यों के उदय के साथ ही नगरों और व्यापार आदि का विकास हुआ था। अब लोग व्यापारादि कार्यों के कारण एक-दुसरे के निकट आए, जिससे वैचारिक सम्प्रेषण में वृद्धि हुई और नए-नए विचार विकसित होते गये। उस समय लोग ईश्वर सम्बन्धी इस विचार से आकर्षित हुए कि, यदि मनुष्य भक्तिभाव से ईश्वर की शरण में जाए तो उसे जन्म-मृत्यु के बन्धन से मुक्ति प्राप्त होती है। यथा श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लेख है- **सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।** (18.66) अर्थात, सम्पूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, चिन्ता मत कर। श्रीमद्भगवद्गीता का यह विचार प्रारम्भिक शताब्दियों में लोकप्रिय था। पुराणों में भी इसी प्रकार का उल्लेख है कि भक्त भले ही किसी भी जाति-पांति का हो वह सच्ची भक्ति से ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है। भक्ति की यह विचारधारा इतनी अधिक लोकप्रिय हो गई कि बौद्धों और जैन मतावलम्बियों ने भी इन विश्वासों को अपने जीवन में साक्षात किया।

मध्यकालीन भारत में भक्ति और सूफी आन्दोलन- छठीं शताब्दी में भारत में धार्मिक आन्दोलन की शुरुआत हुई। भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व दक्षिण भारत के बारह अलवार (वैष्णव) और तिरसठ नयनार (शैव) सन्तों ने किया था। इन्होंने सङ्गम साहित्य के आदर्शों को अपनाकर भक्ति के मूल्यों में उनका समावेश किया था। नयनार और अलवार घुमक्कड़ सन्त थे, जो देवताओं के भजन और गीत गाते हुए भ्रमण किया करते थे। यह काल खण्ड आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से जागरण का काल रहा

था। आठवीं शताब्दी में अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक शंकराचार्य का जन्म केरल राज्य में हुआ था। उनके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा दोनों एक ही है। संसार मिथ्या है, उन्होंने इसे माया कहा और ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया था। रामानुज ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडु में पैदा हुए थे। उन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था। उनके अनुसार आत्मा-परमात्मा से जुडने के बाद भी अलग सत्ता बनाए रखती है। भक्ति आन्दोलन में शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के विरोध में दक्षिण में वैष्णव संतो द्वारा चार मतों की स्थापना की गई-

चित्र 10.1 आदिगुरु शंकराचार्य

1. श्री सम्प्रदाय- रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैत)
2. ब्रह्म सम्प्रदाय- मध्वाचार्य (द्वैत)
3. वैष्णव सम्प्रदाय- वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत)
4. सनकादि सम्प्रदाय- निम्बार्काचार्य (द्वैताद्वैत)

भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में प्रचार- प्रसार करने का श्रेय संत रामानन्द को है। इनका जन्म लगभग तेरह सौ ईस्वी में प्रयागराज में हुआ था। रामानुज की भाँति इन्होंने भी भक्ति को मोक्ष का एक मात्र साधन स्वीकार किया था। इनके प्रमुख शिष्य- रैदास (हरिजन), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट), सेना (नाई), पीपा (राजपूत) आदि थे। रामानन्द के उपदेशों से भक्ति दो सम्प्रदाय- **सगुण** और **निर्गुण भक्ति** का प्रादुर्भाव हुआ था।

1. **सगुण सम्प्रदाय**- सगुण सम्प्रदाय में तुलसीदास और नाभादास जैसे राम भक्त तथा निम्बार्क, बल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सूरदास और मीरा बाई जैसे कृष्ण भक्त हुए।
2. **निर्गुण सम्प्रदाय**- कबीर इस सम्प्रदाय के सबसे प्रसिद्ध प्रतिनिधि थे। जिन्होंने जाति-पाति का कड़ा विरोध किया था। इनके अतिरिक्त संत रविदास, मलूक दास आदि थे।

महाराष्ट्र में तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य अनेक सन्त हुए, जिन्होंने भक्ति का प्रचार-प्रसार जनमानस में किया। ऐसे ही भक्त सन्त ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, समर्थ रामदास, सखूबाई एवं चोखामेळा थे। इनमें कुछ ऐसे भी संत थे, जो अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति के थे। ये सभी पंढरपुर में स्थित विठ्ठल अर्थात् भगवान विष्णु के उपासक थे। इन्होंने तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों का विरोध किया तथा मानवतावादी विचारों को बढ़ावा दिया था। गुजराती सन्त नरसी मेहता

ऐसे ही सन्त थे। कुछ नाथ पंथियों ने योगासन, प्राणायाम और चिन्तन मनन जैसी क्रियाओं के द्वारा मन और शरीर के कठोर प्रशिक्षण पर भी बल दिया।

वीर शैववाद आन्दोलन-

वीर शैववाद आन्दोलन बारहवीं शताब्दी में बसवन्ना, अल्लमा प्रभु और अक्क महादेवी जैसे उनके साथियों द्वारा प्रारम्भ किया गया था। ये सभी व्यक्तियों की समानता के पक्षधर थे तथा सभी प्रकार के कर्मकाण्ड और मूर्तिपूजा के विरोधी थे।

सूफी आन्दोलन- इस्लाम के रहस्यवादी संतो को सूफी कहा गया है। वे ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे। इनके निवास स्थान को **'खानकाह'** तथा शिष्यों को **मुरीद** कहा जाता था। सूफियों के धर्म संघ, बा-शारा (इस्लामी सिद्धान्त के समर्थक) और बे-शारा (इस्लामी सिद्धान्त से बंधे नहीं) में विभाजित थे। अनेक सूफी संत ग्यारहवीं शताब्दी में मध्य एशिया से आकर हिन्दुस्तान में बस गये थे। इनमें चिश्ती और औलियाओं की एक लम्बी परम्परा थी। भारत में चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिले की जड़े काफी गहरी थी। अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती सिलसिले की शुरूआत की थी। दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पञ्जाब के बाबा फरीद (बख्तियार काकी के शिष्य), दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, शेख बुरहानुद्दीन और बन्दानवाज़ गिसुदराज आदि प्रमुख सुफी सन्त थे। बाबा फरीद के दो महत्वपूर्ण शिष्य थे निजामुद्दीन औलिया और अलाउद्दीन साबिर। औलिया के प्रमुख शिष्य थे- शेख सलीम चिश्ती, अमीर खुसरो, अमीर हसन देहलवी। सूफी संत अपनी खानकाहों में बैठते थे, जहाँ सभी प्रकार के लोग आते थे।

प्रमुख संत कवि-

गुरुनानक देव (1469 ई.-1539 ई.)-

गुरुनानक देव ने समाज में भाई-चारे का सन्देश और सामाजिक एकता पर बल दिया। उन्होंने एकेश्वरवाद पर बल दिया था। उनकी शिक्षाओं के सङ्ग्रह को (गुरुग्रन्थ साहिब) के नाम से जाना जाता है। इन्हें सिख धर्म का प्रवर्तक कहा जाता है। गुरुनानक के विचारों का सिख आन्दोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा। सिक्खों का प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर आज भी अमृतसर में विद्यमान है।

सन्तकबीर (1440 ई.-1518 ई.)- कबीर सुल्तान सिकन्दर लोदी की समकालीन थे। कबीर ने जाति प्रथा सुधार के साथ निर्गुण ईश्वरोपासना पर बल दिया। इनके अनुयायी कबी पंथी कहलाए। कबीर की वाणी का संग्रह **बीजक** नाम से प्रसिद्ध है जिसके तीन भाग हैं- साखी, सबद, रमैनी।

इस प्रकार यदि देखा जाये तो सभी धर्मों के संत महात्माओं ने अपने विचारों में लोक कल्याण की भावना का समावेश किया है। अपने उपदेशों के माध्यम से उस परम सत्य ईश्वर के प्रति अपने भक्ति

(प्रेम) को प्रकट करते हुए, समाज में फैली हुई विषमताओं, कुरीतियों को भी दूर करने का प्रयास किया है। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन ने भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक एकता को अक्षुण्य बनाये रखा था।

मध्यकालीन भारत में क्षेत्रीय संस्कृतियाँ- भारत प्राचीनकाल से ही सांस्कृतिक विविधता वाली भूमि रही है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र में विविधता- भाषा, विशिष्ट भोजन, पहनावे, साहित्य, नृत्य, संगीत आदि, जो यहाँ के लोगों की पहचान है, युग-युगान्तरों से अस्तित्व में रही हैं। इन क्षेत्रीय संस्कृतियों का विकास विविध जटिल प्रक्रियाँओं से हुआ है। ये समय के साथ-साथ बदलती रही हैं। ये क्षेत्रीय परम्परायें और विशाल भारत के अन्य क्षेत्रों की विचार और परम्पराओं के मध्य आदान–प्रदान के परिणामस्वरूप विकसित हुई हैं। इन परम्परओं में कुछ समानताओं के साथ-साथ, कुछ रुपान्तरण भी हो गया है। समय ने विविध क्षेत्रों के मध्य सीमांकन में विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया है।

मलयालम भाषा- मध्यकाल में चेर राज्य, की स्थापना नौंवी सदी में हुई थी। यह भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित वर्तमान केरल राज्य का हिस्सा है। यहाँ के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ की लिपि और भाषा मलयालम थी। चेर लोग, संस्कृत परम्पराओं से अधिक प्रभावित थे। यहाँ के रंगमंच आदि इसी को बताते हैं। इस भाषा का साहित्य लगभग 12 वीं सदी का है। 14वीं सदी का व्याकरण एवं काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ **लीलातिलकम** की रचना **मणिप्रवालम** शैली में हुई है। यह शैली मणी और प्रवाल के रूप में संस्कृत और क्षेत्रीय भाषा के सह-प्रयोग की ओर संकेत करती है।

जगन्नाथी सम्प्रदाय- मध्यकालीन भारत के अन्य क्षेत्रों में भी संस्कृतियाँ एवं धार्मिक परम्पराएँ विकसित हुईं। उड़ीसा का जगन्नाथी सम्प्रदाय एवं जगन्नाथ मन्दिर इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। आज भी जगन्नाथ की काष्ठ मूर्ति स्थानीय लोगों द्वारा ही निर्मित होती है। सम्भवतः जगन्नाथ स्थानीय देवता थे, जिन्हें बाद में विष्णु का रूप मान लिया गया। 12 वीं सदी में गंग वंशीय राजा अनन्तवर्मन ने जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ जी का मन्दिर बनवाया था। 1230 ई. में अनंगभीम द्वितीय ने भगवान जगन्नाथ को इस राज्य का स्वामी घोषित कर स्वयं को उनका प्रतिनिधि बताया था। आगे चलकर इस मन्दिर को बड़े तीर्थ केन्द्र के रूप में महत्त्व प्राप्त हुआ। इसका प्रभाव वहाँ के सामाजिक तथा राजनीतिक मामलों में भी पड़ा था। क्योंकि उड़ीसा क्षेत्र को विजित करने वालों का मानना था कि यदि मन्दिर पर नियन्त्रण हो जाए तो स्थानीय जनता भी उनकी सत्ता को स्वीकार कर लेगी।

राजस्थानी वीरता की परम्परायें- वर्तमान राजस्थान को अंग्रेज लोग **राजपूताना** कहते थे। ऐसा माना जाता है कि राजपूतों ने इस क्षेत्र को विशिष्ट संस्कृति प्रदान की, जो वहाँ के शासकों के आदर्शों तथा अभिलाषाओं से जुड़ी थीं। 8 वीं सदी में राजस्थान के अधिकांश क्षेत्रों में राजपूत राजाओं का शासन था। बप्पा रावल, पृथिवीराज चौहान, राणासांगा और राणाप्रताप, आदि शूरवीर राजा थे। राजपूताना

के लोग अपने साहस, शौर्य और वीरता के लिये प्रसिद्ध हैं। उनकी वीरता की कहानियाँ आज भी स्थानीय साहित्यों में सुरक्षित हैं। उन कहानियों को सुनकर आज भी मित्रता, स्वामिभक्ति, प्रेम, शौर्य और क्रोध आदि संवेग प्रबल रूप से मानस पटल पर चित्रित होते हैं। राजपूताना की नारियाँ भी अपने बहादुर पतियों के जीवन–मरण में उन्हीं का अनुसरण करती थीं। जौहर एवं सती प्रथा इसी का उदाहरण थी। अर्थात् जब वीरयोद्धा युद्ध में वीरगति को प्राप्त होते थे तो उनकी पत्नी भी स्वयं को अपने पतियों के साथ अग्नि में जलाकर भस्म कर लेती थी।

कथक नृत्य- भारतीय संस्कृति के प्रमुख आधार संगीत और नृत्य हैं। प्राचीन काल से ही संगीत और नृत्य की अनेक शैलियाँ प्रचलित रही हैं। नृत्य की कथक शैली उत्तर भारत से जुड़ी हुई है। कथक शब्द की व्युत्पत्ति कथा से हुई है। इसका प्रयोग संस्कृत एवं अन्य भाषा साहित्यों में कहानी के लिए किया जाता रहा है। प्राचीन काल में मन्दिरों में कथा व्यासों द्वारा कथक शैली में विविध कथानकों को हाव-भाव तथा संगीत द्वारा अलंकृत कर प्रस्तुत किया जाता था। 15 वीं-16 वीं सदी में इसी कथक शैली ने कथक नृत्य शैली का स्वरूप धारण कर लिया था। अब विविध आख्यानों के माध्यम से लोकनाट्य (रासलीला) के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा था। आगे चलकर यह शैली जयपुर एवं लखनऊ घराने के रूप में खूब फली-फूली। लखनऊ में नवाब वाजिद अली के शासन काल में इस कला विशेष उन्नति हुई। आज यह नृत्य शैली पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश और बिहार आदि क्षेत्रों में प्रचलित है। इसमें उत्तम वेशभूषा, तेजी से पद संचालन, कहानियों का प्रस्तुतीकरण तथा अभिनय पर बल दिया जाता है। इसके अतिरिक्त भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कथकली(केरल), ओडिसी (ओडिशा), कुचीपुड़ि (आन्ध्र प्रदेश), मणिपुरी (मणिपुर) को शास्त्रीय नृत्य माना जाता है। यहाँ शास्त्रीय से आशय विशिष्ट प्रशिक्षणों से युक्त कौशलपूर्ण प्रदर्शन से है।

चित्र-10.2- कथक नृत्य

लघु चित्र परम्परा- भारत में चित्रकला परम्परागत रीतियों से विकसित हुई है। प्राचीनतम लघु चित्र तालपत्रों या लकड़ी की पटरों पर चित्रित किए जाते थे। पश्चिम भारत में जैन ग्रन्थों को सचित्र बनाने के लिए भी इस कला का प्रयोग किया जाता था। कालान्तर में ये लघुचित्र प्राय: जल रंगों के द्वारा कपड़े या कागज पर चित्रित किए जाने लगे थे। मध्यकाल में लघुचित्रों की परम्परा का व्यापक विकास हुआ

था। मुगल काल में श्रेष्ठ चित्रकारों को संरक्षण प्राप्त था। ये चित्रकार प्राय: पाण्डुलिपियों को चित्रित करते थे। मेवाड़, जोधपुर, बूँदी और किशनगढ़ आदि चित्रकारी के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध थे। चित्रकार निहालसिंह द्वारा किशनगढ़ शैली में बनाया गया '**राधारानी**' (बणी-ठणी) का चित्र, उस काल का सर्वोत्तम चित्र है। ऐसी ही एक शैली हिमालय क्षेत्र में 17 वीं सदी में विकसित हुई, जिसे **बसहोली** शैली कहा जाता है। भानुदत्त की **रसमंजरी** इसी शैली में चित्रित है। नादिर शाह के 1739 ई. के आक्रमण के समय चित्रकार अपनी कला को सुरक्षित रखने के लिए हिमालयी क्षेत्र में पलायन कर गये थे। इस क्षेत्र में विकसित चित्रकला को कांगड़ा शैली कहा गया ।

चित्र- 10.3 बणी-ठणी (राधारानी)

क्षेत्रीय संस्कृति के रूप में बङ्गाल- मध्यकाल में उदय होने वाली क्षेत्रीय संस्कृतियों एवं परम्पराओं ने, सम्पूर्ण भारतीय भू-भाग को भी प्रभावित किया था। इनमें से अधिकांश संस्कृति एवं परम्परायें प्राचीन एवं कुछ नई भी थीं। बाङ्गला भी ऐसी ही एक क्षेत्रीय संस्कृति है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के मध्य रचित संस्कृत साहित्यों से स्पष्ट होता है कि बाङ्गला भाषा संस्कृत के निकट है परन्तु इसका स्वतन्त्र अस्तित्व है। यह भाषा क्रमिक विकास से विकसित हुई। इसमें गैर-संस्कृत शब्दों का भी विशाल भंडार है, जो जनजातीय, फारसी एवं यूरोपीय भाषाओं से जुड़े हुए हैं। प्रारम्भिक बङ्गाली साहित्य को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है- प्रथम श्रेणी **मङ्गल और भक्ति साहित्य** तथा दूसरी श्रेणी **नाथ साहित्यों** की है। बङ्गाली भाषा में रचित प्रमुख साहित्य मैनामती गोपीचन्द्र के गीत, धर्म ठाकुर की पूजा सम्बन्धित कहानियां, परी कथाएं, लोक कथाएँ तथा गाथा गीत हैं। नाथ साहित्य, नाथ सन्यासियों से सम्बन्धित है, जो भाँति-भाँति की यौगिक क्रियाएँ करते थे। धर्म ठाकुर ऐसे ही लोकप्रिय क्षेत्रीय नाथ देव हैं। इनकी पूजा प्रायः पत्थर या काष्ठ प्रतिमाओं के रुप में की जाती है। 15 वीं सदी में यहाँ अनेक मन्दिर बने जो स्थापत्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। इन मन्दिरों की आकृति दो छतों वाली या चौचाला (चार छतों वाली) होती थी। बङ्गाल में विष्णुपुर के मन्दिर अपनी उत्कृष्ट सजावट के लिए प्रसिद्ध हैं।

16 वीं सदी में बड़ी संख्या में लोग दक्षिण-पूर्वी बङ्गाल के दलदली एवं जंगली क्षेत्रों में बसने लगे थे। वे जंगलों को साफ कर वहाँ धान की खेती करने लगे थे। ये अधिकांश जनजातीय लोग, जो नये किसानों के रूप में वहाँ के समुदायों में मिल गए थे। इस काल में बङ्गाल मुगलों के आधिपत्य में आ गया था। मुगलों द्वारा बङ्गाली लोगों का जबरन धर्मान्तरण करवाया गया था। मुगल लोगों ने वहाँ

भूमि पर अतिक्रमण करने के लिए मस्जिदों का निर्माण किया था। वहाँ के निवासियों को समुदाय के नेतृत्वकर्त्ताओं ने सुविधाएँ देने का आश्वासन दिया था। इन नेताओं और शिक्षकों को अलौकिक शक्ति सम्पन्न बताया जाने लगा और आमजन इन्हें स्नेह, आदर और सम्मान से पीर कहने लगे थे। इस श्रेणी में अनेक सूफी सन्त, धार्मिक नेता, विभिन्न हिन्दू एवं बौद्ध देवी-देवता आदि शामिल थे। आगे चलकर पीरों की पूजा पद्धति बङ्गाल में अति लोकप्रिय हुई।

भोजन- बङ्गाल नदीय मैदान होने के कारण यहाँ अधिकांशत: धान और मछली की उपज होती है। अत: यहाँ के निवासियों का मुख्य खाद्य चावल और मछली है। बङ्गाली साहित्य में अनेक स्थानों पर मछली का वर्णन हुआ है। इन्हें मन्दिरों में चित्रों के रुप में भी चित्रित किया गया है। ब्राह्मण सदैव से ही निरामिष भोजी होता है। परन्तु 13 वीं सदी में बङ्गाल में रचित बृहद् धर्म पुराण में बङ्गाल के स्थानीय ब्राह्मणों को कुछ विशेष किस्म की मछलियों को खाने की अनुमति दी गई है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. धार्मिक आंदोलनों की शुरूआत.....हुई थी।

अ. छठीं शताब्दी में ब. आठवीं शताब्दी मे

स. नवीं शताब्दी में द. बारहवीं शताव्दी में

2. शंकराचार्य के अनुसार आत्मा और परमात्मा दोनों.....हैं।

अ. अलग.अलग ब. साथ–साथ स. एक ही द. कोई नही

3. पंढरपुर स्थित विट्ठल देव .....देवता के प्रतिरूप है।

अ. ब्रह्मा ब. विष्णु स. शिव द. इन्द्र

4. भगवान जगन्नाथ की प्रतिमा.....होती है।

अ. पाषाण की ब. लौह की स. काष्ठ की द. स्वर्ण की

5. जौहर ..... क्षेत्र की संस्कृति रही है।

अ. बङ्गाल ब. दक्षिण भारत स. सौराष्ट्र द. राजस्थान

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व .....अलवार और ..... नयनार संतो ने किया।
2. अद्वैतवाद के प्रतिपादक .....थे।
3. द्वैतवाद के सम्पादक ..... थे।
4. चेर राज्य की भाषा ..... थी। (मलयालम/तमिल)

5. रस मंजरी .....चित्रित है। (भानुदत्त/भानुगुप्त)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. गुजरात	क. मीराबाई
2. मेवाड़	ख. नरसी मेहता
3. कथक	ग. केरल
4. कथकली	घ. तमिलनाडु
5. भरतनाट्यम्	ङ. जयपुर

सत्य/ असत्य बताइए-

1. निहाल सिंह का सम्बन्ध जोधपुर चित्रशैली से है। (सत्य/असत्य)
2. महाराणा प्रतापजन्म राजस्थान में हुआ। (सत्य/असत्य)
3. चौचाला का अर्थ है - चार छतों वाली। (सत्य/असत्य)
4. बहसोली शैली का विकास सत्रहवीं सदी में हुआ। (सत्य/असत्य)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. अद्वैत दर्शन के प्रमुख आचार्य कौन है ?
2. मध्वाचार्य का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से था ?
3. लीला तिलकम् ग्रन्थ का वर्ण्य विषय क्या है ?
4. किस राजा ने स्वयं को भगवान जगन्नाथ की प्रतिनिधि घोषित किया था ?
5. बंसोहली शैली कहाँ विकसित हुई ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. वैष्णव सन्त परम्परा के प्रमुख सम्प्रदायों का नामोल्लेख कीजिए।
2. निर्गुण और सगुण सम्प्रदायों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. तेरहवीं शताब्दी के महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्तों का नामोल्लेख कीजिए।
4. मलयालम भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. बङ्गाली साहित्य की दो श्रेणियों का उल्लेख कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. ईश्वर के प्रति भक्ति को स्पष्ट करते हुए भक्ति आन्दोलन की विवेचना कीजिए।
2. लघु चित्रों की परम्परा का उल्लेख कीजिए।

परियोजना-

1. भारत के गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु और पञ्जाब राज्य के परिधान और भोजन की सूची बनाइए।

अध्याय- 11

अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ

आइये जानें- अठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक स्थिति, साम्राज्य विभाजन, प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियाँ- हैदराबाद, अवध, बङ्गाल, राजपूताना, सिक्ख, मराठा और जाट।

अठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक स्थिति- भारतीय इतिहास में 18 वीं सदी का कालखण्ड विशिष्ट महत्व वाला है। इस समय भारत में राजनीतिक परिस्थितियाँ अपेक्षाकृत एक छोटे से अन्तराल में बड़ी तेजी से अचानक परिवर्तित होना शुरू हो गई थी। इस कालखण्ड में मुगलों की प्रशासनिक कार्य कुशलता समाप्त होने लगी थी। मुगल सूबेदारों का प्रान्तों पर नियन्त्रण मजबूत होने लगा था। राजधानी में पहुँचने वाले राजस्व की मात्रा में निरन्तर कमी होने के कारण, मुगलों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। इस राजनीतिक और आर्थिक संकट के मध्य ईरान के शासक नादिरशाह ने दिल्ली पर 1739 ई. में आक्रमण कर सम्पूर्ण नगर में जमकर लूट मचाई। इसके पश्चात् अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. से 1761 ई. के मध्य भारत पर पाँच बार आक्रमण करके उत्तर भारत में भारी लूटपाट की थी। इस दौरान मुगल साम्राज्य में दो अभिजात गुटों- ईरानियों और तूरानिओं का प्रभाव बढ़ गया था। परवर्ती मुगल बादशाह इन गुटों की सक्रिय प्रतिद्वन्दिता के चलते कठपुतली मात्र रह गये।

साम्राज्य विभाजन- 18 वी. शताब्दी तक मुगल साम्राज्य अनेक स्वतन्त्र क्षेत्रीय राज्यों में बिखर गया था। इस काल में मुगल साम्राज्य से स्वतंत्र हुए राज्यों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **प्रथम समूह-** इस समूह में वे राज्य थे, जो पूर्व में मुगलों के प्रान्त थे परन्तु 18 वीं शताब्दी में ये राज्य क्षेत्रीय शक्तियों के रूप में स्वतन्त्र होने लगे थे। परन्तु औपचारिक रूप से मुगलों से जुड़े हुए राज्यों में अवध, बङ्गाल और हैदराबाद थे।
2. **द्वितीय समूह-** ऐसे राज्य जो 18 वीं शताब्दी से पूर्व मुगलों के शासन काल में प्रशासनिक दृष्टि से स्वायत्त थे। इनमें राजपूताना के अनेक राज्य शामिल किये जा सकते हैं।
3. **तृतीय समूह-** इस समूह में वे राज्य सम्मलित हैं, जो लम्बे संघर्ष के पश्चात् मुगलों के शासन से स्वतंत्र हो गये थे। मराठा, सिक्ख और जाट राज्य इस समूह में शामिल थे।

प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियाँ-

हैदराबाद- निजाम-उल-मुल्क **आसफ जाह** (1724–1748) ने हैदराबाद राज्य की स्थापना की थी। यह मुगल बादशाह फर्रूखसीयर के दरबार का एक अत्यन्त शक्तिशाली सदस्य था।

अवध- अवध राज्य की स्थापना **बुरहान-उल-मुल्क सआदत खान** ने 1731 ई. में की थी। मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद अवध का उदय एक समृद्धशाली राज्य के रूप में हुआ था।

बङ्गाल- मुर्शीद कुली खान को मुगलों ने बङ्गाल के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया था। मुगल शासकों के कमजोर शासन के कारण बङ्गाल उनके नियन्त्रण से अलग हो गया। मौके का फायदा उठाकर **अलीवर्दी खान** (1740-1756) ने बङ्गाल के शासन की नींव रखी थी।

राजपूतों की जागीरें- 18 वीं शताब्दी से पूर्व अनेक राजपूत घराने जैसे- आमेर और जोधपुर मुगल शासन में मनसबदार होने कारण अपने राज्यों में अधिकांशतः स्वतन्त्र शासन करते थे। मुगल सत्ता के कमजोर होने के पश्चात् इन शासकों ने अपने नियन्त्रण वाले क्षेत्र का विस्तार कर, स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए थे। जयपुर, जोधपुर और मालवा आदि ऐसे ही राज्य थे।

सिक्ख- 17 वीं सदी में सिक्ख एक राजनैतिक समुदाय के रूप में गठित हुए। 1708 ई. में सिक्खों के 10 वें गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के पश्चात् बंदा बहादुर के नेतृत्व में खालसा ने मुगल सत्ता के खिलाफ विद्रोह किए थे। अठारहवीं शताब्दी में सिक्खों ने स्वयं को पहले जत्थों में और बाद में मिशलों में संगठित किया था। इन जत्थों और मिशलों की संयुक्त सेनाएँ **'दल खालसा'** कहलाती थी। दल खालसा की वैसाखी एवं दीपावली पर्व पर अमृतसर में बैठक होती थी। सिक्खों ने **राखी व्यवस्था की** स्थापना की थी। **इस व्यवस्था में किसानों से उनकी उपज का 20% कर लिया जाता था। बदले में उन्हें संरक्षण प्रदान किया जाता था।** अठारहवीं शताब्दी के उत्तर काल में सिक्ख राज्य की सीमा सिन्धु नदी से यमुना नदी तक विस्तृत थी। महाराजा रणजीत सिंह सिक्ख समुदाय के शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने विभिन्न सिक्ख समूहों को एकत्र करके 1799 ई. में लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था। महाराजा रणजीत सिंह ने अफ़गानिस्तान पर विजय प्राप्त कर, **हरि सिंह नलवा** को वहां का सूबेदार नियुक्त किया था। उसके शासन काल में अफगानिस्तान में शान्ति स्थापित रही थी।

मराठा- छत्रपति शिवाजी ने एक स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की थी। 1720 ई.से 1761 ई. के मध्य मराठा साम्राज्य का विस्तार हुआ था। मराठों ने 1720 ई. में मालवा और गुजरात मुगलों से छीन लिया। 1730 ई. तक मराठों को दक्षिण भारत का स्वामित्त्व प्राप्त होने के साथ इन क्षेत्रों में चौथ (सुरक्षा कर) और सरदेशमुखी कर वसूलने का अधिकार भी मिल गया था। सिंधिया, गायकवाड़ और भोंसले जैसे मराठा सरदारों ने बड़ी सेनाएँ एकत्र कर ली थीं। मराठों के शासन काल में उज्जैन और इन्दौर महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुए थे।

मराठों द्वारा नियन्त्रित क्षेत्रों में अनेक व्यापार के नये मार्ग खुले। पुणे, नागपुर, बुरहानपुर, चंदेरी, आगरा, सूरत, लखनऊ, प्रयागराज तक उनके वाणिज्यिक सम्बन्ध स्थापित हुए थे। शिवाजी की मृत्यु के पश्चात्

उनके उत्तराधिकारी योग्य व शक्तिशाली नहीं थे इसलिए शासन की बागडोर उनके पेशवा (प्रधानमंत्री) के हाथ में चली गई थी। पेशवा के शासनकाल में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार सर्वाधिक हुआ था। इनमें पेशवा बाजीराव सर्वाधिक शक्तिशाली थे। सदाशिव राव भाऊ के शासन काल में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार दिल्ली तक हो गया था। 1761 ई. में अहमदशाह अब्दाली और पेशवा सदाशिवराव भाऊ के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था, जिसमें मराठों की पराजय हुई और उत्तर भारत से मराठों का प्रभाव समाप्त हो गया था। आगे चलकर अंग्रेज-मराठा (1775 ई.-1819 ई.) संघर्ष में मराठा शक्ति का अन्त हो गया था।

शिवाजी का परिचय

पूरा नाम	शिवाजी राजे भोंसले
जन्म	19 फ़रवरी, 1630 ई.
जन्म भूमि	शिवनेरी, महाराष्ट्र
मृत्यु तिथि	3 अप्रैल, 1680 ई.
मृत्यु स्थान	रायगढ़
पिता/माता	शाहजी भोंसले, जीजाबाई
गुरू का नाम	समर्थ गुरु रामदास
उपाधि	छत्रपति
शासन काल	1642 - 1680 ई.
राज्याभिषेक	6 जून, 1674 ई.
उत्तराधिकारी	सम्भाजी

जाट- 17 वीं-18 वीं शताब्दी में जाटों ने चूडामन के नेतृत्त्व में पश्चिमी दिल्ली के क्षेत्रों में नियंत्रण् स्थापित कर अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर लिया था। जाट समुदाय मूलत: कृषक थे। इस काल में उनके प्रभुत्व क्षेत्र वाले पानीपत तथा बल्लभगढ़ जैसे नगर महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन गये थे।जाटों ने 1680 के दशक में दिल्ली और आगरा के मध्य के क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। महाराजा सूरजमल जाट वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक थे। उनके शासन काल में भरतपुर शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा। 1739 ई. में जब नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया था तो उस समय दिल्ली के कई अमीरों ने भरतपुर में शरण ली थी। भरतपुर के किले को मुगल व अंग्रेज कभी नहीं जीत पाये थे इसलिए इसे **लोहागढ़ का किला** कहते हैं । डीग के जल-महल अपने स्थापत्य के कारण प्रसिद्ध हैं। इनके निर्माण में आमेर व आगरा शैली को अपनाया गया है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. नादिरशाह ने दिल्ली पर..... में आक्रमण किया था।

अ. 1749 ई. ब. 1719 ई. स. 1729 ई. द. 1739 ई

2. अहमदशाह अब्दाली ने पेशवा के विरुद्ध सन् .....में युद्ध लड़ा था।

अ. 1265 में ब. 1733 में स. 1754 में द. 1763 में

3. सआदतखान को अवध का सूबेदार सन्.....में नियुक्त किया गया था।

अ. 1723 ब. 1722 स. 1724 द. 1725

4. सिक्ख राखी व्यवस्था के अन्तर्गत कितना प्रतिशत कर लेते थे–

अ. 20% ब. 25% स. 30% द. 15%

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. महाराजा रणजीत सिंह ने ..... को अपनी राजधानी बनाया। (दिल्ली/लाहौर)
2. नादिर शाह ने ..... में दिल्ली पर आक्रमण किया। (1739/1740)
3. डीग का प्रसिद्ध किला ..... में स्थित है। (भरतपुर/जयपुर)
4. पानीपत का तृतीय युद्ध.....में हुआ था। (1763 ई./1761 ई.)

सत्य/असत्य बताइए -

1. जाट वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक महाराजा सूरजमल थे। (सत्य/असत्य)
2. बंगाल का सूबेदार मुर्शीद कुली खान को नियुक्त किया गया। (सत्य/असत्य)
3. मराठा राज्य में सेनापति को पेशवा कहा जाता था। (सत्य/असत्य)
4. अंग्रेज-मराठा संघर्ष में मराठ शक्ति का अन्त हो गया। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. उज्जैन	क. जाट
2. इन्दौर	ख. होल्कर
3. भरतपुर	ग. सिक्ख जत्थों और मिशलों की संयुक्त सेनाएँ
4. दल खालसा	घ. सिंधिया

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण कब किया था?

2. सरदेश मुखी और चौथ कर किनके द्वारा वसूले जाते थे?

3. महाराजा रणजीत सिंह अपनी राजधानी किसे बनाया था?

4. जत्थों और मिशलों की संयुक्त सेनाएँ क्या कहलाती थीं?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. चौथ एवं सरदेशमुखी के बारे में आप क्या जानते हैं?

2. 18वीं सदी के सिख राज्य के बारे में बताइए ?

3. दक्षिण में मुगल राज्य में से किस मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई थी ? वर्णन कीजिए।

4. मुगल साम्राज्य को कितने समूहों में बाँटा जा सकता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. मराठा साम्राज्य के बारे में विस्तार से बताइए ?

2. पुराने मुगल राज्यों का वर्णन कीजिए ?

परियोजना-

1. महाराजा सूरजमल के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

वेदभूषण द्वितीय वर्ष

नागरिक जीवन

अध्याय- 12

स्वास्थ्य और सरकार

आइये जानें- स्वास्थ्य का अर्थ, स्वास्थ्य में आध्यात्म की भूमिका, स्वास्थ्य और सरकार, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ, निजी स्वास्थ्य सेवाएँ, भारत में स्वास्थ्य सेवाएँ, स्वास्थ्य सेवा और समानता, कोरोना एक वैश्विक महामारी, आक्सीजन (प्राणवायु।

स्वस्थ तन-मन मानव जीवन की अमूल्य निधि है। वैदिक वाङ्मय में स्वस्थ्य और सुखी मानव जीवन की कामना करते हुए प्रार्थना की गई है- **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥'** (गरुड़ पुराण 35.51) अर्थात् सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, सभी भद्र (कल्याणकारी) विचार वाले हों तथा कोई भी प्राणी दुःख का भागी न हों। अत: तनावमुक्त, चिन्तामुक्त, भयमुक्त और प्रसन्न रहना स्वस्थ जीवन का लक्षण है।

स्वास्थ्य का अर्थ- स्वास्थ्य शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के **'स्वस्थ'** शब्द से हुई है। यह दो शब्दों (स्व+स्थ, अथवा सु+स्थ) के मेल से बना है। स्वास्थ्य शब्द का मूल अर्थ है, अपने में सुन्दर तरीके से स्थिर होना, अर्थात् योगमय जीवन जीना। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य शब्द का अर्थ है-तन और मन को विविध चिन्ताओं, बीमारियों और चोटों आदि को मुक्त रखना है। लेकिन स्वास्थ्य केवल बीमारियों से सम्बन्धित नहीं है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें बीमारियों के अतिरिक्त उन कारणों पर भी विचार करना आवश्यक है, जो हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए यदि लोगों को पीने के लिए स्वच्छ पानी, प्रदूषणमुक्त वायु एवं भरपेट भोजन मिलें तो वे सामान्यतः स्वस्थ रहेंगे।

स्वास्थ्य में आध्यात्म की भूमिका- योग एवं अध्यात्मपरक जीवन जीना पूर्ण स्वास्थ्य का मूलमन्त्र है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि- **युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥** (गीता- 6.17) अर्थात् स्वस्थ जीवन के लिए आहार-विहार एवं व्यवहार सब कुछ सर्वोत्तम होना चाहिए। आगे भी कहा गया है कि- **आयु: सत्त्व बलारोग्य सुखप्रीति विवर्धना:। रस्या: स्निग्धा: स्थिराहृद्या आहरा: सात्विक प्रिया:।** (17.8) अर्थात् आयु, सत्व, बल, आरोग्य, सुख एवं परस्पर प्रेम, भाईचारा बढाने हेतु हमें सात्विक और रुचिकर भोजन ग्रहण करना चाहिए। ऐसा भोजन करने वाला मनुष्य दीर्घायु तथा स्वस्थ शरीर वाला होता है। इससे स्पष्ट है कि हमारे जीवन में पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान, योग, साधना एवं सात्विक भोजन का महत्त्व सर्वोपरी है। वैदिक वाङ्मय में यक्ष्मा संक्रामक रोग के सन्दर्भ में कहा गया है- **यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते**

(ऋग्वेद 10.163.5) इस मन्त्र से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में यक्ष्मा जैसे संक्रामक रोगों के निदान के लिए वेद मन्त्रों के पाठ का प्रयोग किया जाता था। अथर्ववेद में जलचिकित्सा, सूर्यकिरण चिकित्सा, मृत्तिका चिकित्सा, शल्य चिकित्सा आदि पद्धतियों का उल्लेख हुआ है।

स्वास्थ्य और सरकार- लोकतन्त्र में सरकार से जनापेक्षा रहती है कि सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गृहनिर्माण, विद्युत आपूर्ति एवं पेयजल आदि लोक कल्याणकारी कार्य करे। हमारे संविधान में सरकार या राज्य द्वारा लोकहित को सुनिश्चित करते हुए, लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार का प्राथमिक कर्तव्य है। अतः स्पष्ट है कि स्वास्थ्य सेवाओं में सरकार की भूमिका अहम एवं सर्वोपरि होती है। हमारे देश में स्वास्थ्य सेवाओं का विभाजन दो भागों में किया जा सकता है- सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ और निजी स्वास्थ्य सेवाएँ।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ- सरकार द्वारा लोगों को निःशुल्क या सस्ती दर पर प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा कहते हैं। हमारे संविधान में स्वास्थ्य सेवाएँ राज्य सूची का विषय हैं। परन्तु केन्द्र सरकार इस विषय को समवर्ती सूची का विषय बनाना चाहती है। क्योंकि समवर्ती सूची का विषय बनने से राज्य और केन्द्र सरकार दोनों ही इस पर कानून बनाने का कार्य कर सकती हैं। हमारे देश में मुख्यत: तीन प्रकार के सार्वजनिक क्षेत्र के स्वास्थ्य केन्द्र या चिकित्सालय हैं-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (Primary Health Center) होते हैं। इन केन्द्रों में न्यूनतम एक डाक्टर, नर्स और ग्राम स्वास्थ्य सेवक रहते हैं। इन केन्द्रों में सामान्य श्रेणी की बीमारियों का उपचार किया जाता है। इनके अधीन प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्र भी होते हैं।
2. ब्लाक स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community Health Center) होते हैं। इन चिकित्सालयों में प्राय: एक से अधिक विशेषज्ञ चिकित्सक होते हैं। यहाँ पर अतिरंग रोगी विभाग (OPD) के साथ प्रसव एवं सामान्य शल्य चिकित्सा की सुविधाएँ होती हैं।
3. जिला स्तर पर जिला चिकित्सालयों होते हैं। इन चिकित्सालय में प्राय: सभी बीमारियों से सम्बन्धित डाक्टर व विशेषज्ञ होते हैं। ये सभी स्वास्थ्य केन्द्रों की देखरेख व निरीक्षण आदि के कार्य करते हैं और उच्च स्तर पर लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।

इनके अतिरिक्त राज्य और केन्द्र सरकारों ने गम्भीर और जटिल बीमारियों के उपचार, मेडिकल प्रशिक्षण, नये विषयों के शोधों-अनुसंधानों तथा स्वास्थ्य सेवाओं के उचित क्रियान्वयन के लिए, चिकित्सा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थानों की स्थापना की है। अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान भारत के सार्वजनिक क्षेत्र का आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों का समूह है। 1956 ई. के एक अधिनियम द्वारा एक स्वायत्त संस्थान के रूप में इसका सृजन किया गया था। देश

में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिये 2014 ई. में भारत सरकार ने भारत के विभिन्न भागों में 14 नये एम्स के निर्माण योजना बनाई है। इसी योजना के अन्तर्गत 2022 ई. तक प्रत्येक राज्य में एक एम्स खोलने का निर्णय भारत सरकार ने किया है।

निजी स्वास्थ्य सेवाएं- चिकित्सकों द्वारा अपने आवास या निजी चिकित्सालयों में लोगों से उचित फीस लेकर उनका उपचार करना निजी स्वास्थ्य सेवाएँ कहलाता है। निजी स्वास्थ्य सेवाओं पर परोक्ष रूप से सरकारी नियन्त्रण नहीं होता है। ये चिकित्सा सेवाएँ सार्वजनिक चिकित्सा सेवाओं की तुलना में बहुत महँगी होती हैं। वर्तमान में हमारे देश में निजी स्वास्थ्य सेवाओं का विकास भी बहुतायत से हुआ है। इन स्वास्थ्य सेवाओं को दो भागों में विभाजित किया जाता है- पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी (आर. एम. पी.) और व्यापारिक तथा स्वंयसेवी संगठनों और ट्रस्टों द्वारा सञ्चालित चिकित्सालय। ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे नगरों में पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी (आर. एम. पी.) होते हैं, जो सामान्य रोगों का उपचार करते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा स्वंयसेवी संगठन और ट्रस्ट हैं, जो व्यापक स्तर पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त बड़े-बड़े चिकित्सालयों का निर्माण कर, लोगों की सामान्य और गम्भीर बीमारियों का उपचार करते हैं। आज हमारे देश में इन चिकित्सालयों में विश्व स्तरीय विशेषज्ञ और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं इसलिए विदेशी मरीज भी उपचार के लिए यहाँ आते हैं। ये चिकित्सालय अत्यधिक महंगे होने के कारण इनमें सामान्य व गरीब जन उपचार नहीं करवा सकते हैं। सरकार ने इन चिकित्सालयों में सस्ती दर पर आम लोगों के उपचार के लिए प्रयास तो किये हैं, परन्तु वे अधिक प्रभावी नही हैं।

भारत में स्वास्थ्य सेवाएं- अध्ययन की दृष्टि से भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं-

1. वर्तमान भारत में लगभग प्रतिवर्ष 30,000 से भी अधिक लोग चिकित्सकीय योग्यता प्राप्त करते हैं। विश्व में सर्वाधिक चिकित्सा महाविद्यालय एवं चिकित्सक भारत में हैं।
2. भारत के अधिकांश डॉक्टर शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं इसलिए गाँवों में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास एवं विस्तार प्रभावी तरीके से नहीं हुआ है।
3. पिछले वर्षों की तुलना में वर्तमान में स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्धि हुई है। उदाहरण लिए सन् 1950 में भारत में जहाँ केवल 2717 चिकित्सालय थे, आज यह संख्या बढ़कर लगभग 25,000 से भी अधिक हो गई है।
4. भारत में लगभग पाँच लाख लोग प्रतिवर्ष यक्ष्मा (टी.बी) रोग से मरते हैं तथा मलेरिया रोग से लगभग बीस लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष प्रभावित होते हैं।

5. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता अच्छी एवं सस्ती है। इस कारण विदेशों से बडी संख्या में उपचार कराने के लिए लोग भारत आते हैं, जो **चिकित्सा पर्यटक** कहलाते हैं।

6. हैजा, पेट के कीड़े, और हैपेटाइटिस इत्यादि रोगों की उत्पत्ति दूषित जल के सेवन करने से होती है। अतः इन्हें सञ्चरणीय रोग कहते हैं।

7. भारत, विश्व में दवाइयों का निर्माण करने वाला चौथा बड़ा देश है।

8. भारत में आधे से ज्यादा ऐसे बच्चे हैं, जो उचित पोषण न मिलने से कुपोषण या अल्पपोषण के शिकार हो जाते हैं।

वर्तमान समय में चिकित्सा विज्ञान में असाधारण प्रगति हुई है। आज हमारे देश में विश्व स्तरीय उपचार की नई तकनीकें और विधियाँ उपलब्ध हैं।

उपर्युक्त सकारात्मक विकास के बाद भी हम जनता को उचित स्वास्थ्य सेवाएं देने में असमर्थ हैं। यह विरोधाभासी स्थिति है, जो हमारी अपेक्षाओं के विपरीत है। वर्तमान समय में हमारे देश में अच्छे चिकित्सालय एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। परन्तु जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सेवाएँ अपर्याप्त हैं। इनमें प्रगति की नितान्त आवश्यकता है।

स्वास्थ्य सेवा और समानता- हमारे संविधान में सरकार या राज्य द्वारा लोकहित को सुनिश्चित करते हुए, लोगों को अच्छी व बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना प्राथमिक कर्तव्य बताया गया है। सरकार को प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के अधिकार की रक्षा करनी चाहिए। यदि कोई चिकित्सालय समय पर व्यक्ति का उपचार प्रदान नहीं कर पाता है, तो इसका तात्पर्य है कि उसे जीवन की सुरक्षा नहीं दी जा रही है। इन सेवाओं को चलाने के लिए सरकार जनता से कर प्राप्त करती है इसलिए ये सुविधाएँ सार्वजनिक हैं। वर्तमान समय में सरकारी स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों की अपेक्षा निजी अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधाएँ अधिक विकसित हुई हैं। लेकिन निजी अस्पतालों में ये सुविधाएँ बहुत अधिक महंगी होने के कारण गरीब व्यक्ति इनमें उपचार नहीं करवा सकता है। अत: सरकार का यह

चित्र-12.1 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र

उत्तरदायित्व है कि वह इस प्रकार की स्थिति को नियन्त्रण करने का प्रयास करे और इन अस्पतालों को निर्धन, पिछडे लोगों को भी स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए बाध्य करे। केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा लोगों के निशुल्क उपचार के लिए, आयुष्मान, जननी सुरक्षा, चिकित्सा बीमा, दवा वितरण, मुख्यमंत्री स्वास्थ्य आदि महत्त्वपूर्ण योजनाएँ चलाई जा रही है।

कोरोना एक वैश्विक महामारी- कोविड- 2019 नामक महामारी भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई है। कोरोना महामारी का प्रथम रोगी चीन में मिला था। इसके पश्चात् इस बीमारी का संक्रमण सम्पूर्ण विश्व में हो गया। सन् 2019 से लेकर वर्तमान वर्ष 2021 (मई माह तक) पूरे विश्व में लगभग 15 करोड़ से भी अधिक संख्या में लोग इस रोग से संक्रमित हुए थे। इस महामारी के समय में भारत में कुल कोरोना संक्रमित केस- 2 करोड 85 लाख 74 हजार 350 हुए थे। इनमें से लगभग 3 लाख 40 हजार 702 लोगों की मृत्यु हुई। कोरोना की दूसरी लहर में 624 चिकित्सकों की मृत्यु हुई थी। कोराना महामारी के कारण **ब्लैकफंगस** बीमारी और आक्सीजन की कमी से भी अनेक लोगों की मृत्यु हुई थी। इसके चलते स्वास्थ्य की दृष्टि से पूरे विश्व का संतुलन बिगड़ गया था और वैश्विक स्तर पर लोगों की प्रगति का पहिया थम सा गया था। छात्रों का शैक्षणिक स्तर पिछड़ गया था। विश्व के लगभग सभी देश आर्थिक संकट से जूझ रहे थे। वर्तमान में इस रोग से बचाव के लिए भारत एवं विश्व स्तर पर अनेक टीके विकसित किये गये। इनमें **कोविडशील्ड** और **को-वैक्सीन** नामक टीकों का आविष्कार भारत में किया गया है। हमारे

चित्र- 12.2 टीकाकरण

क्या आप जानते है-

- कोरोना संक्रमणसे बचाव हेतु सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देश–
- मास्क पहन कर ही घर से बाहर निकलें।
- सभी से दो गज की दूरी बनाकर रहना ।
- बार बार साबुन से हाथ धोना।
- सेनेटाइजर का इस्तेमाल करना।
- बार बार आँख, नाक मुँह का स्पर्श न करना।
- अति आवश्यक होने पर ही घर से बाहर निकलना।था।

देश में केन्द्र सरकार द्वारा सभी नागरिकों को नि:शुल्क टीके लगवाये गये हैं तथा आवश्यक होने पर बूस्टर डोज लगवाये जा रहे हैं।

आक्सीजन (प्राणवायु)- आक्सीजन के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। यदि किसी व्यक्ति के श्वशन तंत्र में जब कोई रोग होता है तब उसे कृत्रिम रूप से आक्सीजन की आवश्यकता होती है। वैश्विक महामारी कोरोना काल की दूसरी लहर में आक्सीजन की कमी के कारण यह समस्या अत्यधिक उत्पन्न हुई थी। क्योंकि उस समय हमारे देश में आवश्यकता के अनुसार कृत्रिम आक्सीजन का उत्पादन नहीं होता था। इस कारण मानव जीवन पर संकट छा गया था। परन्तु शीघ्र ही इस गम्भीर समस्या को

क्या आप जानते है-

- ओ.पी.डी.- यह आउट पेशेंन्ट डिपार्टमेन्ट या बाह्य रोगी विभाग का संक्षिप्त रूप है। जिसमें रोगों का प्राथमिक उपचार होता है। अस्पताल में किसी विशेष वार्ड में भर्ती होने से पहले रोगी ओ.पी.डी. में जाते है।
- जेनेरिक नाम- दवाइयों के रासायनिक नाम दवाइयों में प्रयुक्त सामाग्रियों की पहचान करने में मदद करते हैं। जैसे- दर्द और बुखार में दी जाने वाली दवा पैरासीटामॉल को दवा कम्पनियां उसी नाम से बेचती हैं तो ये जेनेरिक दवा कही जाती हैं। उसी दवा को क्रोसीन आदि नामों से बेंचने पर ब्राण्डेड दवा कही जाती हैं। जेनेरिक दवाएं विश्वस्तर पर मान्यता प्राप्त हैं। उदाहरण के लिए एस्पिरिन का जेनेरिक नाम एसिटाइल और सालिसैलिक एसिड है।
- कोस्टारिका- दक्षिणी अमेरिका का सबसे स्वस्थ्य देश कोस्टारिका है। इस देश के संविधान में अच्छे स्वास्थ्य को महत्त्व दिया गया है। यह देश सेना न रखकर, उस बजट को शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य आधारभूत आवश्यकताओं पर खर्च करता है।

सरकार ने नियंत्रित कर लिया था। भारत सरकार ने कोराना जैसी महामारियों एवं संक्रामक रोगों आदि के संभावित खतरों से निपटने के लिए, नये आक्सीजन प्लाटों एवं चिकित्सा सुविधाओं के विकास पर जोर दे रही है। इस महामारी के कालखण्ड में हम सभी, जीवन में प्राणवायु के महत्त्व को अच्छे से अनुभव कर चुके हैं। भविष्य में ऐसे संकटों से बचने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की आवश्यकता है। ताकि पृथिवी पर प्राकृतिक आक्सीजन की मात्रा का सन्तुलन बना रहे।

वैदिक वाङ्मय में पञ्च वायु- **प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान** की बात कही गई है। यह वायु हमारे शरीर में नित्य रूप से क्रियान्वित है। **प्राण वायु** श्वास के रूप में, **अपान वायु** मल त्याग के रूप में, **व्यान वायु** उदर में, **उदान वायु** नाभि से हृदय पर्यन्त एवं **समान वायु** समस्त शरीर में व्याप्त रहती है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न –

1. ओ.पी.डी. का अर्थ..... है।

अ. आउट पेशेन्ट डिपार्टमेन्ट। ब. आउट प्वाइंट डिपार्टमेन्ट।

स. आल प्वाइंट डिपार्टमेन्ट। द. आल पेसेन्ट डिस्चार्ज।

2. जेनेरिक दवाई.....कहते हैं।

अ. दवाइयों की कम्पनी को ब. दवा बेचने वालों को

स. दवाइयों के रासायनिक नाम को द. इनमें से कोई नहीं

3. सन् 2019 में ..... वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया।

अ. कोराना ब. मलेरिया

स. डेंगु द. हैजा

4. भारत विश्व का दवाई निर्मित करने वाला.....बडा देश है।

अ. प्रथम ब. द्वितीय

स. तृतीय द. चौथा

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. मानव को हमेशा ..... रहना चाहिये। (तनावमुक्त/तनावयुक्त)
2. कोरोना-19 से विश्व में लगभग .....से अधिक लोग संक्रमित हुए थे। (15 करोड़/50 लाख)
3. कोविशील्ड टीके का आविष्कार ..... हुआ है। (भारत/अमेरीका)
4. कोवैक्सीन ..... का टीका है। (मलेरिया/कोरोना)

सत्य/असत्य बताइए -

1. ऑक्सीजन को प्राणवायु भी कहा जाता है। (सत्य/असत्य)
2. कोरोना कीटाणु जनित बीमारी है। (सत्य/असत्य)
3. भारत में अधिकांश चिकित्सक गांवों में निवास करते हैं। (सत्य/असत्य)
4. दक्षिणी अमेरिका का सबसे स्वस्थ्य देश कोस्टारिका है। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	क. ब्लॉक स्तर
2. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	ख. जिला स्तर
3. जिला अस्पताल	ग. ग्रामीण स्तर

अति लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं को कितने भागों में विभाजित किया गया है ?
2. भारत वर्ष मे लगभग प्रत्येक वर्ष कितने नये डॉक्टर तैयार किए जाते हैं ?
3. कोराना महामारी की दूसरी लहर में कौन सी गैस की कमी हुई ?
4. विश्व में सर्वाधिक चिकित्सा महाविद्यालय किस देश में हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. स्वास्थ्य क्या है ?
2. बीमारियों से बचाव के लिए क्या उपाय किया जाना चाहिए ?
3. स्वास्थ्य सेवाओं में समानता से क्या आशय है ?
4. सार्वजनिक चिकित्सा सेवा को समझाइए ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों की समीक्षा कीजिए।
2. कोरोना रोग से बचने के उपाय के सन्दर्भ में सरकारी निर्देशों को विस्तार से समझाइए।

परियोजना-

1. आपके क्षेत्र में केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा लागू की गई स्वास्थ्य योजनाओं की सूची बनाइए।

अध्याय–13

राज्य शासन की कार्य प्रणाली

आइये जानें- राज्य विधायिका, राज्यपाल, विधानसभा, विधायक, मुख्यमंत्री और मंत्रीमंडल, विधानसभा के कार्य एवं शक्तियाँ और विधानसभा की कार्यवाही ।

शासन कार्य प्रणाली की दृष्टि से भारतीय संघ को केन्द्र और उसकी ईकाईयों राज्य के रूप में विभाजित किया गया है। इनके मध्य, शक्ति एवं कार्यों का विभाजन संविधान की सातवीं अनुसूची के अन्तर्गत अनुच्छेद 246 में **संघसूची**, **राज्यसूची** एवं **समवर्तीसूची** के माध्यम से किया गया है। **संघ सूची** में विदेश, रक्षा, रेल आदि सहित वर्तमान में 100 विषय हैं, जिन पर कानून बनाने का कार्य **केन्द्र सरकार** करती है। **राज्य सूची** के विषयों पर राज्य सरकारें कानून बनाती हैं। इस सूची में पुलिस, स्थानीय शासन, जेल, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सहित 61 विषय हैं। **समवर्ती सूची** में वर्तमान में वन, विद्युत, शिक्षा आदि सहित 52 विषय हैं। इन विषयों पर केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों ही कानून बना सकती हैं। यदि दोनों सरकारें किसी एक ही विषय पर कानून बनाती हैं तो केन्द्र सरकार का कानून ही मान्य होगा। संविधान द्वारा राज्यों में शासन के सुचारू सञ्चालन के लिए राज्य शासन व्यवस्था के तीन अङ्ग है-राज्य विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। इस अध्याय में हम राज्य की विधायिका और कार्यपालिका के बारे में अध्ययन करेंगे

राज्य विधायिका- भारत राज्यों का एक संघ है। त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था के अन्तर्गत- केन्द्रीय शासन, राज्य/प्रांतीय शासन एवं स्थानीय शासन हैं। विधायिका से आशय राजनैतिक व्यवस्था के उस संगठन से है, जिसे कानून व जन-नीतियां बनाने, बदलने एवं हटाने का अधिकार होता है। राज्यों में विधायिका का निर्माण राज्यपाल और सदन से मिलकर होती है। विधायिका में दो सदन- विधानसभा (निम्नसदन) और विधानपरिषद (उच्चसदन) होते हैं। वर्तमान में राज्य शासन व्यवस्था में 6 राज्यों-उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में द्विसदनात्मक व्यवस्था की स्थापना की गई है।

राज्यपाल- राज्य का संवैधानिक प्रधान राज्यपाल होता है। उसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार केन्द्र सरकार की सिफारिश पर पाँच वर्षों के लिए की जाती है। राज्यपाल विधानसभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमन्त्री नियुक्त करता है और मुख्यमंत्री की सलाह से अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है। संवैधानिक रूप से राज्य की शक्तियां राज्यपाल में निहित होती हैं। विधानसभा से पारित विधेयक राज्यपाल के हस्ताक्षर के बाद ही कानून बनता है। राज्यपाल ही राज्य

विधानसभा का सत्र बुलाता है और समाप्ति की घोषणा करता है। यदि राज्य सरकार संविधान के अनुसार कार्य नहीं कर रही है तो वह अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को भेजता है।

राज्यपाल बनने के लिए योग्यताएँ-

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो।
3. वह किसी भी राज्य विधानमण्डल व संसद का सदस्य न हो।
4. वह विधानसभा सदस्य चुने जाने की योग्यता रखता हो।

विधानसभा- विधानसभा राज्य की वैधानिक सभा होती है। भारत के प्रत्येक राज्य में एक विधानसभा होती है, जो उस राज्य की राजधानी में स्थित होती है। प्रत्येक राज्य को कई विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक राज्य में विधानसभा क्षेत्रों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के अनुसार निर्धारित की गई है। प्रत्येक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से जनता एक प्रतिनिधि (**विधायक**) का चयन करती है।

विधायक का चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति द्वारा किया जाता है। विधान सभा की कार्यवाही के सुचारु संचालन के लिए निर्वाचित सदस्यों में से ही विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है। विधानसभा अध्यक्ष सदन में अनुशासन बनाये रखने के साथ विधानसभा की कार्यवाही का सञ्चालन करता है।

विधायक– विधानसभा के सदस्य को विधायक कहा जाता है। विधायक को आम भाषा में एम.एल.ए. (मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली) कहा जाता है। विधायक बनने के लिए आवश्यक योग्यताएं हैं–

1. वह भारत का नागरिक हो।
2. उसका नाम मतदाता सूची में हो।
3. वह 25 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो।
4. वह पागल या दिवालिया न हो।
5. वह किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो।
6. वह न्यायालय द्वारा 2 वर्ष से अधिक सजा प्राप्त न हो।

मुख्यमंत्री एवं मन्त्रिमण्डल- मुख्यमंत्री राज्य का राजनैतिक प्रमुख होता है। मुख्यमन्त्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा 5 वर्ष के लिए की जाती है। परन्तु समय से पूर्व वह अपना बहुमत खो दे तो उसकी नियुक्ति समय से पूर्व भी समाप्त हो जाती है। वह विधानसभा में विधायक दल का नेता होता है। मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। वह मन्त्रिपरिषद की बैठकों की अध्यक्षता

करता है। मुख्यमंत्री राज्य कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है। मन्त्रिपरिषद, मुख्यमंत्री के प्रति जबाबदेह होती है।

विधानसभा के कार्य एवं शक्तियाँ-

विधायी शक्तियां- राज्य के विधानसभा और विधानपरिषद में साधारण विधेयकों को प्रस्तुत किया जाता है। विधानपरिषद किसी भी साधारण विधेयक को 14 दिनों के लिए रोक सकती है। धनविधेयक (अनुच्छेद 110 के अनुसार किसी कर का अधिरोपण, उत्सादन, परिहार, परिवर्तन या विनिमय करता हो) केवल विधानसभा में ही प्रस्तुत किये जाते हैं।

क्या आप जानते है-

- विधान परिषद सदस्यों को प्राय: एम.एल.सी. (Member of Legislative Council) कहा जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रीति से होता है। कुछ सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किये जाते हैं। इसका सदस्य बनने की न्यूनतम उम्र 30 वर्ष है । इसके सदस्यों का निर्वाचन छ: वर्ष के लिए होता है।

कार्यपालिका सम्बन्धी शक्तियां– विधानसभा लोकप्रतिनिधि सदन है। मन्त्रिपरिषद अपने कार्यों के लिए सामूहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।

वित्तीय शक्तियां– विधानसभा को वित्तीय मामलों में पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त है। विधानसभा की अन्य शक्तियों में राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चुनाव मे इसके सदस्य भाग लेते हैं। विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्षों का होता है।

चित्र-13.1 विधानसभा की कार्यवाही

विधानसभा की कार्यवाही– विधानसभा में कानून बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की कार्यवाहियाँ होती हैं। सर्वप्रथम सत्तारूढ़ दल के सदस्य द्वारा विधेयक का प्रस्ताव सदन के पटल पर रखा जाता है। उस प्रस्ताव पर पक्ष एवं विपक्ष के सदस्यों द्वारा उस विधेयक के गुण–दोषों की व्यापक चर्चा की जाती है। विधेयक पर चर्चा के बाद उसके पक्ष–विपक्ष में मतदान की प्रक्रिया संपादित की जाती है। मतदान के दौरान विधेयक के पक्ष में यदि समर्थन होता है तो उसे कानूनी मान्यता के लिए राज्यपाल के पास भेजा जाता है। राज्यपाल इसे अपने सुझावों के साथ वापस भी लौटा सकता है। परन्तु उसी विधेयक को जब

पुन: विधानसभा द्वारा भेजा जाता है तो उसे हस्ताक्षर करने ही होते हैं। इस प्रकार विधेयक कानून बन जाता है। विधानसभा सदस्य प्रश्न पूछकर, निंदा प्रस्ताव लाकर, काम रोको प्रस्ताव के द्वारा विधानसभा की कार्यवाही को प्रभावित करते हैं। यदि विपक्ष को लगे कि सत्तारूढ़ दल के पास आवश्यक बहुमत नहीं है तो वह अविश्वास प्रस्ताव भी ला सकता है।

नियमानुसार विधान सभा की बहसों में सत्ता एवं विपक्ष दोनों पार्टियों के विधायक अपनी-अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। सम्बन्धित विषय पर प्रश्न पूछ सकते हैं या सुझाव दे सकते हैं कि सरकार को इस सम्बन्ध में क्या करना चाहिए। सदस्य इस विषय पर जो भी प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहते हैं, कर सकते हैं। इसके बाद विभाग से सम्बन्धित मंत्री प्रश्नों के उत्तर देते हैं और सदन को आश्वस्त करते हैं कि इस विषय में जरूरी कदम उठाये जा रहे हैं। मुख्यमंत्री तथा अन्य मंत्रियों को निर्णय लेने होते हैं और सरकार चलानी होती है। हम प्राय: उन निर्णयों के बारे में सुनते हैं या समाचार चैनलों अथवा समाचार पत्रों में उन्हें देखते व पढ़ते हैं। यद्यपि जो भी निर्णय लिए जाते हैं उन्हें विधानसभा के सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया जाना होता है। लोकतंत्र में विधानसभा के सदस्यों को मंत्रियों और मुख्यमंत्री से प्रश्न पूछने का अधिकार होता है। विधानसभा के कार्यों व समीक्षाओं की जानकारी हमें टीवी, अखबार, मीडिया आदि द्वारा प्राप्त होती है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न–

1. विधान सभा के सदस्य को.....कहा जाता है।
   अ. विधायक ब. सांसद स. पार्षद द. मुख्यमन्त्री
2. विधान सभा में बहुमत दल के नेता को कहा.....जाता है।
   अ. प्रधानमंत्री ब. राज्यपाल स. अध्यक्ष द. मुख्यमन्त्री
3. भारत के प्रत्येक राज्य में.....होती हैं।
   अ. विधानसभा ब. लोकसभा स. राज्यसभा द. संसद
4. राज्य का संवैधानिक प्रमुख..... होता है।
   अ. प्रधानमंत्री ब. राज्यपाल स. अध्यक्ष द. मुख्यमन्त्री

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विधान सभा सदस्य के लिए ..... आयु आवश्यक है। (25 वर्ष/30 वर्ष)
2. विधेयक ..... के हस्ताक्षर के बाद ही कानून बनता है। (राज्यपाल/मुख्यमन्त्री)
3. भारत के ..... राज्यों में विधान परिषद हैं। (6 / 10)
4. राज्य का संवैधानिक प्रधान कौन होता है। (राज्यपाल/ मुख्यमन्त्री)

सत्य/असत्य बताइए-

1. मन्त्रिपरिषद् सामूहिक रूप से मुख्यमंत्री के प्रति उत्तरदायी होती है। सत्य/असत्य
2. राज्यपाल का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है। सत्य/असत्य
3. मुख्यमन्त्री बनने के लिए 30 वर्ष आयु आवश्यक है। सत्य/असत्य
4. राज्यपाल बनने के लिए आयु 35 वर्ष आवश्यक है । सत्य/असत्य

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. संघ सूची	क. विधानसभा
2. समवर्ती सूची	ख. 100 विषय
3. राज्य सूची	ग. 52 विषय
4. विधायक	घ. 61 विषय

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. विधानसभा सदस्य का चुनाव कैसे होता है ?
2. राज्यपाल की नियुक्ति कौन करता है ?
3. विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव कैसे होता है ?
4. विधानसभा के कार्यों की सूचना जनता तक कैसे पहुंचती है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. विधायक बनने की योग्यताओं का वर्णन करो।
2. राज्यपाल के कार्य एवं शक्तियों का वर्णन करो।
3. मुख्यमंत्री की नियुक्ति के बारे में बताइये।
4. संविधान द्वारा प्रदत्त सूचियों का वर्णन करो?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विधान सभा में कानून निर्माण की प्रक्रिया को समझाइये।
2. राज्य विधायिका के शक्तियों और कार्यों का वर्णन कीजिए।

परियोजना कार्य-

1. अपने विधान सभा क्षेत्र में हो रहे चुनावों की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर उसमें सम्मिलित व्यक्तियों/पदाधिकारियों की सूची बनाइये।

अध्याय – 14

सञ्चार माध्यम और विपणि: (बाजार) की समझ

आइये जानें- सञ्चार माध्यम, भारत में सञ्चार माध्यमों की प्राचीनता, आधुनिक सञ्चार माध्यम, सञ्चार और प्रौद्योगिकी, सञ्चार माध्यम और लोकतंत्र, सञ्चार साधनों में विज्ञापन, विज्ञापन निर्माण, विज्ञापन के प्रकार, सामाजिक विज्ञापन, विज्ञापन और लोकतंत्र, बाजार का स्वरूप, थोक एवं फुटकर व्यापारी, ऑटो मोबाइल बाजार और बाजार में समानता।

सञ्चार माध्यम- लोगों को सूचनाओं या सन्देशों का आदान-प्रदान करने वाले साधनों को **सञ्चार माध्यम** कहते हैं। आप जानते हैं कि टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्र, सोशल मीडिया आदि सञ्चार माध्यमों के आधुनिक रूप हैं। इनके द्वारा सूचनाओं को जन-जन तक तीव्र गति से पहुंचाया जाता है और इनका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण विश्व होता है इसलिए इन्हें जनसञ्चार माध्यम (Mass Media) कहते हैं।

भारत में सञ्चार माध्यमों की प्राचीनता- प्राचीन काल से ही भारत में सञ्चार के साधनों का प्रयोग किया जाता रहा है। उस समय कबूतर आदि पक्षियों की सहायता से अपनी सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता था। वेदों के अनुसार देवताओं के हविष भाग को पहुँचाने का कार्य अग्निदेव द्वारा किया जाता है। अग्निदेव के द्वारा देवताओं के अनेक कार्यों का सम्पादन किया जाता है इसलिए अग्नि को **दूत, हव्यदाता, होता आदि विशेषणों** से सम्बोधित किया जाता है। सामवेद में उल्लेख है कि– **दूतं वो विश्ववेदसम्।** (12) **अग्निं दूतं वृणीमहे।** (3) अर्थात् **अग्नि** को देवताओं का **दूत** कहा गया है। उपर्युक्त से आशय यह है कि प्राचीन काल से **'अग्नि'** सञ्चार का द्रुतगामी साधन रहा है। आप जानते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व भारतवर्ष में ऐसे अनेक ऋषि, मुनि और योगी हुए, जो योगसाधना की शक्ति से एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते थे। यह सब सञ्चार का ही प्राचीन प्रतिरूप था। इस प्रकार वेद-विज्ञान आदिकाल से ही सञ्चार माध्यमों की दृष्टि से समृद्ध था। वर्तमान में भी वेद-विज्ञान के मंत्र प्रयोगों में देवताओं के आवाहन, पूजन एवं मनोवांछित फल प्राप्ति और विसर्जन तक के समस्त कार्यों का सम्पादन मंत्र सञ्चार माध्यमों से किया जाता है। महर्षि नारद को देवताओं का सूचना संग्राहक और सम्प्रेषक कहा जाता है। आपने सुना होगा कि आततायी राजा कंस की मृत्यु होने की सूचना आकाशवाणी द्वारा पहले ही प्राप्त हो गई थी। इसी प्रकार महाभारत युद्ध के समय महर्षि वेद व्यास द्वारा प्राप्त दिव्य दृष्टि से संजय

ने महाराज धृतराष्ट्र को युद्ध के सम्पूर्ण दृश्यों का वर्णन किया था। इन उपरोक्त उद्धरणों से पता चलता है कि भारत में सञ्चार प्रणाली प्राचीन काल में भी उन्नत थी। जो हमारे लिए गौरव की बात है।

आधुनिक सञ्चार माध्यम- वर्तमान समय में सञ्चार माध्यमों का स्वरूप बदल गया है। सन् 2005 तक देश में टेलीवीजन एवं समाचार–पत्रों के माध्यम से ही सूचनाओं का आदान–प्रदान होता था। परन्तु मोबाईल एन्ड्रॉइड (Android) फोन के विकास के बाद सूचनाओं का प्रेषण तीव्र गति से जनसामान्य तक होने लगा है। आज पलक झपकते ही खबरें सम्पूर्ण विश्व में फैल जाती हैं। यह सब सञ्चार के नवीन माध्यम मोबाईल, कम्प्यूटर, लेपटाप, टेबलेट आदि के कारण सम्भव हुआ है।

सञ्चार और प्रौद्योगिकी- वर्तमान समय में सञ्चार माध्यम के बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। क्योंकि आज सञ्चार के साधन मानव जीवन के अङ्ग बन गये हैं। आज से 25 वर्ष पूर्व टी.वी., समाचार पत्र, टेलिग्राम, और टेलीफोन आदि दूर सञ्चार के प्रमुख माध्यम थे। वर्तमान में नई-नई तकनीकों के विकास के कारण सम्पूर्ण विश्व मुट्ठी में एकत्रित हो गया है। आज से 20 वर्ष पूर्व हमें, समय देखने के लिए घड़ी, फोटो खींचने के लिए कैमरा, वीडिओ बनाने के लिए विडियो कैमरा लेना पड़ता था लेकिन प्रौद्योगिकी विकास के क्रम में आज मानव ने बहुत प्रगति कर ली है। स्मार्ट घड़ियां, मोबाईल, कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट टीवी आदि का विकास हो चुका है। इसालिए आज पूरी दुनिया मल्टीमीडिया हो चुकी है। स्मार्ट मोबाईल फोन की विशेषताओं- व्हाट्सॉएप, फेसबुक, ई-मेल आदि के द्वारा तो आज विश्व छोटा सा प्रतीत होने लगा है, जिसके कारण हम सुदूर स्थानों एव विदेश में संचालित होने वाले कार्यक्रमों से लाइव जुड़े रहते हैं। तकनीक के विकास से सञ्चार माध्यमों की ध्वनि व चित्रों की गुणवत्ता में सुधार आया है।

क्या आप जानते है-

- भारत में मोबाईल सेवा का प्रारम्भ 21 जुलाई 1995 ई. में हुआ था। पहली बार पश्चिमी बङ्गाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने सञ्चार मंत्री सुखराम से मोबाईल पर बात की थी।
- सेंसरशिप- सेंसरशिप से आशय सरकार की उस शक्ति से है, जिसके द्वारा सरकार कुछ विवरणों को प्रकाशित या प्रदर्शित करने पर रोक लगा सकती है।

सञ्चार माध्यम और लोकतंत्र- सञ्चार माध्यमों की लोकतंत्र में भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। सञ्चार माध्यमों को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ माना जाता है। इन माध्यमों के द्वारा ही हमें जानकारी प्राप्त होती है कि सरकार द्वारा जिन नीतियों और कानूनों का निर्माण किया जा रहा है, वे जनता के लिए कितने उपयोगी हैं? या फिर वे किसी दबाव समूह के प्रभाव से प्रभावित तो नहीं हैं। वर्तमान में हमें टीवी चैनलों, समाचार-पत्रों, व्हाट्सएप, फेसबुक के माध्यम से सरकार के समस्त कार्यों की जानकारी प्राप्त होती रहती है। तत्पश्चात हम अपना परामर्श सरकार समक्ष इन सञ्चार मध्यमों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

आपने समाचार-पत्रों, समाचार चैनलों आदि में पढ़ा और देखा होगा कि इनमें राष्ट्र हित की समस्याओं के बारे में छापा व दिखाया जाता है। पर्यावरण प्रदूषण और ओड़िशा राज्य में खनन क्षेत्र आवंटन का मामला आदि अनेक समस्याओं के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों के बारे में हमें इन सञ्चार माध्यमों से ही जानकारी प्राप्त होती है। निष्पक्ष चुनाव संपादन में सञ्चार माध्यमों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। सरकार की योजनाओं की वास्ताविक प्रगति के बारे में जानकारी भी इन्हीं सञ्चार माध्यमों से प्राप्त होती है, जो स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए अनिवार्य है।

चित्र- 14.1 टेलीविजन और कम्प्यूटर

अधिकांशत: लोकतांत्रिक देशों मे सञ्चार माध्यम पूर्ण स्वतंत्र नहीं हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी समाचार पत्र या चलचित्र आदि में जब किसी विषय को गलत तरीके से प्रस्तुत करने का आरोप लगता है तो सरकार ऐसे आरोपों की जांच कर, उन आरोपों की सिद्धि होने पर उन्हें हटवा देती है, इसे सेंसरशिप कहा जाता है। देश में आपातकाल लागू होने पर प्रेस की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने का सम्पूर्ण अधिकार सरकार के पास होता है। 1975 ई. में इन्दिरा गांधी सरकार ने प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया था। वर्तमान में सञ्चार माध्यमों के द्वारा विज्ञापन अधिक दिखाये जाते हैं। इन विज्ञापनों से उन्हें आय प्राप्त होती है, जिससे वे प्रभावित होते हैं इसलिए आजकल खबर की सच्चाई का पता लगाना दुष्कर है, जो लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है।

सञ्चार साधनों में वित्त की भूमिका– वर्तमान में जनसञ्चार माध्यमों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न तकनीकें अत्यन्त खर्चीली हैं। उदाहरण के लिए टी.वी. या फ़िल्म स्टूडियो में समाचार एवं चलचित्र निर्माण के लिए लाइटें, कैमरे, ध्वनि रिकार्ड करने के यन्त्र, सम्प्रेषण के लिए सेटेलाइट आदि संसाधनों की आवश्यकता होती है। ये व्यवस्थाएँ अत्यधिक महंगी होती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें काम करने वाले लोगों को वेतन आदि पर भी खर्च करना होता है। इन खर्चों के कारण जन सञ्चार, माध्यमों को बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है इसलिए वित्त का प्रबंध करने के लिए ,उन्हें विज्ञापनों का सहारा लेना पड़ता है। विज्ञापनों से सञ्चार माध्यमों को आय होती है तथा ये बहुत महंगे होते हैं। इन विज्ञापनों को प्रसारित करवाने वाले औद्योगिक समूह सञ्चार माध्यमों को प्रभावित करते हैं। क्योंकि

इनके द्वारा ही सञ्चार माध्यमों को अधिकतर वित्त का प्रबंध किया जाता है इसलिए कई बार सञ्चार माध्यम इन विज्ञापनदाताओं के उत्पाद की गुणवत्ता की जानकारी सही तरीके से प्रस्तुत नहीं करते हैं।

सञ्चार संसाधनों में विज्ञापन- विज्ञापन का अर्थ **विशिष्टसूचना** प्रदान करने से है। आधुनिक समाज में **विज्ञापन**, व्यापार को बढ़ाने वाले माध्यम के रूप में जाना जाता है। किसी उत्पाद और सेवा को बेचने अथवा प्रवर्तित करने के उद्देश्य से किया जाने वाला जन सञ्चार, विज्ञापन (Advertising) कहलाता है। विज्ञापन विक्रयकला का एक नियंत्रित जन सञ्चार माध्यम है, जिसके द्वारा उपभोक्ता को दृश्य एवं श्रव्य सूचना इस उद्देश्य से प्रदान की जाती है कि वह विज्ञापनकर्ता की इच्छा, विचार और सहमति से कार्य अथवा व्यवहार करने लगे। वर्तमान में औद्योगीकरण विकास का पर्याय बन गया है। उत्पादित वस्तु को लोकप्रिय बनाने तथा उसकी आवश्यकता महसूस कराने का कार्य विज्ञापन करता है। विज्ञापन अपनी छोटी–सी संरचना में बहुत कुछ संजोए होते हैं । आज विज्ञापन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गए हैं। किसी भी तथ्य को यदि बार–बार दोहराया जाए तो वह सत्य प्रतीत होने लगता है, यह विचार ही विज्ञापनों का आधारभूत तत्त्व है। विज्ञापन, हमें जानकारी प्रदान करते हैं, जैसे- जब बाजार कोई वस्तु में आती है तो उसके रूप–रङ्ग, संरचना व गुण की जानकारी विज्ञापनों के माध्यम से प्राप्त होती है, जिसके कारण उपभोक्ता को सही और गलत की पहचान होती है इसलिए विज्ञापन हमारे लिए आवश्यक हैं।

विज्ञापन निर्माण- विज्ञापन निर्माण में सञ्चार माध्यमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। किसी भी कम्पनी के विज्ञापनों के व्यय का भुगतान प्रायोजकों द्वारा किया जाता है और इसको विभिन्न माध्यमों जैसे- समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, टी.वी. विज्ञापन, रेडियों विज्ञापन, आउटडोर विज्ञापन ब्लॉग या बेवसाइट आदि द्वारा दिखाया जाता है। वाणिज्यिक विज्ञापनदाता अक्सर उपभोक्ताओं के मन में कुछ गुणों के साथ एक उत्पाद का नाम या छवि छोड़ जाते हैं, जिसे **ब्रान्डिंग** कहते हैं। ब्रान्डिंग उत्पाद वस्तु या सेवा की बिक्री बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। गैर वाणिज्यिक विज्ञापनों का उपयोग राजनीतिक दल, हित समूह, धार्मिक संगठन और सरकारी एजेन्सियाँ भी करती हैं।

हमारे जीवन में सञ्चार माध्यमों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है। ये हमारे विचारों के निर्माण में मुख्य भूमिका में होने के कारण, प्राय: यह कहा जाता है कि सञ्चार माध्यम ही हमारा मसौदा या एजेंडा तय करते हैं।

विज्ञापन के प्रकार– विज्ञापन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं– वाणिज्यिक, सामाजिक और सरकारी। यहाँ पर हम सामाजिक विज्ञापन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

सामाजिक विज्ञापन- ऐसे विज्ञापन जिनसे सामाजिक सन्देश प्राप्त होते हैं, सामाजिक विज्ञापन कहलाते हैं। इन विज्ञापनों का निर्माण सरकार व निजी संस्थाएँ समाज में किसी बड़े सन्देश का प्रसारण करने के लिए करवाती हैं, उदाहरण के लिए सुरक्षित रेलवे क्रासिंग को पार करने से सम्बन्धित विज्ञापन, कोराना महामारी से बचने के उपाय आदि।

विज्ञापन और लोकतंत्र- आज हम विज्ञापनों को टेलीविजन, रेडियो, सड़कों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं और इन्टरनेट के माध्यम से वेबसाइट पर देखते, सुनते और पढ़ते हैं। इन विज्ञापनों के लिए वित्त का प्रबंध उत्पादकों द्वारा किया जाता है। उत्पादक अपने लाभ के लिए प्राय: उत्पाद के वास्तविक तथ्यों को छुपा लेते हैं, जिससे समाज में नकारात्मक प्रभाव पडता है। अधिक धन प्राप्ति की लालसा में सञ्चार माध्यम भी गलत, अश्लील, भद्दे और सामाजिक भावानाओं के प्रतिकूल विज्ञापन दिखा देते हैं। जो स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए अच्छे नही हैं।

चित्र-14.2 मानव रहित रेलवे क्रासिंग

विपणि: (बाजार) का स्वरूप– वह स्थान जहाँ पर लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तुओं का क्रय- विक्रय करते हैं, विपणि: (बाजार) कहलाता है। संस्कृत वाङ्मय में बाजार को विपणि: और दुकान को आपण: धन(मुद्रा) को पण और व्यापारी को पणिक कहा गया है। जो लोग धन सम्बन्धित वस्तुओं का लेन–देन करते हैं, वे पणिक अथवा बणिक (वैश्य) कहलाते हैं। अथर्ववेद में उल्लेख है कि–

येन धनेन प्रपणं चरामि (3.15.5) इस मंत्र में धन से व्यापार करने एवं लाभ प्राप्त करने का संकेत है।

विपणि: (बाजार) के प्रकार- बाजार मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं–

1. प्रतिदिन खुलने वाले विपणि: (बाजार)
2. हाट (साप्ताहिक बाजार)

थोक एवं फुटकर व्यापारी– बाजार में बिकने वाली वस्तुओं का उत्पादन कारखानों, खेतों या घरों में होता है। इन उत्पादित वस्तुओं को जो व्यापारी थोक (बल्क) में खरीदतें हैं, थोक व्यापारी कहलाते हैं। तत्पश्चात ये व्यापारी इन वस्तुओं को फुटकर (रिटेल) बिक्री के लिए छोटे व्यापारीयों को बेच देते हैं,उन्हें फुटकर व्यापारी कहते हैं। फुटकर व्यापारी इन वस्तुओं को ग्राहकों को बेचते हैं। इस प्रकार खरीदने व बेचने की एक लम्बी श्रृँखला बनी हुई है। वर्तमान में तो हमें सामान खरीदने के लिए बाजार जाने के ही आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जन संचार संसाधनों के विकास के चलते अब हम ऑनलाइन शॉपिंग करके वस्तुएँ घर पर ही मंगवा लेते हैं। वर्तमान में यह आवश्यक नहीं है कि खरीददारी केवल बाजार की दुकानों से ही हो। प्राचीन काल में भी वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता था। इसका संकेत हमें अथर्ववेद में मिलता है– **शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च।** (3.15.4) अर्थात् व्यापार में क्रय–विक्रय की चर्चा की गई है। अथर्ववेद में संकेत है- **ऋणमिव संनयन्।** (19.45.1) अर्थात् ऋण (उधार) लेकर व्यापार करना एवं ऋण चुकाना चाहिए।

चित्र- 14.3 आधुनिक शॉपिंग मॉल

क्या आप जानते है-

- ऐसे बाजार जहाँ पर लोगों की आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु एक ही स्थान पर उपलब्ध होती है, शॉपिंग मॉल कहलाते हैं। ये पारम्परिक बाजारों के ही परिवर्तित रूप हैं। यहाँ मिलने वाला सामान अपेक्षाकृत महँगा होता है क्योंकि शॉपिंग मॉल में होने वाले अतिरिक्त खर्च को भी उन्हीं सामानों की कीमत में जोड़ दिया जाता है। इन शॉपिंग मॉल में रेस्टोरेंट और मनोरंजन के साधन भी होते हैं। ब्राण्डेड कम्पनियाँ अपने उत्पादों को अधिकतर, इन्हीं शॉपिंग मॉल में बेचने के लिए रखती है।
- थोक– थोक से आशय किसी भी वस्तु को बड़ी मात्रा में खरीदने व बेचने से है।
- साप्ताहिक बाजार– ऐसे बाजार जो निश्चित स्थान पर सप्ताह में एक या दो बार लगाये जाते हैं, उन्हें साप्ताहिक बाजार कहते हैं। इनमें प्राय: घरेलू उपयोग की सामग्री बिकती है।

ऑटो मोबाईल बाजार– ऐसे बाजार जिनमें बाईक, स्कूटी, कार , ट्रक बस आदि परिवहन के साधनों एवं उनसे सम्बधित मशीनरी, पार्टस आदि सामान मिलता है, उन्हें **ऑटो मोबाईल बाजार कहते हैं** । इन

बाजारों में उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ या तो स्वंय अपना विक्रय केन्द्र खोलती हैं या फ़िर किसी व्यक्ति या समूह से आरक्षित पूजीं जमा कर, उन्हें विक्रय केन्द्र खोलने की अनुमति देती हैं।

बाजारों में समानता–इन बाजारों में छोटे दुकानदारों से लेकर बड़े शॉपिंग मॉल तक के व्यापारी खरीदने बेचने का ही कार्य करते हैं, फिर भी इनमें बहुत अन्तर देखने को मिलता है। दोनों व्यापारियों के लाभ में भी बहुत अधिक अन्तर होता है। बड़े व्यापारी की तुलना में छोटा व्यापारी बहुत कम लाभ प्राप्त करता है क्योंकि उसके पास पूँजी कम होती है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न –

1. मीडियम का अर्थ.....है।

अ. मध्य ब. माध्यम स. माध्यमिक द. इनमें से कोई नहीं।

2. जन सञ्चार माध्यम को.....कहा जाता है।

अ. मास मीडिया ब. पब्लिक मीडिया

स. लोक मीडिया द. इनमें से कोई नहीं।

3. सम्प्रेषण का अर्थ.....है।

अ. लाना ब. भेजना स. पहुंचाना द. इनमें से कोई नहीं

4. भारत में मोबाईल सेवा सन्.....में प्रारम्भ हुई।

अ. 1995 ई. में ब. 2010 ई. में

स. 1994 ई. में द. इनमें से कोई नहीं

5. आप घर में बैठकर.....खरीददारी कर सकते हैं।

अ. आन लाइन ब. आफ़ लाइन

स. दुकानदार से द. फेरीवाले से

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. प्रेस पर .....में सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। (1975 ई./1977 ई.)
2. लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ ..... को माना जाता है। (प्रेस/प्रौद्योगिकी)
3. वस्तुओं को बेचने के लिए ..... का सहारा लिया जाता है। (विज्ञापनों/गुणवत्ता)
4. वस्तु का क्रय-विक्रय ..... में होता है। (बाजार/चौराहा)
5. पणिक से आशय ..... से है। (व्यापार/धन)

सत्य/असत्य बताइए -

1. लोकतन्त्र में संचार माध्यमों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। (सत्य/असत्य)
2. समाचार पत्र, रेडियो, मोबाइल, आदि संचार के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। (सत्य/असत्य)
3. विज्ञापन सामाजिक व सरकारी दो प्रकार के होते है। (सत्य/असत्य)
4. छोटे व्यापारी बडे व्यापारी की अपेक्षा अधिक लाभ कमाता है। (सत्य/असत्य)
5. शापिंग, मॉल में आवश्यकता की सभी वस्तुएँ मिलती है। (सत्य/असत्य)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. महाभारत में दिव्य दृष्टि किसके पास थी ?
2. हमारे देश में इमरजेन्सी (आपातकाल) कब लागू हुई थी ?
3. विज्ञापन मुख्यत: कितने प्रकार के होते हैं ?
4. कोई एक सरकारी विज्ञापन का उदाहरण दीजिए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. सञ्चार माध्यम में तकनीकी भूमिका का वर्णन कीजिए।
2. लोकतन्त्र में समाचार माध्यमों की भूमिका स्पष्ट कीजिए ।
3. सेंसरशिप किसे कहते हैं ?
4. सोशल मीडिया के बारे में आप क्या जानते हैं ?
5. आनलाइन शॉपिंग क्या है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सञ्चार माध्यम और वित्त के बारे में विस्तृत वर्णन कीजिए ?
2. विज्ञापनों के बारे में विस्तार से वर्णन कीजिए।

परियोजना-

1. अपने गुरुजी के निर्देशन में वैदिक शिक्षा प्रणाली की महत्ता पर विज्ञापन का निर्माण कीजिए।

अध्याय-15

समानता एवं लिंग बोध

आइये जानें- भारतीय संविधान में समानता, सामाजिक समरसता का आधार वेद शिक्षा, समानता के लिए संघर्ष, असमानता हटाने में सरकार का प्रयास, समाज में स्त्री–पुरुष समानता।

समानता से आशय है कि किसी समाज की वह स्थिति जिसमें समाज के सभी लोग समान अधिकार रखते हैं। सामाजिक समानता के लिए कानून के समक्ष समान अधिकार इसकी न्यूनतम आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत सुरक्षा, मतदान, भाषण, सभा करना और शिक्षा आदि पर व्यक्ति की समान पहुँच होनी चाहिए। समानता एक व्यापक अवधारणा है, जिसके अन्तर्गत सामान्यत: लोगों के बीच मूलभूत समानता, अवसरों की समानता, स्थितियों की समानता, परिणामों की समानता को वृहद रूप में देखा जा सकता है।

वैदिक वाङ्मय में समग्र मानवजाति को एक इकाई के रूप में देखा गया है। समाज को विराट पुरुष के रूप में दर्शाया गया है। "**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायतः॥**" **(ऋ.** 10.90.12) अर्थात् सृष्टि के मूल परब्रह्म (विराट पुरुष) का मुख ब्राह्मण, भुजाएँ क्षत्रिय, जंघाएँ वैश्य एवं पैर से शूद्र वर्णों की उत्पत्ति है। मनुस्मृति में इस सामाजिक संरचना का मूल आधार लोक मंगल की कामना एवं समाज का सर्वतोमुखी विकास को बताया गया है। **लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्। (मनुस्मृति** 1.31) अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र अखंड ब्रह्मा के अंतिम सूक्ष्म सृष्टि है। इसके पश्चात स्थूल सृष्टि के लिए ब्रह्मा स्वयं को दो भाग नारी और पुरुष में विभक्त कर लेते हैं। मानसिक एवं क्षमता के लिए ऋग्वेद में ऋषि कहता है समानी व आकूति: समाना हृदयाति व:। समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। (ऋ.10.191.4) अर्थात तुम्हारे मन, हृदय और संकल्प समान हो सब लोग मिलकर रहों। **सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ.**10.191.2) अर्थात् हम सब सदैव एक साथ चले, हम सब सदैव एक साथ बोले, हम सभी का मन एक जैसा हो। हमारे विचार समान हों, हम मिलकर रहें। हम सभी ज्ञानी बनें, विद्वान बनें। जिस प्रकार हमारे पूर्वज अपनी धन-संपदा का आपसी सहमति ओर परस्पर समानता के आधार पर वितरण किया करते थे, उसी तरह हम अपने पूर्वजों के समान आचरण करें। **अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगया।(ऋ.**5.60.5) इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से लोगों में समानता की बात कही गई है, 'हे पृथिवी वासियों न तुमसे कोई बड़ा है और

न छोटा तुम सब भाई-भाई हो सौभग्य की प्राप्ति के लिए आगे बड़ो। राजा को भी इन्द्र के समान सम दृष्टि वाला कहा गया है, "**यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय।" (सामवेद** 1796) इस मन्त्र में इन्द्र के तदवत् स्वामी बनने की कामना की गई है। यहाँ इन्द्र राजा के रूप में ग्राह्य है। राजा अपनी प्रजा को एक समान दृष्टि से देखता है।

भारतीय संविधान में समानता– भारतीय संविधान की प्रस्तावना में समानता का उल्लेख है, जो हमारे संवैधानिक मूल्यों में से एक है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों के रूप में समानता के अधिकारों का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 14–18 (भाग-2) के अन्तर्गत किया गया है। भारतीय लोकतन्त्र में शासन ने संविधान द्वारा मान्य किए गए समानता के अधिकार को दो तरह से लागू किया है। 1. कानून के द्वारा 2. सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करके। भारतीय संविधान ने कानून, धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म–स्थान, अमीर–गरीब आदि सभी को समान माना है। लोकतन्त्र में सभी को समान मताधिकार प्राप्त है। यह समानता वोट डालने के साथ अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती है। भारत जैसे विशाल लोकतान्त्रिक देश में लोगों को अनेक कार्यों में असमानता का भेद मिटाकर एक साथ एक छत के नीचे पढाई,भोजन आदि सार्वजनिक कार्य कर रहे हैं।

सामाजिक समरसता का आधार वेद शिक्षा– कई दशकों से लोगों के मस्तिष्क में यह अवधारणा बैठी है कि वेदों का ज्ञान, शिक्षा, यज्ञ आदि कार्य ब्राह्मणों तक ही सीमित हैं। परन्तु लोगों की यह अवधारणा उचित नहीं है। वेदों में यह वर्णन आता है कि वाजपेय/अश्वमेघ नामक यज्ञ क्षत्रिय राजा ही करता है। वाजपेय यज्ञ में अनेक इष्टियाँ होती हैं, उनमें एक इष्टि ऐसी होती है, जो मानवीयगुण से ओतप्रोत शिक्षा है। एक गरीब स्त्री जो सबसे पिछड़ी जाति से सम्बन्ध रखती है, वाजपेय यज्ञ के अनुसार राजा उसके घर जाकर कई दिन उसके घर रहकर इष्टि यज्ञ सम्पन्न करता है। वेदों व पुराणों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं।अत: वेद पुराण, जाति–पाँति, गरीब–अमीर के भेद भाव से ऊपर उठकर मानवीय संवेदना पूर्वक सामाजिक

क्या आप जानते है-

- संविधान- यह वह दस्तावेज है, जिसमें देश की जनता और सरकार द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों अधिनियमों को निरुपित किया गया है।
- सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार- सभी व्यस्क (18 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के) नागरिकों को मतदान का अधिकार है, चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।
- दिव्यांगजन अधिकार 2016- इस अधिकार के द्वारा दिव्यांगजनों की समाज में सम्पूर्ण भागीदारी संभव बनाना सरकार का दायित्त्व है। इस अधिनियम के द्वारा दिव्यांगजनों को नि:शुल्क शिक्षा, सार्वजनिक स्थलों पर आसन पहुँच आदि अधिकार प्रदान किए गये हैं।

समरसता बढाने का निर्देश करते हैं। **शुक्ल** यजुर्वेद **और** अथर्ववेद में उल्लेख है कि **यो नः पिता जनिता यो विधाता** (17. 27), **स प्रजाभ्यो वि पश्यति यच्च प्राणिति यच्च न** (13.4.11) हम सबके पिता, जनक व कर्ता एक है। हमारे ईष्ट परमात्मा सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखता है। हमें भी इसी बात का अनुकरण करना चाहिए।

समानता के लिए संघर्ष- लोकतंत्र में नागरिकों को विविध रूपों में समानता का अधिकार प्रदत्त है। परन्तु व्यवहारिक रूप में देखें तो लोग आज भी समानता के लिए संघर्ष कर रहे हैं।भारत में बीडी मजदूरों, मछुआरों, कृषकों और श्रमिकों आदि के ऐसे अनेक समूह हैं, जो आज भी अपने समानता के अधिकार के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इन सबके मूल में उनकी मानवीय गरिमा है। इस प्रकार के आन्दोलनों का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मध्यप्रदेश के **तवा मत्स्य संघ** का है। होशंगाबाद में तवा नदी पर एक बाँध निर्माण हुआ था, जिसके कारण वहां से अनेक लोग विस्थापित हुए। उनमें से कुछ लोगों ने बांध के आस–पास रहकर अल्प मात्रा में कृषि करने के अतिरिक्त मछली पकड़ने का व्यवसाय प्रारम्भ किया। परन्तु 1994 ई. में सरकार द्वारा इस बांध क्षेत्र में मछली पकड़ने का कार्य निजी ठेकेदारों को सौप दिया। अत: वहां के निवासियों का रोजगार छिन गया। अब इन निवासियों ने तवा मत्स्य संघ नाम से एक समूह बनाकर सरकार से जीवन निर्वाह के लिए बाँध में मछली पकड़ने का काम जारी रखने की अनुमति मांगी। इस समूह के लोगों ने इसके लिए आन्दोलन किया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप सरकार ने एक समिति गठित की, जिसने गांव वालों के जीवनयापन के लिए मछली पकडने की अनुशंसा की और उसे सरकार ने भी मान लिया था।

असमानता हटाने में सरकार का प्रयास– भारत में ऐसे अनेक कानून हैं, जो व्यक्ति के समान व्यवहार प्राप्त करने के अधिकार की रक्षा करते हैं। कानून के द्वारा सरकार ने समानता और असमानता के बीच उत्पन्न खाई को समाप्त करने का प्रयास किया है। आज प्राइमरी विद्यालयों में दोपहर के भोजन की व्यवस्था और समान गणवेश लागू करना, इस दिशा में सरकार द्वारा उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है। सरकार ने समाज में समानता लाने के लिए अनेक कार्यक्रम और कानून बनाये हैं, जिसके कारण समाज के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। असमानता को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि लोगों के अन्दर जागरुकता लाई जाए। लोकतान्त्रिक समाज में हर व्यक्ति सम्मान जनक व्यवहार का अधिकारी है। समाज में समानता स्थापित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है, जिसमें सभी व्यक्तियों को सरकार के साथ मिलकर सहयोग करना चाहिए।

समाज में स्त्री–पुरुष समानता– संज्ञा शब्दों के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति होने का बोध होता है, उसे लिंग बोध कहते हैं। वैदिक वाङ्मय में स्त्री को पुरुष की सहधर्मिणी, गृहस्वामिनी और अर्द्धांगिनी

कहा गया है। तत्कालीन समाज में स्त्री के बिना यज्ञादि कार्य पूर्ण नही होते थे। इसका संकेत ऋग्वेद में किया गया है- "**अग्ने पत्नीरिहा वह, देवानामुशतीरुप।**" (1.22.9) इस मंत्र में यज्ञ में देवताओं के साथ देवपत्नियों को भी लाने की प्रार्थना अग्नि से की गई है, जो स्त्री-पुरुष समानता की ओर संकेत करता है। अथर्ववेद में भी उल्लेख है- "**सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।**" (3.30.3) अर्थात् भाई एवं बहन एक समान है। इनके पालन पोषण में कोई भेद न हो, दोनों द्वेषरहित होकर परस्पर मिलकर वार्ता करें। स्त्री को स्वेच्छा से अपना जीवन साथी चुनने तथा वैधव्यता की स्थिति में पुनर्विवाह करने का अधिकार प्राप्त था। इसकी पुष्टि अथर्ववेद में उल्लेखित इस मंत्र से होती है- "**इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्। धर्मं पुराणमनुपालयन्ति तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥**"(18.3.1) वैदिक वाङ्मय में अनेक मंत्र दृष्टा ऋषिकाओं का उल्लेख है, उनमें इन्द्राणी, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा और आत्रेयी आदि हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में प्राचीनकाल में स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी तथा समाज में स्त्री और पुरुष में भेदभाव नही था। सामन्यत: स्त्रियों में कुछ विशेष अभिरुचि जैसे- बच्चों का पालन–पोषण और सेवा परायणता होने के कारण ही आदि काल से इन्हें सम्मानित दृष्टि से देखा जाता रहा है।

क्या आप जानते है-

- भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल थी।
- भारत की प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार थी।
- भारत की प्रथम महिला रेलचालक सुरेखा यादव थी।
- भारत की प्रथम महिला पायलट सरला ठकराल थी।

कालान्तर में विदेशी आक्रान्ताओं के भारत में राज्य स्थापित होने के पश्चात् सामाजिक दृष्टि से महिलाओं की स्थिति निरन्तर कमजोर होती गई। साथ ही उनके अधिकार और कार्य क्षेत्र सीमित कर दिए गए थे। आधुनिक समय में शनै:-शनै: स्त्रियों की दशा में उत्तरोत्तर सुधार हुआ है। आजकल के अभिभावक लड़का व लड़की में कोई भेद नहीं मानते हैं। इक्कीसवीं सदी में स्त्रियाँ जीवन के प्रगति पथ पर निरन्तर प्रगति कर रही हैं। आज महिलाएँ खेलकूद, सेना, ललित कला, राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक और शिक्षा आदि के क्षेत्र में शिखर पर पहुँची हैं। इन्दिरा गाँधी, कर्णम मल्लेश्वरी, लता मंगेशकर, अरुन्धति राय, सुधामूर्ति कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, पी.वी.सिन्धु, और इन्दिरा नूई आदि हैं।

वर्तमान में बदलते हुए परिवेश के साथ स्त्री-पुरुष में असमानता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। आज लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करके पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ-साथ चल रही हैं। सभी सरकारी और गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में उच्च पदों पर कार्य कर रही हैं। सरकार ने स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 33% पद उनके के लिए आरक्षित किये हैं। सरकार ने **'सब पढ़ें, सब बढ़ें'** का नारा दिया है। जिससे सभी को समान रूप से शिक्षा के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. समानता के अधिकारों का उल्लेख अनुच्छेद..... में है–

अ. 14–18 में ब. 20–25 में स. 35–40 में द. 2–6 में

2. भारतीय संविधान सभी को.....मानता है।

अ. अलग-अलग ब. एक समान स. विकसित द. उच्च

3. निम्न में से भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति .....हैं।

अ. इन्दिरा गाँधी ब. सुमित्रा महाजन

स. श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल द. द्रौपदी मुर्मु

4. निम्न में से भारत की प्रथम महिला रेल चालक .....हैं।

अ. एकता अरोरा ब. सुमित्रा महाजन

स. सुरेखा पांचाल द. सुरेखा यादव

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. संविधान की प्रस्तावना में ..... का उल्लेख है। (शिक्षा/समानता)
2. होशंगाबाद ..... राज्य में है। (आन्ध्र प्रदेश/मध्यप्रदेश)
3. देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री ..... थी। (प्रतिभा पाटिल/इन्दिरा गांधी)
4. भारत की प्रथम महिला पायलट.....थी। (सरला ठकराल/रेखा दत्ता)

सत्य/असत्य बताइए-

1. सभी नागरिको को लोकतन्त्र में समान मताधिकार प्राप्त है। सत्य/असत्य
2. प्राचीन समय में अश्वमेघ यज्ञ किये जाते थे। सत्य/असत्य
3. इन्दिरा गांधी देश की दूसरी महिला प्रधानमन्त्री थी। सत्य/असत्य
4. स्थानीय स्वशासन में 33% पद महिलाओं के लिए आरक्षित है। सत्य/असत्य

सही-जोड़ी मिलान कीजिए-

1. कल्पना चावला	क. बैडमिन्टन
2. पी.वी. सिन्धु	ख. भारोत्तोलन
3. कर्णम मलेश्वरी	ग. इन्फोसिस फउण्डेशन की अध्यक्ष
4. सुधा मूर्ति	घ. अन्तरिक्ष यात्री

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में किसका वर्णन है ?
2. भारत में कानून की दृष्टि से सभी व्यक्ति कैसे हैं ?
3. होशंगाबाद किस राज्य में है ?
4. तवा मत्स्य संघ की स्थापना कब हुई थी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. वेदों में सामाजिक समरसता को समझाइये।
2. समानता को परिभाषित कीजिए।
3. तवा संघर्ष के बारे में आप क्या जानते हैं ?
4. लिंग बोध किसे कहते है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में समानता के अधिकार का वर्णन कीजिए।
2. स्त्रियों और पुरुषों समानता पर अपने विचार प्रकट करो।

परियोजना-

1. स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेनी वाली महिलाओं की सूची बनाकर किन्ही दो की जीवनी का उल्लेख करो।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण द्वितीय वर्ष /प्रथमा- II वर्ष /कक्षा- सातवीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय -सामाजिक विज्ञान

सेट –A

- **सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।**
- **सभी प्रश्न के उत्तर पेपर में यथास्थान पर ही लिखें ।**
- **इस प्रश्न पत्र में कुल 42 प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न के सामने निर्धारित अंक दिये गये हैं।**
- **उत्तीर्णता हेतु न्यूनतम 40% अंक निर्धारित हैं।**

- It is mandatory to attempt all questions compulsorily.
- Write down the answers at the appropriate places provided
- This question paper contains 42 questions Marks for each question is shown on the side.
- The minimum passing marks is 40 %.

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहुविकल्पात्मक प्रश्न- $1\times10=10$

1. बड़ी समुद्री गुफाओं को..... कहते हैं।

(अ) हिमनद (ब) तटीय मेहराब (स) मेष शिला (द) घाटी

2. वन्य जीवों का प्राकृतिक निवास स्थान.....हैं।

(अ) घर (ब) जंगल (स) बाग (द) चिड़ियाघर

3. वाराणसी.....नदी के तट पर स्थित है।

(अ) गङ्गा (ब) यमुना (स) चम्बल (द) गोमती

4. राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना.....ने की थी।

(अ) राजेन्द्र प्रथम (ब) दन्ति दुर्ग (स) पृथिवीराज चौहान (द) कृष्ण प्रथम

5. मंगोल.....के निवासी थे।

अ. मध्य एशिया ब. दक्षिण एशिया स. अरब द. यूरोप

6. राखी व्यवस्था के अन्तर्गत सिक्ख लोग.....कर लेते थे।

अ. 20% ब. 25% स. 30% द. 15%

7. 2019-20 में.....नामक महामारी ने पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया था।

अ. कोराना ब. मलेरिया स. डेंगु द. हैजा

8. विधान सभा के सदस्य को.....कहा जाता है।

अ. विधायक ब. सांसद स. पार्षद द. मुख्यमन्त्री

9. भारत में मोबाईल सेवा.....में प्रारम्भ हुई थी।

अ. 1995 ई. ब. 2010 ई. स. 1994 ई. द. इनमें से कोई नहीं

10. भारतीय संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों को.....मौलिक अधिकार प्रदत्त हैं।

अ. पाँच ब. छ: स. सात द. इनमें से कोई नहीं

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये- $2 \times 5 = 10$

11. केन्द्र में भूकम्प की तीव्रता .....होती है। (अधिक/कम)

12. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने.....पहली बार पर्यावरण कार्यक्रम बनाया था। (1972 ई. /1992 ई.)।

13. अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या .....पर निर्भर है। (व्यापार/कृषि)

14. भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम धर्म .....में आया। (5वीं सदी/7वीं सदी)

15. सायणाचार्य ने वेदों पर..... लिखा था। (भाष्य/ टीका)

सत्य/असत्य बताइए- $2 \times 5 = 10$

16. थार मरुस्थल विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल है। (सत्य/असत्य)

17. महाराणा प्रताप का जन्म राजस्थान में हुआ। (सत्य/असत्य)

18. कोरोना कीटाणु जनित बीमारी है। (सत्य/असत्य)

19. सामाजिक व सरकारी दो प्रकार के विज्ञापन होते हैं। (सत्य/असत्य)

20. सभी नागरिकों को लोकतन्त्र में समान मताधिकार प्राप्त है। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान– $2 \times 5 = 10$

21. गुर्जर प्रतिहार	क. बङ्गाल
22. राष्ट्रकूट	ख. दक्कन
23. पाल	ग. गुजरात
24. खिलजी वंश	घ. 1206 ई.-1290 ई.
25. गुलाम वंश	ङ. 1290 ई.-1320 ई.

अतिलघुत्तरीय प्रश्न– $2 \times 5 = 10$

26. पृथिवी के ऊपरी भाग को क्या कहते हैं?

27. प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं?

28. ग्रामीणों के घर कैसे होते हैं?

29. प्रशस्ति किसे कहते है?

30. हमारे देश की प्रमुख जनजातियों के नाम लिखिये।

31. महाराजा रणजीत सिंह अपनी राजधानी किसे बनाया था?

32. विश्व में सर्वाधिक चिकित्सा महाविद्यालय किस देश में हैं?

33. राज्यपाल की नियुक्ति कौन करता है?

34. विज्ञापन मुख्यत: कितने प्रकार के होते हैं?

35. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में किसका वर्णन है?

लघु उत्तरीय प्रश्न- $2 \times 5 = 10$

36. मानव पर्यावरण से आप क्या समझते हैं?

37. मरुस्थल से क्या आशय है?

38. मध्ययुगीन भारत के व्यापार के बारे में बताइए?

39. राजा लोग मन्दिरों का निर्माण क्यों करवाते थे?

40. निर्गुण और सगुण सम्प्रदायों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- $2 \times 5 = 10$

41. भूकम्प और उसकी उत्पत्ति के बारे में विस्तार से उल्लेख कीजिए।

42. स्त्रियों और पुरुष समानता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण द्वितीय वर्ष /प्रथमा- II/कक्षा- सातवीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय- सामाजिक विज्ञान

सेट – B

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहुविकल्पीय प्रश्न- 1×10 =10

1. पृथिवी के अन्दर अचानक होने वाली हलचलों के कारण.....आते हैं।

अ. ज्वार-भाटा ब. ज्वालामुखी स. भूकम्प द. इनमें से कोई नहीं

2. साबुन के साथ झाग बनाने वाले जल को.....कहते हैं।

अ. कठोर जल ब. मृदु जल स. प्रदूषित जल द. क्षारीय जल

3. विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल.....है।

अ. सहारा ब. थार स. गोवी द. अटाकामा

4. अभिलेखों को.....में रखा जाता है।

अ. अभिलेखागार ब. पुलिस थाने स. जेल द. ये सभी

5. ताजमहल..... में स्थित है।

अ. दिल्ली ब. राजस्थान स. हरियाणा द. आगरा

6. भगवान जगन्नाथ की प्रतिमा.....की होती है।

अ. पाषाण ब. लौह स. काष्ठ द. स्वर्ण

7. अहमदशाह अब्दाली ने पेशवा के विरुद्ध .....में युद्ध लड़ा था।

अ. 1265 ई. ब. 1733 ई. स. 1754 ई. द. 1763 ई.

8. भारत विश्व का दवाई निर्मित करने वाला..... बड़ा देश है।

अ. प्रथम ब. द्वितीय स. तृतीय द. चौथा

9. राज्य का संवैधानिक प्रमुख.....होता है।

अ. प्रधानमंत्री ब. राज्यपाल स. अध्यक्ष द. मुख्यमन्त्री

10. भारतीय संविधान सभी को.....मानता है।

अ. अलग-अलग ब. एक समान स. विकसित द. उच्च

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- $2 \times 5 = 10$

11. जैव विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में .....स्थान है। (चौथा/दसवाँ)

12. गाडविन ऑस्टिन..... ऊँची चोटी है। (8511 मी. /8611 मी.)

13. दन्तिदुर्ग ने .....को अपनी राजधानी बनाया। (नासिक/वातापी)

14. जनजातीय लोग ..... के मूल निवासी है। (भारत/अफ्रीका)

15. वस्तु का क्रय-विक्रय ..... में होता है। (बाजार/चौराहा)

सत्य/असत्य बताइए- $2 \times 5 = 10$

16. जैव विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में 10 वां स्थान है। (सत्य/असत्य)

17. नगरीय बस्तियाँ विरल होती है। (सत्य/असत्य)

18. लोदी वंश का प्रथम शासक सिकन्दर लोदी था। (सत्य/असत्य)

19. गोंड जनजाति के लोग स्थानान्तरित कृषि करते हैं। (सत्य/असत्य)

20. समाचार पत्र, रेडियो, मोबाइल, आदि संचार के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान- $2 \times 5 = 10$

21. शुष्क मरुस्थल	क. सहारा
22. बौद्ध मठ	ख. लद्दाख
23. नाथूला	ग. सिक्किम
24. ठण्डा मरुस्थल	घ. हेमिस गोंपा
25. रोहतांग	ड. हिमाचल प्रदेश

अति लघु उत्तरीय प्रश्न- $2 \times 10 = 20$

26. पृथिवी की सबसे आन्तरिक परत को क्या कहते हैं ?

27. पर्यावरण किसे कहते हैं ?

28. सहारा मरुस्थल की लम्बाई कितनी है ?

29. अभिलेख किसे कहते हैं ?

30. बाबर ने इब्राहिम लोदी को किस युद्ध में पराजित किया था ?

31. महमूद गजनवी ने भारत पर कितने आक्रमण किया था ?

32. जनजाति किसे कहते हैं ?

33. मध्वाचार्य का सम्बन्ध किस सम्प्रदाय से था ?

34. विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव कैसे होता है ?

35. भारत में कानून की दृष्टि से सभी व्यक्ति कैसे हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न- $4 \times 5 = 20$

36. वनों के महत्व को समझाइए।

37. पृथिवी पर शैल कितने प्रकार की होती हैं, नामोल्लेख कीजिए।

38. 18वीं सदी के सिख राज्य के बारे में बताइये।

39. स्वास्थ्य सेवाओं में समानता से क्या आशय है ?

40. सोशल मीडिया के बारे में आप क्या जानते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- $10 \times 2 = 20$

41.विधान सभा में कानून निर्माण की प्रक्रिया को समझाइये।

42. भक्ति आन्दोलन पर टिप्पणी लिखिए।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण द्वितीय वर्ष /प्रथमा- II वर्ष /कक्षा- सातवीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय -सामाजिक विज्ञान

सेट – C

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहु विकल्पीय प्रश्न- 1×10 =10

1. पर्यावरण को.....भागों में बाँटा गया है।

अ. एक ब. दो स. तीन द. चार

2. भारत के सबसे ठण्डे रेगिस्तान का नाम.....है।

अ. सहारा ब. थार स. गोवी द. लद्दाख

3. अठारहवीं सदी में भूगोलवेत्ता.....ने एटलस नूवो नामक विश्व का मानचित्र बनाया था।

अ. ग्विलाम द लिस्ले ब. अल् इदरीसी स. वास्कोडिगामा द. हैलिंगटन

4. खानवा का युद्ध..... में हुआ था।

अ. 1527 ई. ब. 1526 ई. स. 1489 ई. द. 1398 ई.

5. अहोम..... भारत में आये थे।

अ. नेपाल ब. भूटान स. बर्मा द. चीन

6. शंकराचार्य के अनुसार आत्मा और परमात्मा दोनों..... हैं।

अ. अलग-अलग ब. साथ–साथ स. एक ही द. कोई नही

7. ओ.पी.डी. का पूरा नाम..... है।

अ. आउट पेशेन्ट डिपार्टमेन्ट। ब. आउट प्वाइंट डिपार्टमेन्ट।

स. आल प्वाइंट डिपार्टमेन्ट। द. आल पेसेन्ट डिस्चार्ज।

8. विधान सभा में बहुमत दल का नेता.....होता है।

अ. प्रधानमंत्री ब. राज्यपाल स. अध्यक्ष द. मुख्यमन्त्री

9. मीडियम का अर्थ..... है।

अ. मध्य ब. माध्यम

स. माध्यमिक द. इनमें से कोई नहीं।

10. भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति..... थीं।

अ. इन्दिरा गाँधी ब. सुमित्रा महाजन

स. श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल द. इनमें से कोई नहीं

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए – $2 \times 5 = 10$

11. जीवन का आधार .....है। (जल-वायु/धन-सम्पत्ती)

12. लोगों व वस्तुओं के आवागमन को .....कहते हैं। (परिवहन/सञ्चार)

13. विदेशी यात्री डोमिंगो पायस.....का निवासी था। (स्पेन/पुर्तगाल)

14. डींग का प्रसिद्ध किला ..... में स्थित है। (भरतपुर/जयपुर)

15. विधान सभा सदस्य के लिए ..... आयु होना आवश्यक है। (25 वर्ष/30 वर्ष)

सत्य/असत्य बताइए – $2 \times 5 = 10$

16. पृथिवी के 29 प्रतिशत भाग पर जल है। (सत्य/असत्य)

17. पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर ढका हुआ। (सत्य/असत्य)

18. सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है। (सत्य/असत्य)

19. कुतुबमीनार दिल्ली में स्थित है । (सत्य/असत्य)

20. मराठा राज्य में सेनापति को पेशवा कहा जाता था। (सत्य/असत्य)

सही-जोड़ी मिलान- $2 \times 5 = 10$

21. मध्यप्रदेश	(क) रायपुर
22. छत्तीसगढ	(ख) मुम्बई
23. महाराष्ट्र	(ग) भोपाल
24. बिहार	(घ) शिमला
25. हिमाचल प्रदेश	(ड) पटना

अति लघु उत्तरीय प्रश्न– $2 \times 10 = 20$

26. पर्यावरण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था ?

27. जैव विविधता से क्या आशय है ?

28. लद्दाख केन्द्रशासित प्रदेश कब बना ?

29. आदिकालीन मानव अपने भोजन एवं आवास के लिए किस पर निर्भर था ?

30. दक्षिण भारत में व्यापारियों के समूह को क्या कहते थे ?

31. वृन्दावन में बने मंदिरों की वास्तुकला किस शैली से मिलती-जुलती है ?

32. अद्वैत दर्शन के प्रमुख आचार्य कौन है ?

33. सरदेशमुखी और चौथ कर किनके द्वारा वसूले जाते थे ?

34. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं को कितने भागों में विभाजित किया गया है ?

35. भारत में इमरजेन्सी (आपातकाल) कब लागू की गई थी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न- $4 \times 5 = 20$

36. अपरदन और निक्षेपण को सोदहरण समझाइए।

37. परिवहन के प्रमुख साधनों का वर्णन कीजिए ?

38. शेरशाह सूरी के प्रमुख सुधारों का उल्लेख कीजिए।

39. स्थानान्तरीय कृषि से आप क्या समझते ?

40. मुख्यमंत्री की नियुक्ति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- $4 \times 5 = 20$

41. वन किसे कहते हैं? उनके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए ।

42. मराठा साम्राज्य के बारे में विस्तार से बताइये ।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in